# रामली

राजस्थानी कहाणी सग्रै

सूरजसिह पवार

अन्नू–अर्चना प्रकाशन
रामपुरिया कॉलेज रै लारै बीकानेर (राज)
☎ 0151–206057

| | |
|---|---|
| आवरण | सूरजसिह पवार |
| सस्करण | 1999 |
| मूल्य | अेक सौ पैंतीस रिपिया मात्र (रु 135/–) |
| लेजर टाईपसैटिग | खुशबू कम्प्यूटर सेण्टर बीकानेर ☎ 202652 |
| मुद्रक | स्टूडेण्टस कलैक्शस शिव मार्केट<br>न्यू शिवबाडी रोड बीकानेर ☎ 529909 |

---

**RAMLI** (Collection of short stories in Rajasthani)
by
Suraj Singh Panwar
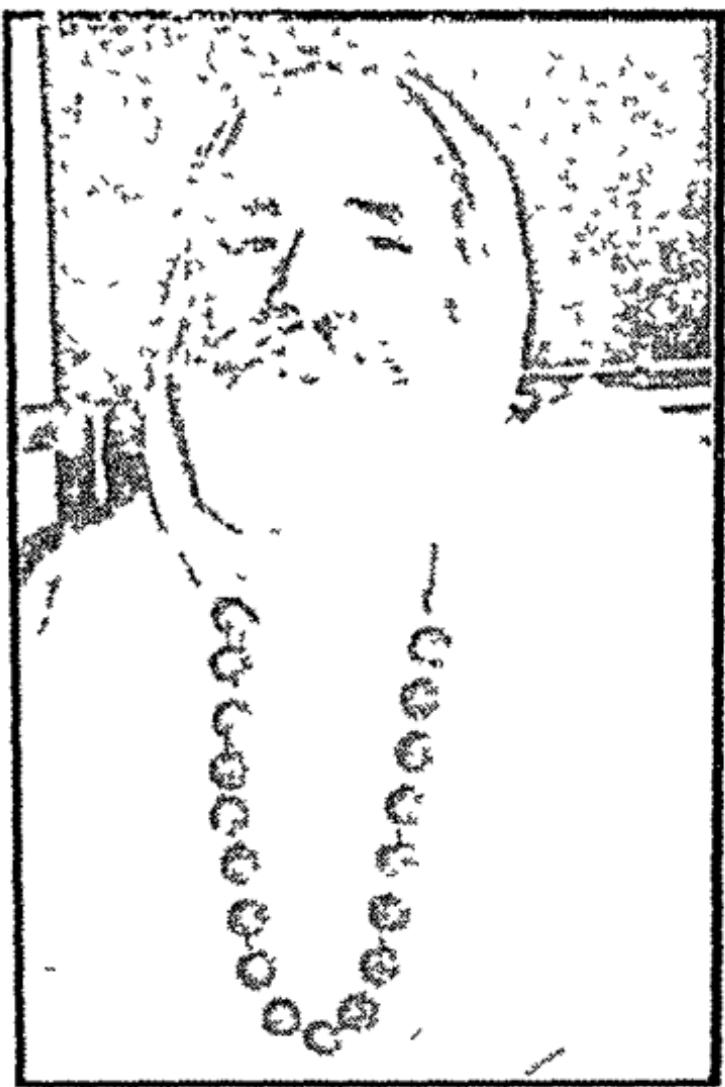
*श्री लालेश्वर महादेव मन्दिर, शिवबाड़ी, बीकानेर के अधिष्ठाता परम श्रद्धेय* **श्री स्वामी सवित् सोमगिरीजी महाराज** *को असीम श्रद्धाभाव* [illegible] सादर समर्पित।
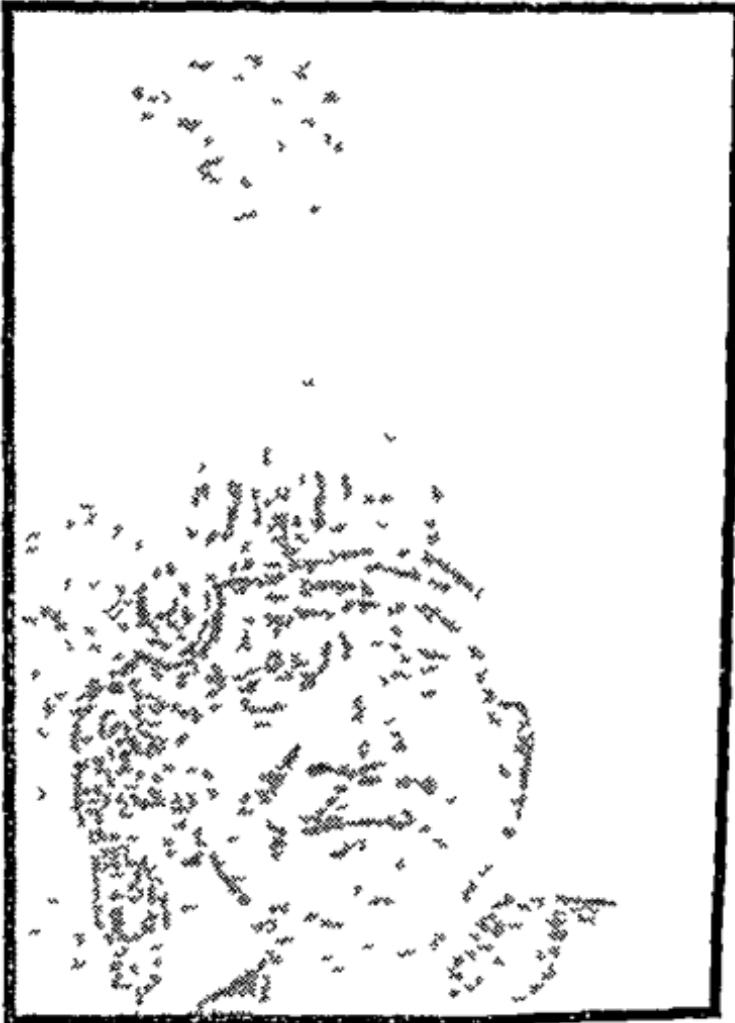
महाराणा साहब आर्यकुल कमलदिवाकर
हिन्दुआ सूरज एकलिंगावतार
श्री 108 श्री भूपालसिंह जी बहादुर मेवाड नरेश
द्वारा
पुरस्कार मे प्राप्त अमरशाही पोशाक मे
परम आदरणीय मामाश्री धायभाई श्री तुलसीनाथ सिंह जी तवर
(उदयपुर) रै चरणा मे लेखक रो बाल्यकाल वित्यो अर हिन्दी रै
अलावा आपणी मायड भाषा मे लिखण री प्रेरणा मिली।

# लेखकीय

नींद नीं आया दादी मा हो या नानी मा, टाबर नै कहाणि्या सुणावै अर कहाणी सुणता-सुणता टाबर नींद लेलै अर कहाणी अधूरी रै जावै अर दूजै दिन फैंरु टाबर रात नै सूते टेम कहाणी सुणावण री रट् लगावै, आखिर दादी रोज-रोज नूवी-नूवी कहाणि्या कठै सू सुणावे।

ईंया कहाणि्या री आपणै अठै कमी नीं है मौकली है अर घणाई लोक कहाणिया लिखे पण कहाणि्या लिखणो कोई सोरो काम ई कोनी। अेक कहाणी लिखण में आदमी रो माथो सगळो खाली हुय जावै, खाली टेरा मार्‍या बे कहाणि्या सुणै कुण ? कहाणि्या तो वे ई चौखी लागै जिकी च्यार लैण पढ्या ई पूरी कहाणी पढण रो जी करे। लुगाई रोटी जीमण नै हेलौ मारती रैवै अर खसम जीमतो-जीमतो केवतो रैवै बस अेक लैण बाकी री है। कैवण रो मतलब आदमी जीमण बैठ जावै तो रोटी रो कवौ हाथ में ई रै जावै, सातरी कहाणिया तो बै ईज हुवै, क्यूकै कहाणि्या आदमी री जिन्दगी सू जुड्योड़ी अेक घटना हुवै अर वे आधार माथै ई कहाणि्या लिखीजै।

अे सगळी बात्या ध्यान में राख र ई म्हें पैली बार ओ कहाणी सग्रै छपवायो है। खुद रो जायोड़ो तो सगळा नै ई चोखौ लागै पण औलाद तो पराया सराया ई सरीजै अ खातर आप लोक ई म्हनै सीख दिरासो के म्हारो कहाणी लिखण रो पेलो प्रयास आप लोका नै किसो'क लाग्यो।

घणै घणै धनवाद रै सागै

आपरो

सूरजसिह पवार

कहाणी सग्रै रौ नाम अर सग्रह मे छपयोडी सगळी कहाणिया काल्पनिक है। कैई खास आदमी–लुगाई नै लेर'र कहाणिया नीं लिखी गी है। फैरू ई बदलते जुग मे घटनावो रौ आ जावणो सजोग ई हुयसी। ई खातर लेखक अर प्रकासक री अैमै कोई जुमेवारी नीं है।

— सूरजसिह पवार

# सरस अर सजीव कहाणिया

ई कथा कुज मे अेक दर्जण सू उपर कहाणिया है साच बोलती अर समाज रै सरुपनै उधाडती।

आप–आपरै शीर्षक रै मुजब हर कहाणी जीवन्त अर जागती है अर है आपरी जमीन सू जुडती।

आँमे–लेखक समाज में व्याप्त अन्याय उत्पीडन अन्धविश्वास आपाधापी अर बधते विषम व्यवहार रै ताडव नाच नै जिसो देख्यो समझ्यो अर भोग्यो–परख्यो है बी तथ्य नै बड सशक्त अर साधनामय सचाई सागै उतार्यो है आपरी सध्योडी लेखनी सू।

आकार आरो न अतीत रै मोड पर टिक्योडो अर न भविष्य री स्वण लालसा पर ही। बा–है वर्तमान री जथारथ भाव भूमि पर खडो आम पाठक न आप कानी बरबस खींचतो बींनै बो समाज री टूटती–बिखरती दशा पर सोचण रो अवसर ही खाली नीं–दे बी सू बदळाव री कीं अपेक्षा भी राखै।

ओसर–मौसर जात–झडूला डोरा अर मादळिया भोपा–भोपी अर टूणा–टाटका आ रै 'क्यू रो कॉई छेडो?

ईया ही तीज–त्योहार अर अेढा–मेढा री पसरती कतार कठै सू तो शुरु हुवै अर कठै हुवै है समाप्त ठा–ही नी–लागे। गरीब इ कुडकापथी मे पीसीजतो–पीचीजतो सास ही स्यारा नी ले सके रोवतो–कूकतो अर अभाव मे अमूजतो पूरा हुवै।

ई हालत मे स्वस्थ समाज री सरचना किया हुवै? आ–कुरीत्या नै निर्मूल करण नै सरकारी नियत्रण तो लागण सू रैयो? लगाम तो लागणी चईजै आपरे विवेक री। आ कथावा रो मूळ मकसद ओ–ही है।

सो मण धान नै परखण मुट्ठी भर बानगी घणी मोकळी। उदाहरण सारू एक कथा है आ मे पीड रो अन्त। कथा री नायिका पर अत्याचार अर उत्पीडन आपरी पराकाष्ठा पर है पण बा बी परिस्थिति सागे न समझौतो करे अर न आत्मसमर्पण। अतिम सास ताई आपरी सूझ–बूझ रा हथियार सामती जूझती जीतती एक सुखी जिन्दगी जीयै पण इसी जीवटता नै ही कोई न कोई सहृदय सामाजिक मिनख रो सहयोग तो चाईजै ही। वो मिल्यो जद ही बण ऊँचाई पकडी आपरै मन चाही कथा ई रै सागै ही जीवन्त बणगी।

ईंया ही 'शाबास बेटा' शीर्षक सतसैया रै दोहरै दाई लागै तो सीधो है पण अर्थ उडो पल्ले पूरो पढया ही पडे। ईंया ही और–और कहाण्या समझो दिस बा री उजास कानी अर उद्देश्य ऊँचाई लिया।

भासा बोलचाल री अर इकधार। प्रवाह सगळौ एक सो। वा चावै पाठका रै होठा पर उछळै चावै की अणपढ श्रोता रै काना पर स्वाद दोना नै एक सो पोखै।

लोकोक्ति अर मुहावरा सैज अर सही जाग्या उपस्थित हुया है। ई सू कथ्य सरस अर सजीव तो हुयो ही है बीं री मार्मिकता और बधगी।

उपमावा अर लोकोक्तिया न बारली अर न धिगाणै घुसायोडी। अग्रेजी रा शब्द रिटायर पैंसन प्राइवेट डाक्टर कम्पोडर फ्रिज फर्नीचर अर कूलर आम आदमी रै होठा पर इसा रमग्या जाणै बारा घरु ही हुवै – राबडी –रोटी दाई। टाबर ही बानै जाणै–पिछाणै।

अे कथावा म्हारो विश्वास है राजस्थानी भासा रै कथा जगत मे आपरी अनुभूति अर दिस–दीठ री नुई खिडक्या खोलसी बीरै पाठका नै प्राणवन्त करण खातर।

अन्नाराम 'सुदामा
गगाशहर बीकानर

# लिखता–लिखता पुन्न

आज रै राजस्थानी साहित्य सामीं जठै भारतीय साहित्य रै समकालीन लेखन री बरोबरी री लूठी चुनौती मोजूद है बठै ई इण सू ई सवाई चुनौती आपरी भासा रै जीवतै–जागतै मुहावरै नै पाठ–रूप पढण माय पाठका नै हेवा करण री है। राजस्थानी रा न्यारा–न्यारा लेखक दोनू मोरचा नै घणी सवळाई सू परोटण री खरी खेचळ माय लाग्योडा है। आपा याद कर सका के पठनीयता री दीठ सू आज भी श्री अन्नाराम सुदामा' री 'पिरोळ मे कुत्ती ब्याई अर 'दूर–दिसावर अर श्री श्रीलाल नथमल जोसी री 'सबडका' जेडी पोथ्या री लगोलग माग बण्योडी है। इणरो कारण है आ पोथ्या माय बरतीज्योडो वो भासिक मुहावरो जको राजस्थानी भासा री ठेठ देसज मुद्रा नै इण ढाळै परोटै के ओळी–दर–ओळी पाठक नै अेक चमत्कृति हुवे अर उणनै हसण टाळ कोई उपाय नीं सूझै। राजस्थानी भासा री आपरी आ निजू खिमता है के आटो' आया आपनै हास्य सिरजता घणी खेचळ नी करणी पडै पण अवखाई आ के अणूतै ढाळै आधुनिक हुयोडै लेखक–मन री पकड़ मे ओ आटो' आवै ईज नी।

अठै आ चेतै राखणी ई घणी जरूरी है के ससार री भासावा रे लोप हुवण रो खतरो ई अबै घणो अळगो नीं है। सयुक्त राष्ट्र सघ री अेक रिपोर्ट मुजब आवण वाळा पचीस बरसा माय इलैक्ट्रोनिक मीडिया रे मारफत हुवण वालै सूचना–विस्फोट सामीं ससार री घणकरी क्षेत्रीय बोल्या रा परखचा उड जावैला अर वै ससार री सैंजोरी सम्पर्क भासावा माय लोप हुय'र रेय जावैला। अेडी वेळा

किणी भासा ने आपरी निजू ताकत रे परवाण पाठ–रूप जीवती राखण री खेचळ रो काई मोल कूतणो चाइजै – आ विचारण जाग बात है।

इणी दीठ सू श्री सूजरसिंह पवार री अे कहाणिया श्री अन्नाराम 'सुदामा' अर श्रीलाल नथमल जोसी री खेचळ मे बधेपो करती लखावै। आज री राजस्थानी कहाणी विगसाव री केई मजला पार कर'र ठावी ठोड ऊभी तो दीसै पण उणरै आखती–पाखती पाठका री रेल–पेल री ठौड लेखक बिरादरी री अहो रूप अहो ध्वनि' जेडी सरावणा रो भणकारो फकत सुणीजे। श्री पवार री अे कहाणिया आपरे रूप–गठन माय राजस्थान री 'बातपोसी के माड'र बात कैवण री परपरा नै समसामयिक समाज रै दुखा–सुखा रै कथ्य रै सीगै परोटण री अबोट खेचळ करै। आ लेखक री सातरी सफलता है के 'रामली कुण कैवे भूत नी हुवै' का पछै भवरकी जिसी कहाणिया आपरै कथानक रै अणूतै विस्तार रै बावजूद पाठक नै भरोसै मे लिया चालै अर पूरी हुवता–हुवता अेक रळकवीं पठनीयता रै सुखद एहसास सागै–सागै आपरे कथ्य नै ई पाठक माय उतार देवै। अेकाध कहाणिया रा कथानक हिन्दी फिल्मा रा फ्रेम ई बणावता दीसै पण रळकवा पठनीयता री तो गारटी हर कहाणी देवै ई।

अस्तु श्री सूरजसिह पवार अणूती आधुनिकता री कडप सू कपडधज हुया बिना राजस्थानी लोक–समाज री रोजमर्रा जिन्दगी रा चित्राम सहज वतकही रै ढाळै उतारै अर राजस्थानी सारू साध ारण पाठक जुआवण जेडो पुन्न रो काम करै। इण पुन्न री सरावणा नीं करणो राजस्थानी रै किणी हेताळू सारू अेक तरै री नुगराई ई कैई जा सकै–म्हैं आ कहाणिया रो भरपूर स्वागत कर'र इणी नुगराई सू बचणो चावू।

श्री पवार री सिरजणा फळै–फूलै आ ईज मगळ–कामना करू।

मालचन्द तिवाडी

# घरकोलियो

सगळो मोहल्लो नूवी बींदणी दाई सज्योडो। दिनूगै-सिझया ढोलण्या री ढोलक्या माथै थाप्या अर बारी रोवती-सी रागा। मोहल्लै मे टींगरा रा हाका-बाका गीत-गाळ रै माहौल सू इया लाग रैयो जाणै कै मोहल्लैआळा सगळा रा सगळा साथै ई परणीज रेया हा।

भात-भात री चूदडया अर रगीन ओढण्या ओढयोडी लुगाया ई घर सू निकळ'र बीं घर मे घुसै अर बीं घर माय बड'र ई घर माय निकळै। बारी पायला री छम-छम जाणै गाया रो बाग दिन-भर खोड मे चर'र पाछो गाव खानी आ रैयो हुवै।

मागियै रै ब्याव रै आडा अजै ग्यारै दिन पडया हा फेर ई जिकै रै मूढै सुणो अेक ई बात कै तेरस नैं मागियै रै ब्याव मे चालणो है।

मागियै रा हाथकाम लेवण नैं ढाळिया मराज कणै रा आयोडा बैठा हा। फोग री लकडया नैं उडीक रैया हा। म्हैं अणचाईजतो धणयाप जचावतो मोहल्लै में खडयै लोगा सू बोल्यो थे अठै क्यू खडया हो? गळी मे जा'र मागियै रै घर आगै बिछायै पाटै माथै बैठो। मागियै रै घर माय तो पग मेलण नैं जाग्या कोनी। बरसाळी बाखळ अर आगणो लुगाई-टाबरा सू भरीज्यो पडयो है। काई ठा अे टीगर अठै काई लवको लेवै है। ढाळिया मराज मागियै रा हाथकाम काई ठा कणा लेसी पण अै टींगर रोळा कर'र कानडा पेला ई खा जायसी। ब्याव तो घणाई देख्या पण मागियै रो ब्याव काई हुयग्यो कोई रासो हुयग्यो।

हाथकाम आळै दिन इत्ती भीड। तो जानआळै दिन तो बापडै बेटी रै बाप री रापया काढ नाखसी। औ भाईपा तो बीरा मूघो पडै पण भाया बिना घर बार री सोभा कोनी।

होवै चावै केर ई बैठणो छीया मे

होवै चावे बैर ई रैवणो भाया मे।

अठीनै–बठीनै म्हे गेलै दाई कद सू भाग रैयो हू पण म्हने होम करण खातर फोग री लकडया हाथ नी आ रैयी हे। काळिये री टाल माथे बडा–बडा ठूठ तो मोकळा पडया है अर सत्तारियो खाली जमीन कब्जो करण री नीयत सू टाल खोल राखी हे।

रोही मे गावआळा अेक फोग नी छोडयो। गावआळा ई बापडा काई करै। फोग नी काटै तो खावै काई? बांरै किसी नौकरया पडी है। सै'र मे पढोडा–लिखोडा ई नौकरया खातर रोवता फिरै तो गावआळा नै नोकरया कठै पडी है?

अबै गावआळा ई फोग कठै सू काटै। फोग काट–काट'र सगळी रोही नैं विधवा दाई सूनी कर दी। ना माथे बोरलो अर ना डील माथै गेणा।

बापडा बूढिया माईत कैंवता कै भाईडा फोग ना काटो रै। फोग ६ ोराआळी धरती रो गैणो है। पण पेट री आग रै आगै उपदेश कठै सू चोखो लागै। अबैं धोरा नीं बधसी अर आध्या नी चालसी तो काई चालसी? अरै माईत तो बापडा हाल कैवे कै अै खूणै–खोचरै बच्यै– खुच्यै फोगा नैं ई रैवण दो नी तो आवणआळी पीढी पूछसी कै बापू – फोग किसा क हुवता?

म्हैं अबैं फोग री लकडया कठै जावतो फिरूं? काळियै री टाल माथै सू बै ठूठ उठा लायो तो घर रे माय धूओ ई धूओ हुय जासी पण अेक बात तो है धूअे सू डरता लोग खसू–खसू करता घर सू खिसकणा सरू हुय जासी अर आगणै री भीड कीं तो कम हुयसी। पण पाटै माथे बैठयो बो मागियो विदकग्यो तो?

क्यू कै ब्याव रै टैम छोरे रा भाव घणा बध जावै। भौड माथै पीळो पेचो कनार लगायोडो कमीज लिलाड माथै चिप्योडी चमकी हाथ म सुणरया घाल्योडै कोथळियैआळो गेडियो। जणैं ई तो वीं टेम बींनैं बींद राजा कैवै नीं तो आपानैं तो नी कैवै। अर परणीज'र मागियो पाछो घरै नीं आजावै जित्तै तो वींरा इया ई हुकम चालसी अर ब्याव रै पाच दिन बाद आपानैं कोई पूछे तो मागियै नैं पूछसी।

बाडो वण्योडो मागियो बनोळा जीमण जावै तो पाच–पाच भायला सागै।

अेकाअेक म्हैं अेक जाग्या फोग री लकडया पडी याद आई अर म्हैं

# घरकोलियो

सगळो मोहल्लो नूवी बीदणी दाई सज्योडो। दिनूगै–सिझया ढोलण्या री ढोलक्या माथै थाप्या अर बारी रोवती–सी रागा। मोहल्लै मे टींगरा रा हाका–बाका गीत–गाळ रै माहौल सू इया लाग रैयो जाणै कै मोहल्लैआळा सगळा रा सगळा साथै ई परणीज रैया हा।

भात–भात री चूदडया अर रगीन ओढण्या ओढयोडी लुगाया ई घर सू निकळ'र बीं घर मे घुसै अर बीं घर माय बड'र ई घर माय निकळै। बारी पायला री छम–छम जाणै गाया रो बाग दिन–भर खोड मे चर'र पाछो गाव खानी आ रैयो हुवै।

मागियै रै ब्याव रै आडा अजै ग्यारै दिन पडया हा फेर ई जिकै रै मूढै सुणो अेक ई बात कै तेरस नैं मागियै रै ब्याव मे चालणो है।

मागियै रा हाथकाम लेवण नैं ढाळिया मराज कणे रा आयोडा बैठा हा। फोग री लकडया नैं उडीक रैया हा। म्हैं अणचाईजतो धणयाप जचावतो मोहल्लै मे खडयै लोगा सू बोल्यो थे अठै क्यू खडया हो? गळी मे जा'र मागियै रै घर आगै बिछायै पाटै माथै बैठो। मागियै रै घर माय तो पग मेलण नैं जाग्या कोनी। बरसाळी बाखळ अर आगणो लुगाई–टाबरा सू भरीज्यो पडयो है। काई ठा अै टींगर अठै काई लवको लेवै है। ढाळिया मराज मागियै रा हाथकाम काई ठा कणा लेसी पण अै टींगर रोळा कर'र कानडा पैला ई खा जायसी। ब्याव तो घणाई देख्या पण मागियै रो ब्याव काई हुयग्यो कोई रासो हुयग्यो।

हाथकाम आळे दिन इत्ती भीड! तो जानआळै दिन तो बापडै बेटी रै बाप री राफ्या काढ नाखसी। औ भाईपो तो बीरा मूघो पडै पण भाया बिना घर बार री सोभा कोनी।

होवै चावै बैर ई रैवणा भाया मे।

अठीनै–वठीनै म्हैं गैलै दाई कद सू भाग रैयो हू पण म्हनैं होम करण खातर फोग री लकडया हाथ नी आ रैयी है। काळियै री टाल माथे बडा–बडा ठूठ तो मोकळा पडया है अर सत्तारियो खाली जमीन कब्जो करण री नीयत सू टाल खोल राखी है।

रोही मे गावआळा अेक फोग नीं छोडयो। गावआळा ई बापडा काई करै। फोग नीं काटै तो खावै काई? बारै किसी नौकरया पडी है। सै'र मे पढोडा–लिखोडा ई नौकरया खातर रोवता फिरै तो गावआळा नें नौकरया कठै पडी है?

अबै गावआळा ई फोग कठै सू काटै। फोग काट–काट'र सगळी रोही नैं विधवा दाई सूनी कर दी। ना माथै बोरलो अर ना डील माथै गैणा।

बापडा बूढिया माईत कैंवता कै भाईडा फोग ना काटो रै। फोग ध ोराआळी धरती रो गैणो है। पण पेट री आग रै आगै उपदेश कठै सू चोखो लागै। अबैं धोरा नीं बधसी अर आध्या नी चालसी तो काई चालसी? अरै माईत तो बापडा हाल कैवै कै अै खूणे–खोचरै बच्यै– खुच्यै फोगा नैं ई रैवण दो नी तो आवणआळी पीढी पूछसी कै बापू – फोग किसा क हुवता?

म्हैं अबैं फोग री लकडया कठै जोवतो फिरू? काळियै री टाल माथै सू बै ठूठ उठा लायो तो घर रै माय धूओ ई धूओ हुय जासी पण अेक बात तो है धूअै सू डरता लोग खसू–खसू करता घर सू खिसकणा सरू हुय जासी अर आगणै री भीड कीं तो कम हुयसी। पण पाटै माथै बैठयो बो मागियो बिदकग्यो तो?

क्यू कै ब्याव रै टैम छोरै रा भाव घणा बध जावै। भौड माथे पीळा पेचो कनार लगायोडो कमीज लिलाड माथे चिप्योडी चमकी हाथ मे सुपारया घाल्योडै कोथळियैआळो गेडियो। जणैं ई तो बीं टैम बीनैं बीद राजा कैवै नीं तो आपानैं तो नी कैवै। अर परणीज'र मागियो पाछो घरै नी आजावै जित्तै तो बीरा इया ई हुकम चालसी अर ब्याव रै पाच दिन बाद आपानैं कोई पूछै तो मागियै नैं पूछसी।

बनडो बण्योडो मागियो बनोळा जीमण जावै तो पाच–पाच भायला सागै।

अेकाअेक म्हनैं अेक जाग्या फोग री लकडया पडी याद आई अर म्हैं

लकडया लजा–र ढालिया मराज रै आगे नाखदी।

थोडो मोडो हुया ढालिया मराज तो की नी बोल्या पण पाटै माथै बैठ्यो मागिया नास्या फुला'र बोल्यो "तू लकडया आसाम सू ले'र आयो है? फेर मागियै री दादी बरकी – मराज थे आया कठै सू हा?

ढालिया मराज थोडा सकपकाया अर इनै–बिनै देखता बाल्या "मा–सा! म्हैं बुढढा मराज रो बेटो हू। डोकरी फेर तडकती–सी बोली "बुढढा मराज रा बेटा हा वो तो चोखो पण थे अै फोग री लकडया क्यू मगाई है? थे मागियै रा हाथकाम लेवण आया हो या म्हारी पोती री चवरी माडण आया हो? थे छोरै रै हाथकाम म होम कद घछै करण लागग्या? बताओ अै फोग री लकडया क्यू मगवाई है?

ढालिया मराज चमगूगा–सा म्हारे सामीं देखता बोल्या ओ भाया ईनै आ तो? तन्नैं लकडया लावण रो कुण कैयो हो? म्हैं अबै कैरो नाम लेऊ। ब्याव रै घर मे सगळा बडेरा पोल खुलता देख'र मागियै री बैन म्हारै कानी थोडी–सी मुळक'र पगोथिया चढगी।

मागियै रा हाथकाम लेवणा सरू हुया। मराज मतर पढै लुगाया बिनायक गावै अर बाखळ मे बैठी ढोलण्या कोझी तरै अरडावै। समझ मे नीं आवै कै सुणा कीनैं?

मागियै री काकया–भाजाया हळदी अर पीठी कर–कर'र काळैकूट मागियै नैं पीळोपट कर नाख्यो। मागियो मन–मन मे सोचै कै आ पीळो रग बीरो रोजीना खातर हुय जावै तो किसो क?

दिनूगै हेमलो मागियै री पीठी करण आयग्यो। मागियै अेकर तो थोडी कायस कराई फेर पोलो हुय'र बैठग्यो।

दस दिना ताईं दिनूगै–सिझया मागिया सगा–साया मे बनोळा जीमतो मूढै सू नखरा इस्या करै जाणै कै आगोतर म खोटा करयोडा री सजा काट रैयो है।

बाईस तारीख नैं मागियै री जान रवाना हुयगी। मागियो बाप रो अेकळो छोरो। ई खातर मागियै रा बाप ब्याव मे खुल'र खरचो करयो।

जान मे घोडा सज्योडा ऊट ढोल पीटता बिरतआळा ढोली जान रै आगै पुन्निस रो बेड–बाजो। इया तो लोगडा पुलिस रा खाकी कपडा देख'र इ अळगा भाजै पण आज तो मार फरमाइसा माथै फरमाइसा।

बीद री घाडी आगै टीगर नाच–नाच'र टैम खराब करै। मागियो मूढै माथै रूमाल लगायोडो टुगर–टुगर देखै पण टीगरा नैं अळगा खिसकण

री रोन नी करै।

*अचाणचका कोई टीगर घोडी रै कन्नै फटाको छोड दियो।* घोडी चिमक'र ऊची कूदी अर जान गाय सू भाजगी। मागियो डरतो घोडी री काठी रै चिपग्यो। घोडी ठिगणी ही। बापडै मागियै रा खुरडा जमीन माथै रगडीजै। तलवार हाथ माय सू छूट'र नीचै पडगी। माथै रो फैंटो नाळी मे *जा गिरीयो रूमाल किन्नै गयो कोई वेरो नीं। अेक जूती पग मे दूजी रो* पतो नी।

मागियो सोचै घोडी थोडी धीमी हुवै तो नीचै कूदू अर घोडी सोचै मागियो उतरै तो थमू। घोडी भाजै बैंडआळा लारै अर जानी आगै। आखिर *ऊटआळा अर दूजा लोग घोडी रै आडा फिरया घोडी अेक बद* गळी मे बडगी। लोग आडा फिरग्या अर घोडी नैं झाली। मागियो घोडी सू नीचै कूद्‌यो अर कई देर कायस करा--र धींगाणै मागियै नैं अेक दूजी घोडी माथै बैठायो।

मागियै रै बाप टीगरा नैं फटाका घोडी सू अळगा जा'र छोडण रो कैयो पण टींगर किस्या पाल्या रैय जावै। पण अबकी मागियो घोडी माथै सावचेत अर तणीज'र बैठयो मन--मन मे घोडी नैं कैवै -- अबकी भाज'र देख।

मागियो आख्या मे काजळ घाल्योडो जद के बींनैं काजळ घालण री जरूरत ई कोनी ही क्यूकै मागियो काजळ सू भी कोझो काळो हो। मागियो तो तावडै खडयो इया लागतो जाणै के छीया मे खडयो है।

भाग सू दूजी बार मागियै रै फैंटो थोडो ढीलो बाधीज्यो अर मागियै रो भोभरो च्यार गुणो बडो दीखण लागग्यो। बद गळै री अगरखी अर बींरै *माथै लटकती तलवार मागियो अपणै आपनै किणी महाराणा सू कम नीं* समझ रैयो हो।

मागियै रो सासरो आवता बीनैं घोडी सू नीचै उतरण रो कैयो पण मागियो नीचै उतरण सू दौरो हुवै। बी बगत ई अेक जणो जोर सू बोल्यो अरे ओ इया घोडी सू नी उतरै घोडी री फींच्या मे अेक फटाखो और फोडो । इत्ता सुणता ई मागियो घोडी सू नीचै इया कूद्‌यो जाणै घोडी री काठी म करट आयग्यो। मागियो घोडी सू नीचे कूद'र अठीनै--बठीनै आख्या फाडी पण भीड माय सू कुण बोल्यो औ वेरो कद लागै।

तोरण रा सुगन हुवता ई पाच--सात लुगाया माथै पर अेक छोटो--सो घडियो लेर आयी अर *मागियै रो नाक झाल'र मागियै नैं घर मे लेयगी।*

दिनूगै मागियो परणीज'र पाछो घरै आयग्यो। इत्तो दैज–दायजो अर इत्ती फूटरी छोरी नैं देख'र सगळा मोहल्लैआळा सोच मे पडग्या कै ई कागलै ने आ हसणी सासरैआळा काई देख'र दी है? पण पछै बेरो पडयो कै सरकार री नौकरी सू बी रा भाग जागग्या।

ब्याव हुवता ई मागिया आपरै भायला–तायला सगळा नैं भूलग्यो। मागियो कद सूवै – कद उठै कद बारै निकळै अर कद पाछो घर मे बडै कींनैं ई बेरो नीं लागै।

अेक दिन मागियो आपरी लुगाई रै पल्ला–पल्ली जोड'र बायाजी रै जात लगावण नें घर सू बारै निकळयो। बायाजी रा मिदर घर सू दस पावडा अळगो पण मागियो लुगाई रै आगै धीरै–धीरै इया चालै जाणै के धाप्योडो मोरियो। दस पावडा चालण मे मागियै घटो लगा दियो। जै मागियै रै सागै रूणीचै पैदल जावण रो काम पड जावै ता मागिया ता मरा देवै।

मागियै नैं इया होळै–होळै चालता देख'र बीरी बैन धापली बोलगी भाईसा थोडा खाथा पग धरो। अजै तीन च्यार जाग्या जात्या और लगावणी है। धापली रै इत्तो कैंवता ई मागियो बींरै माथे आख्या काढतो मूढो बिगाड'र बरकतो बोल्यो थारै उतावळ घणी है? पछै बापडी धापली काई बोलती?

ब्याव सू सळटता ई मागियै री छुटया खतम हुयगी अर बा बाप सू डरतो नौकरी माथै चढग्यो।

टैम नैं भाजता काई देर लागै। मागियै रै च्यार छोरा अर अेक छोरी हुयगी। मागियै रो बाप तो बींरै ब्याव सू पाच महीना पछै ई मरग्यो पण मागियै री मा पोता–पोती देख'र मरी।

मा रै मरताई मागियै री बदळी मुरादाबाद हुयगी अर बीरा बुरा दिन अठै सू ई सरू हुयग्या।

मागियो मुरादाबाद जावता ई अेक धणी री छोडयोडी लुगाई रै जाळ मे फसग्यो अर आपरै घरआळा नें बिल्कुल ई भूलग्यो।

लोकलाज सू डरती कई दिन तो मागियै री लुगाई आपरै खसम रा ढकणा ढक्या पण आदमी सू भूख कद ताई काढीजै। पाच–पाच टाबर अर कमाऊ अेक ई कोनी। पीरै मे मा–बाप रै मरया पछै भाई–भौजाई कींनैं किता'क निहाल करै? अबै बा कींरै आगै जा'र हाथ माडे पण औ पापी पेट मिनख सू चोखा–कोझा सगळा काम करा लेवै।

मागियै रै बडोडै छोरै री सगाई मागियै रै छोटै थका ई कर दी ही अवै छोरीआळा रै सा'रा कराया बापडी मागियै री लुगाई नैं छोरै नैं परणावणो पडग्यो अर परणीजता ई छोरो आपरी लुगाई नैं ले'र आपरै सासरै जा वसग्यो।

मागियै रो दूजो छोरो ट्रक चलावण लागग्यो अर अेक दिन ट्रक ले'र इस्यो गयो कै आज ताई पाछो नीं आयो। काई ठा मरग्यो या अजै जीवै?

तीजो छोरो हाथ रो चोखो कारीगर बणग्यो पण जूवै री लत मे पडग्यो। जूवै मे हारै तो सट्टो खेलै अर सट्टे मे हारै तो जूवो खेलै। अवै बींनैं परणावै कुण? पण आपणै अठै सीख देवणआळा घणा है कै परणादो ईनैं – परणीजता ई आपोआप सुधर जासी। इस्यो सुधरयो कै परणीजता ई लुगाई पीरै भाजगी अर छोरो अेक दिन नसै मे धुत्त माचै माथै सूतो ई रैयग्यो।

बठीनै गरीबी आडा फिरता ई मागियै री छोरी परणावण सावै दीखण लागगी। मागियै री लुगाई खसम नैं घणा ई कागद घाल्या पण मागियै पईसो तो काई कागद रो उथळो तक नीं दियो। छेकड बापडी आपरी बची–खुची टूम–टाम बेच'र छोरी नैं अेक दूजवर रै लारै कर दी। सुणी है छोरी तो सासरै मे सौरी है।

छोरी नैं परणाया पछै मागियै री लुगाई रो–रो'र आप रै शरीर रो सत्यानाश कर लियो अर बा जवानी मे ई बूढी दीखण लागगी। पण रोया किस्यो राज मिलै? छेकड मागियै री लुगाई आपरी लाज–सरम बेच'र मोहल्लै मे बैठया डागरा रा पोठा चुग'र आपरो पेट भरण लागी पण काणी रो काजळ कीनैं सुवावै?

मागियै री लुगाई अेक रात मोडी पोठा चुगण नैं घर सू निकळी अर बी रात काई बेरो बींरै सागै काई बीती कै हमेसा खातर बींरी बोली जावती रेयी।

मोहल्लैआळा घणो नाक काटयो जणै मागियै रो मोटोडो छोरो कदै–कदास आपरी मा नैं सम्भाळण नैं आवण–जावण लाग्यो।

बठीने मागियो नौकरी सू रिटायर हुयग्यो अर रिटायरमेंट रा पइसा आपरी रखैल रै मकान मे लगा'र खाली हुय'र बैठग्यो अर मकान पूरो हुवताई बा मागियै नैं आ कै'र धक्का मार'र घर सू काढ दियो कै भडुवा तू परणीज'र लायो जिकी रो ई नीं हुयो तो म्हारो कद हुसी?

अवै मागियै नैं ढोई कठै अर बो किसै दरडै म पडै? अेक दिन

मागियो मूढो लटकार आपरै घरै पाछो आ मरयो।

मागियै रै छोटै ई छोटै छोरै नै अेक बाणियो आपरै सागै कळकत्तै लेग्या। छोरो बठै घणाइ सारो—सुखी। हर महीनै मा नै पइसा भेजै पण अेक दिन काई ठा छोरै रै काई जची बो कळकत्तै मे फासी खायली।

बापडो बाणियो छोरै री ल्हास लेय'र आयो। आपरै छोरै री ल्हास नै देख'र मागियै री लुगाई भाजती—सी छोरै रै सामै गई। बी रै मूढै सू अेक जोर री चीख निकळी। मोहल्लैआळा औ देख'र रो पडया पण मागियै री लुगाई री पाछी आवाज सुण'र आख्या पूछ ली।

मागियै री लुगाई छोरै री ल्हास कन्नै सू उठी अर खसम रा गळो झाल'र चीखती—सी बोली — हित्यारा ! तू म्हारै घर रो घरकोळिया बणाय नाख्यो।

○○

# कुण कैंवै भूत नीं हुवै?

मगनो पढयो लिख्यो तो नी हो पण मोहल्लैआळा रै बो'ई मानीजतो। कोई रै घर मे कोई भी अैढो पडो – सगळा मगनै सू सलाह करता। मगनो भणीज्यो थोडो पण गुणीज्यो घणो हो। नीं तो इत्ती छोटी उमर मे आदमी में इत्ती अकल कठै सू आवै? किणी भी तरै री बात हुवो मगनो घडी घडाई त्यार राखतो। काई छोटा अर काई मोटा सगळा मगनै री उडीक राखता चायै बारी पटरी मगनै सू खावै या फेर ना खावै।

ऊदैजी रै घर मे तीजा नाव री अेक सुथारी भाडै रै मकान मे रैवै ही। कैवै है कै अेक टैम बो हो कै बी रै सुसरै माणकजी रा सै'र रै माय दगड तिरया करता। पण बखत री बात है। आज बीरैं कोई ना तो आगै अर ना लारै।

डोकरीं नैं मोहल्लै मे भाडै आ'र रैंवती नैं सात–आठ महीना हुया कै अेक दिन डोकरी मादी पडगी अर चौथै दिन ई चालती रैयी। अबै बी बापडी नैं कुण तो बाळै कुण बीरै लारै पईसो लगावै अर कुण बीरा सुध ारा करै? डोकरी रै मरण रो सुण'र मोहल्लैआळा भेळा तो हुयग्या पण भेळा हुयोडा करै काई? खाली घुसर–फुसर अर खाली आयै गयै रा मूढा देखै। अेकाअेक सगळा नैं मगनै री याद आई। अमरचन्दजी आळा मुकनोजी बोल्या अरे भाईडा। आज बो मगनो कठै मरग्यो? दिनूगै सू दीख्यो कोनी?

मगनो कन्नै ई किणी गाव गयोडो हो अर याद करता ई आयग्यो। मगनै रै आवता'ई मेघोजी बोल्या अरे भाई मगना ई डोकरी रो काई करा? आ बापडी आपारै मोहल्लै नैं ढग रो मोहल्लौ समझ'र अठै भाडै आर'र रैयी अर आज चालती रैयी। ई गरीबणी रै ना तो कोई आगै अर ना कोई लारै अर ना ईरो कोई धणीधोरी।

**मगनो बोल्यो** – आ बात थानै कुण कैयी कै ई रै धणीधोरी कोनी? आपा **सगळा हां ई** रा धणीधोरी। ई रा सुधारा आपा करसा। औ तो

सावरियै रो सुकर है कै तीजा बाई जात री हिन्दुआणी है अर दूजी कोई जात या धरम री हुवती तो ई आपा आदमीपणै रै नातै बीरी मिट्टी खराब थोडी ई हुवण देवता। अरै। म्हारा भोळा भाईडा जींवतै मिनख नैं तो सगळा ई राम-राम करै। आपा मर्‌योडी लारै राम-राम सत ही नी कर सका?

मगनै रै इत्तो कैवताई कोई दौड'र सिणिया बास ले आयो तो कोई घी रो डिब्बो भर लायो। दो जणा भाग्या अर रगीन दुसालो लेर आयग्या। कोई हाडी मे बासती घाल'र त्यार हुयग्यो अर तारो ऊगण सू पैलाई डोकरी रो दाग कर'र आयग्या।

दिनूगै अखबार में छप्यो "इन्सानियत अभी जिन्दा है मरी नही मोहल्लैआळा दौड'र अखबार ले ले'र आयग्या अर अेक ई खबर नैं घडी-घडी पढ'र सुणावै अर मगनो खडो-खडो बा रा तमासा देखै।

मगनै मे तो बस अेक ई कमी ही कै बो तीज तिवारा रै खिलाफ हो। मगनो कैवै कै धरम-पुन करो भूखै नैं रोटी जीमावो बीरी आत्मा आसीस देसी।

मिदर जावो भगवान रै फूळ चढावो पण मिदरा मे पईसा फेकण सू काई फायदो? मगनै रो कैवणो हो कै अठैई तो सरग है अर अठैई नरक। चोखा काम करसो तो सौरो सास निकल सी अर कोजा करसो तो दौरा मरसो अर इया मरग्या जिका गया। अबै बारै लारै भदर हुवणै ताल घुटावणै सू काई फायदो?

लोगा री बात्या मे ना आवो। लोग तो भाठा ई भिडासी कै भाया भदर हुया मरयोडै नैं छिया हुवै। औ तो सावण रो घास है। आज काटो काले पाछो ऊग जासी। माईत किसा रोज मरै अर मरयोडा किस्या पाछा आवै?

अच्छा म्हनैं आ बताओ? बाप मरै या दादो मा मरै या मामी आपरी मरजी सू कुण भदर हुवै? मोडा तो हुवै पण दुनियादारी रै डर सू, कै लोग काई केयसी।

भदर हुया ना तो मरयोडा नैं छिया हुवै अर ना तावडो। बस आ है कै लोगा नैं ठा पड जावै कै फलाणियै रै घर मे गमी हुयोडी है। बीसू माडी-मोटी मसखरी नीं हुवै। कैवण रो मतलब मोडो हुवणो अेक तरै रो विज्ञापन है या अेक साईन बोर्ड कैय दो। पण औ किस्यै ग्रथ माय लिख्योडो है कै झीट कटाया मरयोडा नै छिया हुयसी?

मगनो घडी दो घडी मोहल्लै मे जा'र खडो हुवतो अर लोग वीनै घेर'र ऊभ जावता अर मगनै सू ऊधा–सूधा सवाल पूछता अर मगनो ई ऊधा–सूधा टोरा मार देवतो। लोग हस'र मजा लेवता अर की रै ई घर मे कोई मरणो धरणो हुवतो तो मगनो सब सू पैली मोडो हुवतो। मगनो कैंवतो गुड दिया मरै जिका नै जैर क्यू देवणो?

*मगनै रो कैवणो हो के माईत जीये जितै थारी खूब सेवा–चाकरी* करो। बारी मोकळी आसीसा लेवो। औ कठै रो धरम है कै माईत जीतै जी तो रोटी–रोटी नैं तरसै अर बाँरै मरिया पछै बामण जीमावो अर बारै दिन फुरवा भोजन अर तेरवैं दिन औसर।

ओसर नीं करसो तो माईत धूड उडावता जासी।

आ बात बामण तो कैवो या ना कैवो पण भाईडा तो पैला कैयसी। ई खातर लोग बापडा डरता अर दुनिया री लाज सू औसर करै। टका कन्नै नी हुवै तो उधार लेवै उधार नी मिलै तो जमीन बेचै गैणा बेचै फेर जीवै जित्तै ब्याज भरै। ब्याज भरता–भरता मर जावै तो बारी औलाद फेर बाँरै लारै औसर करै।

खाली दो घडी री सोभा या किच–किच कै फलाणियै रै बाप रै लारै बढिया माल बणायो मजो आयग्यो। खरै घी रो दाळ रो सीरो अर जाडै जाडै दही रो रायतो ! अरे बीं गरीब नैं जा'र कोई आ तो पूछो कै भाईडा औसर रा पईसा तू उधार लायो या बापौतीआळो घरियो बेच नाख्यो?

आई तो बापडै रामूडै मे हुई। मा रै लारै औसर करयो अर बापडो अध वैयी मे मरयो। मा मरया पछै रामूडै रा तीनू भाई नटग्या कै म्हे औसर आज करा ना काल।

रामूडो मा बाप रै छोटो ई छोटो छोरो। प्राईवेट स्कूल री बस चलावै। आपा सगळा जाणा कै आ प्राईवेट स्कूलआळा किण नैं कित्ता न्याल करै। छ सो दे'र छत्तीस सौ माथै दसखत करावै। ई हाल मे रामूडो औसर किया करै पण समाज रा पच फेर ई रामूडै री अकल काढली कै डोफा थारा भाईडा तो फीटाई करग्या पण तू तो छोटो है। थारी मा घणीसी'क थारै कन्नै रैयी। तू ई बींनैं सम्भाळी ही। अबै लारली टैम क्यू काची खावै? बापडी डोकरी बिना मोटयार रै थानैं कित्ता दौरा पाळया–पोस्या? थानैं जलम दियो। *अबै बा सिणिया अर धूड उडावती जासी।* पईसो हाथ रो मेल है आज है काल कोनी। थारा भाई तो सरम नाख दी पण तन्नैं तो भाया मे रैवणो है।

इत्तो कैया पछै रामूडै रो माथो खराब हुवणो ई हो। रामूडै री आख्या री नीद उडगी। औसर करै तो मरयो अर नी करै तो ई मरयो। अर ओसर करै भी तो कठे सू? पल्लै पावली कोनी। अठीनै खाई अर बठीनै दरडो।

रामूडो दौड'र मगने कन्नै गयो। मगनै तो साफ मना कर दियो कै म्हारै बाप लारै म्हैं औसर–मोसर कीं नी करयो। भाईपै आळा म्हारा काई पट्टो खोस लियो?

मगनो रामूडै नैं आपरै घरै लेग्यो अर बैठा'र जीमायो। जीमतो–जीमतो रामूडो आख्या सू आसू टपकावै।

मगने रै समझाया अेकर तो रामूडै री पूरी हिम्मत बधगी पण जद जै गरीब लारै पच पड जावै तो बै किणी नैं कद जीवण देवै?

आखिरकार माय रो माय रामूडो आपरो घर गोविन्दपुरी नाव रै अेक आदमी नैं अडसठ हजार में बेच नाख्यो अर दिनूगै बाप रो अर सिझया नैं मा रो औसर रो दुओ ले लियो।

लोग मल्या दे'र जीमग्या अर मूछया रै हाथ फेरग्या पण कोई माई रै लाल रामूडै नैं कूडी भी आ नी कैई कै भाईडा बापौती रो घरियो बैच'र भाया नैं जीमा'र काई नाव काढया? अबै तू आ नान्हा टीगरा नैं लिया कठै फिरतो फिरसी?

मा मरया रै सवा महीनै बाद ई गोविन्दपुरी रामूडै रा गूदड घर सू बारै फेक'र घर रो कब्जो ले लियो।

रामूडो माहल्ला छोड'र सैर सू दूर अक चुगी नाकै कन्नै झूपडो माडयो पण दूसरै महीनै ई फेरीआळा झूपडै रा डोका खिडायग्या।

रामूडो गाडिये लुहार दाई अठीनै–बठीनै गूदड चकतो फिरै पण करै काई? साची बात है। चोर री मा घडै मे मूढो घाल'र रोवै। रामूडै नैं मगनै री बात घणी याद आवै पण औसर चूकी डूमणी गावै आळ पताळ।

अठीनै–बठीनै गूदड चकतै रामूडै नैं स्कूल सू ई काढ दियो। दुखी रामूडो अेक दिन आपरै मोहल्लै मे पचा सू मिलण नैं गयो पण कई पच तो ऊपर पूगग्या कई ऊपर जावण नैं आख्या फाडया जमराज नैं उडीक रैया हा। अेक आध पच रामूडे नैं मरतोड समझ'र मूढो फेर लियो पण मोहल्लै री लुगाया बाटकिया मे आटो घाल'र लायी क्यूकै बानै काई ठा कै औ मगतो अेक टैम ई मोहल्लै रो दिखतो आदमी हो।

रामूडो मूढो ले'र मोहल्लै सू निकळग्यो पण रस्तै मे बींनैं मगनै पिछाण लियो।

बो रामूडै नैं आपरै घरै लेग्यो अर जीमायो।

रामूडो मगनै नैं अपरो दुखडो सुणायो कै घर वेच्या पछै जोडायत मादी रैवण लागगी अर दवाइया बिना तडफ–तडफ'र मरगी। छोरी नैं खोड मे सुती नैं बाडी खायगी अर छोरो जवान होयो कोनी बीसू पैली ई अेक भाटणी लारै भाजग्यो।

रामूडै री कहाणी सुण'र मगनै री आख्या भरीजगी फेर ई मगनै रामूडै नैं हिम्मत बधाई अर रामूडै नैं रोटी सट्टै अेक मसाण घाट री रूखाळी खातर अेक बगेची मे नौकर रखवा दियो।

मसाण मे आयै दिन लक्कड बळै। रामूडो अेक किनारै टूटी हाडी मे कदैई चावळ अर कदैई घाट राध'र आपरो पेट भर लेवै अर बठैई आडो हुय जावै। कैई दिन तो मसाण रामूडै नैं अलखावणो लाग्यो पण जिकै आदमी रो पूरो कुटुब ई बीरी आख्या आगै मर जावै बो फेर मसाण मे किण सू डरै?

इया मसाण सडक रै किनारै। मौके री जमीन अर दिन रात सडका माथै ट्रक भाजै। धीरै–धीरै रामूडो मसाणियो बाबो ई बणग्यो।

अमावस री काळी–पीळी रात। पौ माघ रो महीनो। हाथ नैं हाथ नीं दीखै। रामूडो अेक बळतै मुडदै री राख कन्नै घोडा बेच'र सूतो। रात नैं अेक डेढ बज्या रै आसै–पासै कोई दस–बीस जणा मसाण मे घुस्या अर रामूडै रै जूत मारण लाग्या। रामूडै रै कीं समझ मे नीं आवै के औ रासो काई है?

रामूडो घणोई अरडायो पण बीं काळी–पीळी रात अर बी खोड मे कुण किण री सुणे अर कुण किण री मदद करै? रामूडो आपरा दात भींच'र मरयोडै रो मिस कर'र आडो पडग्यो। लोग रामूडै नैं मरयोडो समझ'र मसाण सू उठा'र बारै सडक किनारै फेक दियो।

रामूडो छाती मे गोडा घालोडो अर आख्या मींच्योडो मन–मन मे सोचे के कुण कैवै भूत नी हुवै? दिनूगै पौ फाटताई रामूडो चिडी कागला नैं बोलता सुण'र डरतो –डरातो धीरै–धीरै आख्या खोली अर अठीनै–बठीनै देख्यो पण बींनैं मसाण घाट कठैई नीं दीखै। थोडो चानणो हुया रामूडो उठ'र बैठो हुयो अर मसाण घाट री जाग्या ऊची–ऊची भींत्या अर चौभींतो देख'र दग रैयग्यो। क्यूकै कोई आदमी आ नीं कैय सकै कै पचास साला सू अठै मसाण हा। *कब्जाधारी रातारात आपरी कारवाई करग्या।*

OO

रामली ऊपरआळै लटठै में बैठी न्हावण खातर नायण चम्पा नैं उडीक रैयी ही क्यूकै रामली सगळी पीठी सू भरीज्योडी पडी।

बिया तो रामली जलम सू ई फूठरी ही पण इण उमर मे पीठी सू लीपीज्योडी रामली सोनै रै दाईं पीळी डुळक लाग रैयी ही। जाणै चदो मामो आपरो सगळो रूप रामली नैं उधार दे दियो हो।

चम्पली नैं आज रो टैम दियोडो हो। बिया चम्पली टैम री सरू सू ई पक्की लुगाई ही। फेरू ई घर मे काम रै टेम इत्तो मोडो किया कर दियो? आ बात बा भूल किया गयी? आपा काईं सगळा जणा जाणै कै ब्याव रै घर में हाजर री हाती हुवै। ई खातर आज तो चम्पली नैं टेम सू पैली आपणो चाईजतो? चाईजतो काई वा ब'ळी घर छोड'र जावती ई कित्ती'क ही?

ब्याव रै घर मे हरख–कोड हुवण रै बाद ई चम्पली रै खातर घर रै सगळै जणा नैं चिंता होय रैयी ही क्यूकै चम्पली सगळा रै मूढै लाग्योडी ही। अर ब'ली बात–बात माथै मसखरी कर'र सगळा नैं हसावती रैवती।

ब्याव रै घर में बामण नाई अर ढोली आपरो न्यारो ई बखत राखै। ओ विचार कर'र म्हारी मा म्हारै छोटियै भाई भीयै नैं कैयो कै जा देख'र आ। आज चम्पली रै काई हुयग्यो बळग्यो? बा ब'ली हाल ता'ईं आई मरी क्यू कोनी?

भींयै पाछो आय'र बतायो के चम्पली री सासू काल सोमोती अमावस नैं कोलायत न्हावण नैं गयी अर पाछी आवता बींरी लोरी ऊधी हुयगी। तीन जणा दब'र मरग्या जिकै मे अेक चम्पली री सासू ही। कैवै ड्राईवर दिन मे ई पीयोडो बळतो।

अबै ई हालत मे बापडी चम्पली ब्याव रै घर मे किया आवै? छेकड उडीकता–उडीकता रामली री माजाई रामली नैं झाल'र न्हावणघर मे बड'र बारणो ढक लियो।

बराबर री भोजाई रै आगै उघाडी हुवता रामली नैं घणी लाज आ रैयी ही पण जोर काई करै क्यूकै रामली सगळी पीठी सू भरीज्योडी पडी। *मजाक मसखरी करता भोजाई नणद नैं न्हुवावण लागगी।*

बिया तो आदमी व्हौत निसरमा हुवै पण आदमी आदमी रै सामे कपडा मरजावै तो ई नी उतारै। पण लुगाई ई मामलै मे थोडी कमजोर हुवै। बै अेक ई घाट माथै हुवै जीया ई न्हा–धोय लेवै।

भोजाई झूठी साची नणद नैं न्हावण रो सुगन कर'र न्हावणघर सू बारै निकळ'र घर रै दूजै काम–धन्धै मे लागगी क्यूकै ब्याव रै घर मे मोकळो काम खिड जावै।

रामली न्हावणघर मे न्हावती–न्हावती सोचण लागगी कै बींरी भोजाई आपरी नणद रै ब्याव रो कित्तो हरख कर रैयी है। स्यात भोजाई ब्याव रै हरख मे भूलगी लागै कै नणद रै परणीज'र अठै सू जाया पछै बींरो अठै कुण हिमायती है? इण नणद बिना बा डागरा रै आडो कुण फिरसी? क्यूकै म्हारी मा अर म्हारा भाईसा अेक ई हाडी रा चाटा–बाटा है।

मन मे आवै जणै बेमतलब बापडी भोजाई नैं मारण कूटण लाग जावै अर आ नणद ई बा कसाया रै आडी फिरै। आडी काईं फिरै कदैई कदैई पाच सात जूत नणद रै ई पाती आ जावै।

छोटी नणद रै ब्याव रै हरख मे भोजाई तो आपरो दुखडो भूलगी लागै पण म्हारै सू जीवती माखी किया गिटीजै?

लोग कैवै सासू सू सावरियो ई बचावै। लोग काईं म्हैं खुद कैऊ। सासू तो माटी री ई बुरी। म्हैं म्हारी मा अर बीरी खोडीली आदता नैं चोखी तरै जाणू। बात–बात माथै मूढै मे आवै ज्यू बोलणो बात–बात माथै बेमतलब रो टोकणो कद ता'ई सहीजै। पण म्हारी भोजाई काईं बेरो किसी माटी री बण्योडी है कै पराई जाई हुय'र कदैई म्हारी मा रै सामी नी बोली। साची बात है सामी बोलण सू फायदो ई काई? उल्टी घर मे राड। इण खातर सब सू बडी चुप?

राड सरू हुवै दिनूगै–सिझया साग नैं लेय'र। बहु पूछलै 'मा–सा साग काईं करा? सासू चीखती–सी बोलै "राडा घर मे दाळ मोगर पापड–बडी केर–सागरी फळी–फोफळिया घणा'ई बळै बेसण सू बीस चीज्या बणै दिनूगै सिझ्या थारै साग रो रासो। काळो खावै थानै अर थारै साग नैं? सासू नैं बिना पूछया साग करलै तो घर मे *बिया गोधम "राडा* हालताई तो म्हैं जीऊ हू, मरी कोनी। म्हारै जीतै जी दादीज्या ना बणो?

दादी वणता जोर आसी।

कदै–कदास कदी दाळ दूध तातो करता उफण ई जावै बस। बहूराणी नैं सीधो परचो मा राड पी'रै मे कीं रिखायो कै नी?

पण म्हारी भोजाई जाणै गूगी ही या आपरै मूढै रै सदा रै खातर ताळो ई लगा लियो।

अबै आपा रै अठै महीणै मे वीस तो तिवार आवै जिया थापना री अेकम भाईदूज सावण री तीज गणेश चौथ नाग पचमी ऊभछठ सिरकणी सात्यू, जलम आठयू, गोगा नयू, दसेरो निरजळा इग्यारस वच्छबारस धनतेरस रूप चवदस सोमोती अमावस अर राखी पून्यू। आज सूरज रोटै रो वरत। काल सत्यनारायण जी रो अजूणो। परसू आसा माता रा आखा। नरसू नौरता। आखा तीज गणगौर सिराध सकरायत दियाळी होळी शिवरात गिणता–गिणता आदमी थक जावै। पण तिवार नीं थकै अर अेक ई तिवार माथै छौरी रै पीरै सू चढावो नीं आवै तो सासू रै घर मे घुसताई क्यूं? पीरैआळा रै धूड उडगी?

माईसा दफ्तर जावै अर पी'र पाछा मोडा घरै पधारै। रोटी मे थोडो ई मोडो हुय जावै तो जूत। क्यू? काई जुलम करियो है लुगाई जात?

अरै आदमी नीं तो कम सू कम म्हारी मा नैं तो सोचणो चाईजै। क्यू? मा परणीज'र आवताई सासरै में सासू बणगी ही या म्हारा जीसा म्हारी मा रै कदैई हाथ नीं लगायो पण आ वात म्हारी मा नैं समझावै कुण? म्हैं दो–चार बार कैय'र म्हारै मूढै ई ली।

उण दिन टोघडियो जेवडी तोडा'र गावडी नैं चूघग्यो अर भाईसा मा रै कैया भोजाई नैं मार–मार'र भुगडी बणाय दी।

म्हारै बावूसा रै हवा फिरया पछै वै तो म्हा सगळा रा मोहताज हुयग्या अर माचो ई झाल लियो। जी'सा दस हेला मारै जणै म्हारी मा अेकर सुणै अर पाछो सार्मी इसो घोरको करै कै जी'सा तो पाछा डरता सिसकारो ई नीं करै।

इया म्हारी मा म्हारै वावूसा सू पैला किसी डरती। कैवै है मा परणीज'र आई जणै दाइजै रो पूरो ट्रक भर'र सागै लाई। बाप पुलिस मे थाणैदार। ऊपरली कमाई मोकळी पण आयै दिन ससपड हुवतो।

अवै नानो लागै तो काई करा। धरम री वात तो कैवणी ई पडै। बै दिन म्हारी मा री ओढणी रै पल्लै रै बाध्योडा रिपिया अणदियै री राड खोल'र लुका लिया अर म्हारी मा झूठी चोरी म्हारी भौजाई माथै

लगा र म्हारे भाईसा नैं भिडकाया अर भाईसा खडा–खडा'ई भोजाईसा रै अचाचूक पेट माथे लात मारदी। भोजाई पेट सू ही। टावर अधूरो पडग्यो। सात–आठ साल हुयग्या पाछो भोजाई रै पेट नीं रैयो। भोजाई बचगी वा–ई चोखो। नीं तो आ डागरा रो काई बिगडतो। अै तो सवा महीणे बाद ई दूजी लावण नैं मूढो धो लेवता।

भोजाईसा रै पीरैआळा थोडा कवला है। दान–दाईजो थोडो कम दियो लियो पण आयै दिन भोजाई रा हाडका भाग–भाग'र पीरैआळा सू सगळी चीज्या मगा–मगा'र भेळी करली। नीं तो कैनैं कोई पूछै आ रगीन टीवी कूलर फ्रीज हीरोहोडा थे किसी दूकान सू मोल लेय–र आया?

अै काम सगळा म्हारी मा रा है। दुनिया मरै पण म्हारी मा रो कदेई माथो ई नीं दुखै। दिनूगै वेगी उठै मिदर–देवरा जावै रामसुखदासजी री कथा मे आगै जार बैठै अर कथा सुणती थकी आख्या माय सू आसूडा टपकावै अर दरी गीली कर न्हाखै।

न्हावती–न्हावती रामली रो ध्यान थोडो बठीनै सू हटयो अर रामली सोच्यो कै सगळा रा सासू–सुसरा अेक जिस्या थोडा ई हुवै। सासू–सुसरा अेक जिस्या निकळ ई जावै तो लुगाई रो मोटयार तो लुगाई रो होवे मा बाप रो नी होवै।

रामली सोच्यो म्हारै घरै भी जान आसी। बैंड–बाजा बाजसी। म्हैं फेरा खाय'र म्हारै सासरै जासू। सासरै रै माय म्हारे बैना जिसी दो–दो नणदा है। भरत–शत्रुघन जिसा दो–दो देवर। तीन मजिलो मकान अर घर रै माय धोळै रग री मारुति।

सुपना मे खोई रामली रो माथो अेकर पाछो ठणक्यो कै इत्ता सुख हुवताई म्हारो भरतार म्हारै भाईसा जिस्यो निकळग्यो तो? फेर बीं तीन मजिलै मकान अर बी धोळे रग री मारुति मे बैठसी कुण?

बापडी भोजाई रै आयै दिन जूत पडै जणा बा डागरा रै म्हैं आडी फिर जाऊ पण म्हारै सासरै मे म्हारै जूत पडण लाग्या तो म्हारै आडो कुण फिरसी? जद कै म्हारी भोजाई म्हारै सू किती ई पूठरी है काम धन्धै मे हुस्यार अर चतर सीधो–सादो सुभाव। ना किणी तरै रो नखरो अर ना काजळ टीकी रो चाव। ना मेळै मगरियै जावणो अर ना मिदर– देवरा रो कोड। खाली काम ई काम। कदैई कदास टेम मिल ई जावै तो घर मे बैठ'र काढणो काढणो। इत्ता जुलम सहन करया पछै भी मूढो बद राखणो अर पीरैआळा आ जावै तो सगळा नैं हसर दात दिखावणा।

अै भोजाईआळा गुण तो म्हारै मे नूवो पइसो ई कोनी। इत्ता जुलम म्हारै माथै हुया तो म्हैं तो बी दिन ई कूवो–खाड कर लेसू।

रामली फेर सोच्यो इया सासरै मे भोजाई दाईं घुट–घुट'र मरणे सू तो अठैई मरणो चोखो।

रामली आव देख्यो न ताव आपरै नाक मे पैरयोडी नथली अर नथली मे जडयोडी हीरै री कणी नैं आपरै दाता सू चबावण लागी अर अेकाअेक सोच्यो कै इया मरणो तो भौत बडी कायरता है। नीं नीं म्हैं नी मरू। आगै बध'र निर्दोष लुगाई जात माथै हुवै जिको जुल्मा रो सामनो करसू – वारैं खिलाफ बगावत करसू – आवाज उठासू। रामली फटाफट दो लोटा पाणी डील माथै ढोळ'र फट न्हावणघर सू बारै आयगी। बी बखत रामली रो चेहरो किणी रणचडी सू कम नीं लागरयो हो।

OO

# टोड कागलो

कॉलेज रै जळसै सू निवडता ई लोगबाग बसन्ती नैं च्यारू कानी सू घेरली अर सातरी ॲक्टिंग अर सातरो गावण खातर घणी–घणी बधाया दी।

जळसै रा खास पावणा डीआई जी पुलिस रमाकान्त जी शर्मा बसन्ती रा मगर थपथपाया अर स्कूल री बडी बैनजी सू बसन्ती रै बारै मे पूरी जाणकारी ली।

जळसै रा अध्यक्ष रेडियै रा निदेशक मोवन मोदी नैं जद औ बेरो पडयो कै बसन्ती बारै दोस्त बैंक रै मैनेजर रवि सुखलेचा री बेटी है तो बसन्ती रै नैडा भिडता बोल्या कै म्हैं बीस बरसा सू रेडियै मे अफसर हू, पण इत्तो सुरीलो गळो अर मीठी आवाज पैली बार सुणी है। मोवन मोदी अपणायत जचावतो बसन्ती नैं सलाह दी कै बा साज–साजिन्दा सागै गावण री प्रेक्टिस करै।

रेडियै मे गावण री बसन्ती नैं पैला सू घणी भूख ही ई खातर बसन्ती मोवन मोदी री बात्या मे आयगी अर ज्यू ई कॉलेज सू फारिग हुवती कै बसन्ती भाज'र रेडियो स्टेसण पूग जावती अर मोवन मोदी मौको लागता ई बसन्ती नैं गावण रो मौको दे देवतो।

इया बसन्ती पैला सू ई सुरीली ही पण साजिन्दा रै सागै गावण सू बीरी आवाज मे च्यार चाद लागग्या।

मोवन मोदी री दोनू छोरया बसन्ती रै सागै ओक ई कॉलेज मे पढती ई खातर बसन्ती रो मोवन मोदी रै घरै आवणो–जावणो और सौरो हुयग्यो। मोवन मोदी रो मोटोडो छोरो सजीव सितार बजावै अर छोटोडो छोरो गिटार सिखावै। मोवन मोदी रै घर मे सगळा कलाकार।

मोवन मोदी री जोडायत दस साल हुआ ओक सडक दुरघटना मे चालती रैयी। ई खातर घर मे सगळा नै आजादी। मोवन मोदी नैं चौबीस घटा दारू सिगरेट पीवण सू फुरसत कोनी।

सै'र रै अेक कुणै माथै मोवन मादी रो भाडै रो घरियो। खावण पीवण मे सगळा चटोकडा। दस दिन ईद अर ग्यारवैं दिन रोजा।

सरू–सरू म ता बसन्ती नैं मोवन मोदी रै घर रो माहौल घणो दाय आया।

मोवन मोदी आपरै च्यारू टींगरा नैं सावचेत कर दिया कै बसन्ती करोडपति बाप री इकलौती छोरी है। ई खातर बसन्ती री आवभगत मे कीं कमी नीं आवणी चाइजै। मोवन मोदी आपरै मोटोडै छोरै नैं सीधी सैन कर दी कै वा जिया ई हुवै बसन्ती नैं आपरै प्रेमजाळ मे जकडलै। छोरो बाप कनै सू आ ई छूट चावतो। बीनैं डर हो तो खाली आपरी भूडी सकल रो क्यूकै बसन्ती जित्ती फूठरी सजीव वित्तो ई सूगलो या इया कैयदा कै बसन्ती हसणी तो सजीव काळो कागलो। सजीव मे गुण हो तो खाली इत्तोई कै बो सितार चोखी बजावतो।

अेक चौखो दिन देख'र डी.आई.जी शर्मा बसन्ती रै बाप सुखलेचा नै आपरी कोठी बुलायो। बैंक रो इत्तो बडो अफसर हुवताई अेकर तो सुखलेचा थोडो सकोच करयो फेर सोच्यो इस्यी विस्यी बात हुवती तो डी आई.जी बीनै जोडै सू घरै थोडा ई बुलावता।

डी.आई.जी री कोठी पूगताई डी.आई.जी सुखलेचा रै सामै जाय'र आपरै नैडै बैठाया अर वा आपरै डाक्टर बेटै खातर बसन्ती रो हाथ माग्यो। अवैं इत्तो बडो रिस्तो सुखलेचा क्यू टाळतो?

सुखलेचा सगाई री बात तो पक्की कर ली पण बसन्ती रै कॉलेज रो आखरी साल हा ई खातर ब्याव री तारीख पक्की नीं करी।

बीनै बसन्ती रै पूगताई मावन मोदी रा सगळा घरआळा बसन्ती री खातर मे लाग जावता। कोई भाज'र ठण्डो लावै तो कोई इडली डोसा पुरसै। कोई चुटकला सुणार हसावै तो कोई राग्या सुणावै अर जिया ई सजीव सितार लेय'र बैठै कै सगळा घरआळा अक–अेक कर'र घर सू खिसकणा सरू होय जावै।

सजीव बसन्ती नैं सितार ता सिखावै थोडी अर बात्या करै घणी कै म्हनै भगवान कित्तो कोजो घडयो है अर आख्या माय सू आसू टपकावै। बसन्ती नैं काई बेरो कै अै मगरमच्छ रा आसू है। बसन्ती सजीव रा आसू पूछती कैवै – मिनख मे गुण होवणा चाइजै। रोहिडै रो फूल देखण मे कित्तो फूठरो लागै पण बी मे सुगन्ध नेडी–आगी नी हुवै।

बेल अर नार सहारो देखता ई पसरणी सरू हा जावै। लुगाई जात

भोळी हुवै अर बा अठैई आर मार खावै बस कूडी–साची लुगाई री बडाई करदो या आपरो काळजो काढ'र राख देवै।

दोनू जणा जवान घर मे अेकला फेर आदमी नैं डूबण मे कित्तो क टेम लागै। अेक दिन वात्या ई वात्या मे सजीव बसन्ती री अकल काढली अर दोनू घर सू भाज'र कूडो–साचो ब्याव कर लियो अर बी दिन मोवन मोदी सुख री नीद सोयो।

बसन्ती रै घर सू भाजता ई सुखलेचा डी.आई.जी नैं फोन कर दियो अर डी.आई.जी अेक ई मिट मे सगळै सै'र री नाकाबन्दी करवा दी पण बाप रो भगायोडो छोरो मा रै हाथ कद आवै।

मोवन मोदी रेडियै रो इत्तो बडो अफसर हुवता ई पुलिस बीनै घणोई ऊपर–नीचो लियो पण बा ई बात के सुसियै रै तीन ई टाग। मोवन मोदी टस सू मस नीं हुयो। बसन्ती रै इया घर सू भाजण रै सदमै सू सुखलेचा री लुगाई तो माचो ई झाल लियो। सुखलेचा नैं कणा ई बसन्ती माथै गुस्सो आवै तो कणा ई मोवन मोदी माथै अर कणा बो खुद माथै रीस काढै कै बे जवान छोरी नैं इत्ती छूट क्यू दी?

बिने मोवन मोदी रो सोचणो हो कै मोडा बेगा बसन्ती रा मा बाप बसन्ती नैं माफ कर देसी पण मोदीजी रो ओ फारमूलो फेल हुयग्यो। बसन्ती नैं घर सू भाज्या महीनै सू घणो हुयग्यो पण सुखलेचा बसन्ती री कोई खैर–खबर ई नीं ली क्यूकै सुखलेचा जाणतो हो कै अबै कोई भलै घर रो छोरो तो बी सू ब्याव करै कोनी।

भाग सू अेक दिन दिनूगै–दिनूगै अेक जवान अर फूठरो छोरो सुखलेचा रै घरै पूगग्यो अर आपरो नाम जरसू बता'र बसन्ती नैं लेर सुखलेचा री मदद करण रो वादो करयो।

बिया तो सुखलेचा जिन्दगी सू ई पूरी तरिया हार चुक्यो हो क्यूकै इकलौती छोरी रै इया घर सू भाज जाणै सू सुखलेचा बुरी तरै टूटग्यो। लुगाई बीमार हुयगी अर सुखलेचा बैंक सू रिटायरमेट ले लियो। सुखलेचा जरसू नैं इत्तो ई कैयो कै म्हनैं अबै किणी सू ई लेवणो–देवणो नीं है। पण मोवन मोदी म्हारो दोस्त हुय'र म्हारो घर उजाड्यो है। ई खातर बींनैं बरबाद करण खातर म्हैं कीं भी कर सकू। पईसे री म्हारै कन्नै की कमी कोनी। हजार लागै जठै लाख लगावण नैं त्यार हू पण शरीर सू कमजोर हू अर बसन्ती नैं बीं घर सू काढणी चाऊ।

दूजै दिन ई जरसू अेक राजस्थानी फिल्म रो निरमाता बण'र मोवन

मोदी रै घरै पूग्यो अर मोदी नैं आपरो अतो-पतो बता'र मोवन मोदी सू बात करी। फिल्म रो नाव सुणता'ई मोवन मोदी रा छोरा-छोरी सेतमाख्या ज्यू जरसू रै चिपग्या।

जरसू मारुति ले'र रोज मोवन मोदी रै अठै पूग जावै। मोवन मोदी रो घर फिल्म अर रेकार्डिंग रो स्टूडियो बणग्यो।

सिगरेटा रा धुआ मीट मटण मुरगा पुलाव अर दारू री पार्टिया रोज उडै पण जरसू हाथ जोड़तो बोलै कै जद ताई फिल्म पूरी नीं हुय जावै। म्हैं दारू मास रै हाथ नी लगाऊ।

दो-च्यार दिना मे ई जरसू मोवन मोदी रै घरआळा रै इत्तो मूढै लाग्यो कै मारुति ला'र खडी नीं करै बी सू पैला ई मारुति नैं कदैई छोरया ले जावै तो कदैई छोरा ले उडै।

दीतवार नैं जरसू बैगोई नास्तो पाणी ले'र मोवन मोदी रै घरै पूगग्यो। घर मे अेक कपडैआलो लालो मोवन मोदी री छोरया नैं धोत्या दिखा रैयो हो। जरसू रै घर मे बडता'ई मोवन मोदी बोल्यो "लालाजी अबार तो थे जाओ अर धोत्या ले'र अेक तारीख नैं आया। मौकै रो फायदो उठा'र जरसू फट बोल्यो "मोवन साब अेक तारीख नैं पाछी अे'ई धोत्या हाथ नीं आवैली। लालजी धोत्या दिखावौ। जरसू रै इत्तो कैवता ई मोदी साव री छोरया धोत्या माथै टूट'र आपरी पसद री तीन-तीन चार-चार धोत्या उठा'र आप-आप रै कमरै मे भाजगी। घणो कैया बसन्ती अेक साडी रै हाथ लगायो अर मोवन मोदी बोल्यो "हा बहू, काल थारै जलमदिन माथै आ धोती खूब जचसी। बसन्ती समझी कोनी अर मोवन मोदी रो मूढो दखण लागगी। इत्तै म सजीव बसन्ती नैं आख सू सैन करदी। जरसू धोत्या रा तेरै हजार रिपिया चुका'र उठतो बोल्यो "मोवनजी माफी चाऊ। आज सिटिंग रो मूड कोनी। फिल्म देखण रो मूड है। जरसू रै मूढै सू इत्तौ सुणताई मोवन मोदी री दोनू छोरया बोलगी फिल्म देखण नैं म्हे भी चालसा जरसू बाबू। जरसू हा भरै बीसू पैला ई मोवन मोदी बोलग्यो "फेर बसन्ती घर मे अकली काई करसी? पाछा फिल्म देख'र आया तो जरसू रै सागै बसन्ती नैं अेकली नैं देख'र मोवन जी थोडा मुळकता बोल्या अरे बै रमकूडी-झमकूडी कठै रैयग्या? जरसू बोल्यो बै गिरधारियै री दूकान माथै रुकग्या।

बसन्ती नैं छाड'र जरसू जावण लाग्यो तो मोवन जी बोल्या जरसू बाबू, काल बसन्ती रो जलमदिन है। रात रो खाणो अठै ई खावणो है।

जरसू बसन्ती रै सामैं जोयो बसन्ती आख्या ई आख्या मे जरसू नैं नूतो दे दियो।

दूजै दिन नी चावताई बसन्ती सजधज'र त्यार हुयगी। सजीव राजीव रा आयला-भायला तरै-तरै रा तोहफा ले'र आया पण जरसू रै तोहफै रै आगै सगळा रा तोहफा फीका पडग्या। क्यूकै जरसू साठ हजार रो हार ले'र पोच्यो।

कूजे जलमदिन मनाया पछै बसन्ती नैं मोवन मोदी रै परिवार सू घिरणा हुयगी। पण इण नरक सू बा निकळै किया?

मोवन मोदी रेडियै रो इत्तो बडो अफसर पण जणो-जणो बी माय पईसा मागतो। बाप-बेटा आपस में लडै। भाई-भाई भिडै। छोरया अेक दूजी री मावा। बसन्ती सासरै मे कठा ताई धापगी पण बा हमै मा बाप कन्नै किस्सो मूढो ले'र जावै। आख्या मे आसू भर मूढो उतारया बसन्ती मौको मिलता'ई जरसू नैं आपरी सगळी रामकहाणी सुणा दी अर जरसू ई बोल दियो कै बो अठै काईं मतलब सू आयो है।

चाल रै मुताबक दूजै दिन ई दिनूगै-दिनूगै जरसू मारुति ले'र मोवन मोदी रै घरै पूगग्यो। जरसू नैं देखताई बसन्ती बोली "बाबूसा आज म्हारै गणश चौथ रो वरत है। आप कैवो तो म्हैं जरसू बाबू सागै मिंदर होय आऊ ।

मोदीजी हसता बोल्या "जा जा बहू, पण म्हारै खातर परसाद लावणो ना भूली। जरसू बीच मे बोलग्यो आपरो परसाद तो म्हैं लेर आयो हू मोवन सा'ब। जरसू मारुति री डिग्गी सू बीयर अर व्हीस्की रो कैरेट काढ'र मोवन जी नैं पकडा दियो।

बसन्ती नूवीं धोती अर साठ हजार रो हार पैर'र मारुति मे जा बैठी अर पलक झपकता'ई आर्य समाज पूगगी। आगै डीआईजी सगळी त्यारिया पूरी कर राखी ही। अगनी रै आगै फेरा खा'र जरसू अर बसन्ती अेक सूत्र मे बधग्या।

मोवन मोदी बसन्ती रै बारै मे कींई सोचै बीसू पैला सजीव बाप नैं बतायो कै रमकूडी-झमकूडी नैं गिरधारियो बम्बई लेर भाजग्यो।

डीआईजी रमाकान्त शर्मा आपरै छोरै रै ब्याव री खुशी मे कोठी मे पार्टी राखी अर मोवन मोदी अर रवि सुखलेचा नैं खासतौर सू नूतो दियो।

सुखलेचा डीआईजी री कोठी मे सरमा मरतो-मरतो बडयो अर बडै-बडै लोगा री भीड नैं देख'र माय रा माय दुखी हो रैयो हो कै बीरी

छोरी कित्ती करमठाक है। नी तो आज या ई घर मे बीदणी बण'र आवती।

सुखलेचा सुपनै मे ई खोयो हो कै भीड माय सू जरसू अर बसन्ती निकळ'र सुखलेचा अर सुखलेचा री लुगाई रै पगा मे झुकग्या।

सुखलेचा आपरी बेटी नैं बीं जोडै मे देख'र अेकर तो चाकळीजग्यो पण पछै बेटी–जवाई नैं छाती सू लगा लियो। बसन्ती आख्या माय आसू लियोडी आपरी गळती री माफी मागी।

मा–बाप तो औलाद नैं माफ करता'ई आया है। मा बेटी नैं आपरी छाती रै लगाय ली।

बीनै बसन्ती अर जरसू नैं बीन–बीनणी रै कपडा म देख'र मोवन मोदी फट जाणग्यो कै जरसू और कोई नीं डी आई जी पुलिस श्री रमाकान्त शर्मा रो अेकलो बेटो 'सूरज' है।

मोवन मोदी माय रो माय आपरी हार मान'र बिना खाया–पीया काठी सू बारै निकळग्यो।

OO

# शाबास बेटा

सैणा मिनखा कैयो है कै आदमी नैं इत्तो खारो ई नी हुवणो कै लोग बींनैं थूक देवै अर इत्तो मीठो ई नीं हुवणो कै लोग बींनैं समूळो गिट जावै।

कासीराम अेक इस्यो ई अफसर हो। कासीराम ना तो किणी नैं हराम रो अेक पईसो खावण देवै अर ना हराम रो पईसो खावै। साची बात है आज रै जुग मे इस्यै आदमी सू कुण राजी?

बेईमान लोग कूडी साची शिकायता कर'र आयै दिन कासीराम री बदळी दूजै सै'र करा देवै। *पण कासीराम आपरी बदळी हुवण सू कदैई नी* डरयो। कासीराम आपरा गूदडा बाध्या त्यार राखतो। कासीराम किणी सू क्यू डरै? घर मे मिया बीबी रै अलावा सावरियै औलाद रै खातै काणी छोरी ई नीं दी।

बठीनै सरकारी मत्री भी जाणता कै कासीराम भौत ई ईमानदार अर मेहनती अफसर है। पण आ बोटा री राजनीति आदमी नैं अठैई आर खराब करै। कितरै ई भलै अर ईमानदार अफसर री दो–च्यार कूडी साची शिकायता कर दो। बस मत्रीजी नाराज। ई सू बी सू तो मत्रीजी ईमानदार आदमी रो काई बिगाड सकै? ऊपर सू मत्रीजी आ भी जाणता कै इस्यो बेटो काई काम रो जिको ना तो कमावै अर ना कमा'र देवै।

दुखी मत्रीजी कासीराम री बदळी अेक इस्यै सै'र मे करदी जिकै रै बारै मे लोग कैवै कै कोई अफसर दो–तीन महीना सू ज्यादा बी सै'र मे नीं टिकै क्यू कै सै'र रै कन्नै रा लोग दिन धोळै देसी दारू काढण रो धन्धो करता अर दारू बेचता अर आपरी बन्दूका भरियोडी ई राखता।

कासीराम रै नाव रै लारै सिग तो नीं लागतो क्यू कै कासीराम जात रो बाणियो हो।

च्यार चोर चौरासी बाणिया
चोरा बानैं छाणा सू मारिया
काई करै बापडा अकेला बाणिया?

पण कासीराम इण कहावत नैं झूठी घाल दी। क्यूकै आपरी खुरसी माथै बैठता ई कासीराम दारूआळा रै अठै छापा मारणा सरू कर दिया। हालाकि कासीराम नैं डरावण खातर गुमनाम घणी ई चिट्ठिया आई। पण वा शेर नी डरिया। अेक दिन वो बी गाव मे जा पूग्यो जठै लोग भरियोडी बन्दूका कन्नै राखता।

कासीराम देखता ई देखता दारूडा नैं पकड–पकड'र से'र री जेळ नैं काठी भर नाखी।

कासीराम री घरआळी सावित्री कासीराम नैं कई दफै समझायो कै आ गुण्डा–बदमासा सू क्यू माथो लगाओ? जै थारै कीं हुयग्यो तो आ सरकार म्हनैं तुकमो नीं देवणआळी है अर म्हारै आगै–लारै कोई नीं है।

कासीराम साविनी नैं समझावतो वोल्यो "देख आदमी आपरी जिन्दगी मे अेकर मरै दूसर कोई नी मरै। तद म्हैं किण सू ई क्यू डरू अर किण रै खातर डरू? मरग्या तो आपा रै लारै रोवणआळो कुण है बता? ब्याव हुयै नैं अटठारा साल हुयग्या औलाद हुई नीं। औलाद खातर तेतीस करोड देवी–देवतावा नैं पूज लिया वडै सू बडै डाक्टर हकीम सू जाच करवाली अबै भाग मे औलाद लिख्योडी ई कोनी तो काईं तो डाक्टर करै अर काई देवी–देवता?

कासीराम तो औलाद री आस छोड'र नचीतो हुयर बैठग्यो पण लुगाई नैं कुण समझावै? सावित्री धणी सू लुक–छिप'र कदैई भापा–भापी कन्नै जावै तो कदैई मुल्ला कन्नैं सू मादळिया बणवावै अर आयै दिन व्रत राख राख'र माचो ई झाल लियो।

कासीराम गुण्डा–बदमासा सू तो नीं डरयो पण लुगाई रै बीमार रैया सू डरण लागग्यो क्यू कै औलाद बिना तो पार पड जासी पण इण उमर मे लुगाई रै काईं हुयग्यो तो बीरो बुढापो बिगड जासी। चाय पींवता पीवता कासीराम अखबार मे पढयो कै अेक लुगाई अेक छोरी नैं जलम देय'र अस्पताळ मे छोड'र भाजगी। कासीराम सावित्री नैं अखबार पढ'र बतायो। सावित्री रो काळजो भरीजग्यो। दोनू जणा कानूनी कारवाई पूरी कर'र छोरी नैं खाळै ले'र घरै आयग्या।

छोरी नैं खोळै लेय'र आया पछै सावित्री आपरी बीमारी आद सब भूलगी अर घर रो सगळो माहोल ई बदळग्यो अर देखता ई देखता दुर्गा पाच साल री गुड्डी बणगी।

कासीराम सावित्री नैं कैयो आ छोरी कित्ती भागण है। ई छोरी नैं

खोळै लिया पछै म्हैं वडो अफसर बणग्यो अर जठै चावतो वठै म्हारी बदली हुयगी। सावित्री बीच मे ई बोलगी "दुर्गा नैं नवरात्री मे खोळे ले'र आया ई खातर इण रो नाव खाली दुर्गा कोनी आ साक्षात दुर्गा रो रूप है। अेक खुस–खबरी सुणो मा दुर्गा री किरपा सू म्हैं इण उमर मे मा बणणआळी हू। सावित्री रै मूढै सू आ बात सुणता ई कासीराम बुढापै मे टावर बणग्यो अर बान्दरै दाई उछळतो बोल्यो – याहू SSSS

सावित्री नीचै मूढो कर'र सरमावती माय भाजगी। कासीराम बैठो विचारा मे खोयग्यो कै ब्याव रै पच्चीस साला पछैं वो बाप बणसी। बीं दिन पछैं दुर्गा रा लाड घर मे घणा बधग्या।

सावित्री रो आधीरात नैं पेट दुख्यो अर कासीराम सावित्री नैं अस्पताळ लेय'र भाज्यो। सावित्री रै छोरो हुयो। कासीराम तीन दिना ता'ई घणी बघ ाया बाटी पण चौथै दिन सावित्री री अकाअेक तबीयत खराब हुयगी अर बठीठा आवणा सरू हुयग्या। डाक्टरा घणी भाग–दौड करी। तीन–च्यार बोतल खून ई चढायो पण पाचवैं दिन भोरा–भोर सावित्री सरीर छोड दियो।

लोग साची कैवै कै टावर री मा अर बूढै री लुगाई कदैई नीं मरणी चाइजै। कासीराम रै सागै दो ू हादसा साथै ई हुयग्या। बिया दुर्गा नैं खोळै लेय'र आया पछै छोरै री दरकार ई किण नैं ही। जद दरकार ही तद छोरै खातर कित्ता–कित्ता जतन करया? छोरो जलम्यो अर जलमता ई आपरी मा नैं खायग्यो।

दुर्गा नैं घर मे खोळै लेय'र आया सगळो घर खुसी सू भरीजग्यो अर पेट रो छोरो जलम्यो तो घर मे मातम छायग्यो।

दिन तो सुख रा होवै या फेर दुख रा टैम बीतता काई ठा लागे। देखता ई देखता दुर्गा अर गणेश कॉलेज में पढण लागग्या।

कासीराम सावित्री नैं तो धीरै–धीरै भूलतो गयो पण दुर्गा नैं परणावण री चिन्त्या मे डूबग्यो।

साची बात है सिझया पडता'ई चिडकल्या नैं उडणो ई पडै। कासीराम शुभ दिन देख'र दुर्गा रा हाथ पीळा कर दिया अर तीन महीना पछै दुर्गा आपरै घरआळै सागै विलायत चली गी।

दुर्गा रै ब्याव रै बाद कासीराम अेक चोखो घराणो देख'र गणेश नैं भी परणाय दियो। ब्याव हुवता'ई गणेश आपरी लुगाई रै इशारा माथै नाचण लागग्यो। कासीराम दस हेला मारै जणै छोरो अेकर हुकारो देवै।

कासीराम सोच्यो कै क्यू तो औ कुमाणरा पैदा हुवतो क्यू बीरी लुगाई मरती अर क्यू बो आज बेटै बहू रो मोहताज होवतो। कासीराम रो दुपारै चाय पीवण रो मन हुयो। बहू नीं नटी उणसू पैला'ई गणेश बीच में बोलग्यो "बावूजी चाय पीवण रो भी कोई टैम हुवै। बी दिन पछै कासीराम चाय पीवण री सौगध खा ली।

तीन च्यार दिन कासीराम नैं ताव चढग्यो अर खासी आवणी सरू हुयगी। गणेश अस्पताळ दिखावण रो कैयो तो गणेश री लुगाई चील दाई झपटती बोली अस्पताळ दस मील दूर कोनी। अै आपरै इमत्यान री त्यारी करै या थानैं अस्पताळ दिखावता फिरै।

गणेश रै अेकै साथै दो दो छोरा हुया राम अर श्याम। कासीराम राजी हुयो कै बुढापै मे बींरै बतळावण हुयगी। साची बात है कै मूळ सू चोखो ब्याज लागै पण पोता दो दा बरसा रा हुगग्या रमावणा तो दूर कदैई कासीराम नैं पोता रै हाथ ताई लगावण नीं दियो। गणेश अेक दिन हिम्मत कर लुगाई नैं कैयो "कदेई--कदैई तो राम--श्याम नैं बावूजी कन्नै जावण दिया कर। गणेश रै चुप रैवता ई बींरी लुगाई पाडियै दाई आख काढती बोली "राम--श्याम नैं टीवी लागगी तो? पछै गणेश काई बोलतो? आप रो मूढो ले'र घर सू बारै निकळग्यो।

गणेश पाछो घर मे वडयो तो कासीराम घर सू बारै विरडै म माचै माथै सूतो हो गणेश लुगाई नैं पूछै बीसू पैला ई बा बोलगी म्हारी तीन च्यार भायली म्हासू मिलण नैं आई। बाबूजी म्हानैं अेक मिंट बात नीं करण दी। जणै देखो खसू--खसू । आनैं टीवी अस्पताळ में भरती करा दो। नी तो म्हैं म्हारै छोरा नैं ले'र म्हारै पीरै जाऊ। अबै "क्यू कैवण री बींरी हिम्मत कठै ही।

तरह जनवरी नैं गणेश आपरै दोनू छोरा रै जलमदिन री पार्टी राखी। गणेश री लुगाई कासीराम नैं सुणावती बोली "सिझ्या नै घर मे थारा भायला--तायला भेळा हुयसी। बाबूजी बाखळ में पडया चोखा थोडी लागसी। शिवजी रै मिदर मे रात भर जागरण है। बाबूजी नैं बठै छोड आआ। और नीं तो राम रो नाव तो काना म पडसी।

कासीराम बीच मे बोल्यो "बहू ठीक कैवै बेटा।

कासीराम रै घर म रात नैं मोडै ता'इ पार्टी चालती रैयी पण कसीराम किणनैं अर क्यू याद आवतो? अर याद आवतो तो बीनैं घर सू काढता'ई क्यू?

दिनूगै गणेश थोडी–री मिठाई ले'र मिदर पूग्यो। कासीराम कूडी हसी हासतो बोल्यो अठै मिठाई कुण खायसी बेटा? मिदर मे घणोई चढावो चढै।

गणेश आपरो मूढो ले'र पाछो घरै आयग्यो।

कासीराम सोचण लाग्यो कै आदमी नैं आपरो जायोडो कित्तो चोखो लागै? बहू तो पराई है पण गणेश तो म्हारा खुद रो खून है। औ इत्तो नुगरो किया हुयग्यो? सावित्री आपरी जान देय'र इण नैं जलम दियो अर म्हैं इण नैं बिना मा रै कित्तो दौरो पाळयो। मिदर रै पुजारी रै सामीं कासीराम री आख्या भरीजगी।

कासीराम आप रो मकान कोठी अर आपरा रिटायरमेन्ट रा पईसा सगळा मिदर मे दान करण री सोचली। पुजारी कासीराम नैं समझायो कै औलाद तो आपरो फरज भूलगी पण तू थारो करम क्यू भूलै? नुगरो गणेश हुयो हे पोता कोनी हुया।

थोडै दिना बाद गणेश री नौकरी रो कागद आयो पण बिचोलियै दो लाख नगद माग्या अर धणी–लुगाई नैं बाप री याद आई अर गणेश सीध ो मिदर भाज्यो। पण कासीराम रो माचो खाली देख'र गणेश रा पग बठैई चिपग्या।

मिदर रै पुजारी गणेश रै हाथ मे अेक कागद देवतो बोल्यो "तीन महीना हुया कासीराम आपरी बेटी कन्नै विलायत चल्योग्यो।

गणेश आपरो मूढो ले'र मिदर सू बारै निकळग्यो अर घर मे घुसताई गणेश री लुगाई दौड'र गणेश सामीं आ'र बोली पईसा रो काई हुयो? बाबूजी काई बाल्या?

गणेश लुगाई रै मूढे माथै कागद फेंक'र आपरै कमरे मे बडग्यो। गणेश री लुगाई जमीन माथे सू कागद उठा'र जल्दी सू पढयो।

खाली कोरै कागद म इत्तो ई लिख्याडो हो "शाबास बेटा।

OO

# घाती

छोटै–सै गाव मे हवेली जिस्यो घर। घर रै च्यारू कानी तरै–तरै रै पेडा रो चौभींतो। घर रै आगण मे तरै–तरै रा फूल अर पौधा सू भरयाडा गमला। आगणै मे दूब अर ओेक आध पपीतै रो पेड।

रात रा नौ साढे नौ रो टैम। सावण रो महीनो। आभो काळी–पीळी बादळिया सू घिर्योडो। चाद कदैई निकळै अर कदैई बादळा माय सू भागतो दिखै। ओेकर तो बिरखा जोर सू आ'र रुकगी पण झिरमिर–झिरमिर सरू हुयगी।

बरामदै मे हींडो घाल्योडो अर हींडै मे बैठा अनूपचद रोटी जीमै अर जीमतो–जीमतो काई ठा काई सोचण लागग्या। रोटी रो कवो हाथ मे रैयग्यो।

मूळचद मगरै (कोलायत तहसील) रो अर अनूपचद ओसिया जोधपुर रो रैवणआळो। दोनू जणा भादवै में रामदेवजी रै मेळै मे ओेक धमशाळा मे भेळा हुया अर बाता ई बाता मे सारी रात आख्या मे काट दी। दोनू जणा आपस मे धरमेला घाल लिया अर आसोज री दसम नैं पाछा रामदेवरा मे भेळा हुवण रो वादो कर'र आप–आप रै गाव रवाना हुवण लाग्या।

दोना रा ओेक दूजै सू अळगो हुवण रो जी नीं करै। मूळो बोल्यो "जापायत नैं ओेकली छोड'र आयो हू। नीं तो थारै सागै । अनूपो बीच म ई बोलग्यो ओ ई लफडो म्हारै साथै है भाईडा। परणीजता ई तीन छोरा हुया पण लाग्या कोनी। फेर ओेक गीगली हुया पछै बारै साल बाद पाछी आस बधी है। सोचू बाबो भलै सरीसो दे दै तो आगलै भादवै मे पैदल आ'र चादी रो छतर चढासू। मूळो कैयो "रामदेव बाबो सब भली करसी।

अनूपो बस म बैठ'र रवाना हुयग्यो। मूळो कइ देर ताईं अनूपै री बस

नैं जावता देखतो रैयो। फेर दूजी बस मे बैठ'र मूळो ई घरै पूगग्यो पण घर आगे भीड देख'र मूळो खाथा–खाथा पग मेल्या। रस्तै मे ई अेक जणो बोल्यो भाई मूळा अबै चाये कित्तोई खाथो चाल पण थारी घरआळी छोटी हुवती थका आपा सू बडी हुयगी। पण सो साल पूरा करती–करती थारै खातर आपरी निसाणी छोड'र गयी है। थारै छोरो हुयो है।

इत्तो सुण्या पछै अेकर तो मूळै रा पग बठैई चिपग्या। फेर भाज'र घर म बडयो पण आगणो लुगाया सू भरयो देख'र पाछो मूढो लटका'र घर सू बारै आयग्यो अर रोवण लागग्यो।

नवैं दिन मूळै नैं अनूपै रो कागद मिल्यो कै थारी भोजाई छोरो जलम्यो पण मरयोडो।

अनूपै अर मूळै रो रामदेवरा जावणो कीं काम नी आयो पण हुणी नैं कुण टाळ सकै।

बठीनै अनूपो बेरो पडता'ई कै मूळै री जोडायत नीं रैयी झट मूळै रै अठै पूगग्यो। दोनू भायला गळै मिल'र घणो'ई दुख करयो। पण भगवान री मरजी रै आगै हार मान'र आपरै धन्धै मे लागग्या। मूळै कई दिना बाद अनूपैं नैं कागद लिख्यो – अनूपा म्हारी मानै तो तू बठै बैलो फिरै अर म्हारै अठै मोकळी जमीन मोकळी खेती। थारै लुगाई टाबरा नैं लेर अठैई आजा। थारै अठै आया म्हारो छोरो ई पळ जासी।

चौथै दिन ई अनूपो लुगाई अर छोरी नैं लेर मूळै रै अठै पूगग्यो। मूळै आपरै घर रै कन्नै ई अनूपै नैं आटै री चक्की लगवा दी अर आपरै घर रै बराबर मे अनूपै रै खातर घर बणा दियो अर आपरै बिना मा रै छोरै नै अनूपै री लुगाई नैं भोळा दियो। पछै आपरै धन्धै लागग्यो।

कई दिन आडा घाल'र अनूपो मूळै सू बोल्यो मूळा अेक बात म्हारी मानै तो कैऊ। मूळो जोर सू बोल्यो अरे दस केवै नीं यार।

अनूपो थोडो धीमै पडतो बोल्यो "तू दूजो ब्याव कर लै। मूळो अेकाअेक उठतो बोल्यो थारी लुगाई नैं म्हारी रोटी बणावती नैं मौत आवै तो म्हैं म्हारी रोटी खुद ई बणाय लेसू। भगवान म्हनैं दो हाथ दिया है।

अनूपो दोनू हाथ जोडतो बोल्यो आ तू काई कैवै मूळा? थारै कारण म्हनैं दो जूण री रोटी मिलण लागी है। तू तो म्हारो किसन है भाईडा – तू सुदामै री बात रो इत्तो बुरो मानग्यो। म्हैं आइन्दा कदैई आ बात मूढै नीं लाऊ। आज म्हनैं माफ कर दै।

बात आई गई अर दोनू भायला सौरा सुखी आप–आप रै धन्धै मे

उळझग्या। अनूपै आपरी घरआळी नैं समझा दी कै वा कदैई भूल सू ई मूळै नैं दूजो ब्याव करण री बात नीं कैवै। पण लुगाया री आ सबसू बडी कमजोरी हुवै कै जिकै काम रो मना करण रो कैवो वो काम पैला करै। ज्यू ई मूळो रोटी जीमण नैं बैठयो अर अनूपै री लुगाई मुळकती बोली "मूळचन्दजी थे म्हारै देवराणी कद लारैया हो?

मूळो बोल्यो "देखो भाभी अबै ई घर मे थारी देराणी कदैई नीं आवै। अबै तो ई घर मे मोडी बेगी जसवन्त रै बहूराणी आसी अर वा जिम्मेवारी अबै म्हारी कोनी थारी अर अनूपै री है। क्यूकै मूळै तो अनूपै नैं आवता ई बोल दियो कै नारायणी रो ब्याव म्हैं करसू अर जसवन्त रै बीनणी तू दूढसी।

अनूपै री घरआळी रो सुभाव भौत चोखो हो। वा कदैई जसवन्त नैं औ वेरो नीं लागण दियो कै वींरी मा कुण है? जसवन्त कणा सोवै कणै उठै सगळी जिम्मेवारी अबै केसर री ही क्यूकै मूळै नैं कठै वेला कै वो जसवन्त रो ध्यान राखै।

गाव रै कन्नै ई मूळै री अेक जमीन ही। वीं जमीन नैं फौजआळा ले ली अर मूळै नैं जमीन रै मुवावजै रा सत्ताईस लाख रिपिया नगद मिलग्या। इत्ती बडी रकम हाथ आया मूळै आपरी परचून री दूकान ई अनूपै नैं सम्भळा दी अर खुद ठेकादारी सरू कर दी।

दिन सूवा आवै जणै सगळा काम आप ई आप ठीक हुवण लाग जावै।

अनूपै री छोरी खातर घर बैठा ई सगपण आयग्यो। छोरो सरकारी नौकर अर चोखो पढयोडो ई खातर मूळो बोल्यो "अनूपा क्यू चूकै।" वादै रै मुताबिक ब्याव रो सगळो खरचो मूळै लगायो।

मूळै अर अनूपै री यारी देख'र लोग बानैं कळजुगिया राम–लखण कैवता। क्यूकै इत्तो मेळजोळ आजकाल मा जायै भाया मे ई नीं हुवै। वै ना जात रा अर ना पात रा।

अेक दिन मूळो अर अनूपो हसता थका घर मे बडया अर अनूपै री लुगाई केसर थुथकारो नाखती बोली "देखो मूळचन्दजी थे घरै हसता आयग्या बो तो चोखो पण घर सू बारै साथै निकळता लिलाड माथै काळो टीको लगा'र निकळया करो। नीं तो कोई कुमाणस थानैं निजर लगा देवैला। केसर री बात सुण'र अनूपो जोर सू हस्यो अर हीडै मे बेठो अेकाअेक चमक्यो अर रोटी रो कवो अनूपै रै हाथ माय सू नीचै पडग्यो।

अनूपै रै कन्नै ई बैठी अनूपै री लुगाई अनूपै नैं पूछयो "रोटी जीमता क्यू हस्या? पण अनूपो बात नैं टाळण री कोसिस करी।

केसर थाळी मे रोटी मैलती बोली साची बताओ? थे रोटी जीमता-जीमता क्यू हस्या? झूठ बोल्या तो थानैं म्हारी सोगध है।

अनूपो फेर बात नैं टाळतो बोल्यो अरे कैयो नी कोई बात कोनी। इया ई कोई पुराणी बात याद आयगी। ला थोडो अचार हे तो दे दे।

केसर तणीजती बोली बात किया कोनी? बिना बात हसी थोडी ई आवै?

अनूपो झेप मिटावतो बोल्यो ओ हो तू म्हारी तो सुणे कोनी अर खुद रो दळियो दळ रैयी है। म्हैं कैयो नी थोडो अचार है तो दै।

केसर बिगडती बोली कोनी अचार। थारा दीदा कठै हे? कठे गम्योडा हो? किसी सोक याद आ रैयी हे? कन्नै पडयो थानैं अचार ई नी दीख रैयो है?

अनूपो फेर बात टाळतो बाल्यो "तू क्यू ऊधी-सूधी बाता सोचण लाग रैयी है? म्हैं कैयो नीं कोई पुराणी बात याद आयगी।

केसर बोली "बीस बरसा सू थारी अैंठी थाळी मे जीमू हू। म्हनैं पाटी ना पढावो। साची बताओ? जीमता-जीमता काई सोच रैया हा अर क्यू हस्या? थानैं थारै जसवन्त री सौगध।

थाळी मे हाथ धो'र अनूपो मुळक्यो अर हीडै सू उठ'र साळ में बडग्यो। केसर जीमण बैठी पण बीरै रोटी कठा नी उतरै। बीनैं तो हीडै मे बेठो खसम हसतो दीखै। केसर अैंठा ठीकर अेकै कानी खिसका'र आगणै री बत्ती बुझा'र साळ मे बड'र साळ रो बारणो ढक लियो।

माचै माथै सूतो अनूपो ऊपर नैं आख्या फाडया सिगरेट रो धुवो छोड रैयो हा।

केसर अनूपे रै मूढै माय सू सिगरेट खोस'र आपरै मूढै मे घालती बोली "बताओ थे रोटी जीमता क्यू हस्या? नी तो म्हैं ई आज सू सिगरेट पीवणी चालू करू।

अनूपो मुळक'र पसवाडा फेरतो बोल्यो भगवान री सौगध कीं बात कानी।

केसर सिगरेट नैं फैंक'र बिगडती बोली "झूठी सोगना खावता थानैं सरम नी आवै? साची-साची बताओ थे जीमता-जीमता क्यू हस्या? नी तो म्हनैं राध'र खावोला।

अनूपो मुळक्यो अर केसर नै आपरै कानी खींचतो बोल्यो पैली तू म्हारी सौगध खा कै आ वात तू कदेई कोई नैं भी नी बतावेला।

ऊतावळी केसर अेक सास मे बोलगी थारी सौगध जोगमाया री सोगध थारै जसू री सौगध।

अनूपो केसर रै और नैडो भिडतो बाल्यो लोग कैवै खून करयोडो छिप्यो नीं रैवै। बता मूळो कठै है?

केसर बोली "म्हनैं काई बेरो? अै भादवै री आठम नैं बारै साल हुयजासी। कींनैं ठा इत्तो कमावण नैं कठै गया है? भगवान जाणै पाछा कद आसी – म्हारी तो की समझ मे नीं आवै कै आखिर बै आपा नैं बताया बिना गया कठै है? कठै ई जावो चिट्ठी पत्तरी कागद–वाबद तो देवता।

अनूपो बोल्यो मरयोडा ई कदेई पाछा आया?

केसर बोली "काई बोल्या थे?

अरे मूळो तो कदेई रो मरग्यो।

"कदेई रो मरग्यो? केसर माचै सू उठती बोली थूको थारै मूढै माय सू? सरम नीं आवै। भाई जिस्यै दोस्त खातर इया कोजा बोलता?

अनूपो माचै माथै बैठतो बोल्यो "म्हैं मूळै नैं कदैई ठिकाणै लगा दियो।

केसर आपरो हाथ छोडा'र माचै सू उठती बोली थारो माथो तो ठीक है नीं? बेरो है थे काई बक रैया हो? आज थे कोई नसो बीजो तो नी ले'र आया हो?

अनूपो केसर रो हाथ झाल'र कन्नै बैठावता बोल्यो "देख तू ध्यान सू सुण। बीं दिन तू म्हनैं कैयो नी आज इत्ता मोडा कठै सू आया हो? बीं दिन म्हैं तन्नै बताया बिना ई मूळचन्द रै सागे बींरै खेत चल्यो गयो।

खेत रै रस्तै मे अेक ऊडो–सो दरडो आयो। म्हा देख्यो दरडै मे अेक काळो कळीन्दर साप दरडै सू बारै निकळण खातर कोसिस करै अर पाछो दरडै मे पड जावै। म्हैं अर मूळचन्द साप नैं बारै काढण खातर घणी जुगत करी पण साधन बिना बीनैं बारै किया काढा? की समझ मे नी आ रैयो हो। मूळो अेक लकडी दरडै मे खडी करणे मे लाग्यो अर अेकाअेक म्हारै जीव मे काई ठा काई मैल आयो कै म्हैं मूळै नैं दरडै मे धक्को दे दियो। दरडै मे ऊधो पडता ई साप मूळै नै तीन–च्यार बार खायग्यो अर म्हारै देखता–देखता मूळचन्द अेक दो हिचकी खाई अर दम तोड दियो। म्है बी

दरडै नैं धूड नाख'र पूरो वूर दियो अर घरै आर नींद रो वहानो कर भूखो ई सोयग्यो। डरतो तन्नै ई वतायो कोनी अर रातभर परावाडा फोरतो रैयो। कई दिन तो थोडो डर्यो। फेर धीरै–धीरै वात नैं भूलतो गयो। पण कदैई–कदैई हाल वो रीन आख्या रै सामैं आ जावै।

केसर अपणायत जतावती वोली थे भोत ई मूरख मिनख हो?

अनूपो मुळकतो वोल्यो "वो किया?

किया क्यारी? मूळचन्द जी नैं साप ई खायग्यो हो तो वानै वठै वूरण री काई जरूत ही?

वानैं धरै लै आवता कूडा साचा झाडा फूक करवावता – अस्पताळ दिखावता। साप खायोडो थारै माथै कुण शक करतो। आपा वारा चोखा सुधारा करता अर लोगा री वा वा लेवता। इया मूळचन्दजी नैं वूरता थानैं कोई रोही मे देख लेवतो तो म्हा मा–वेटा मे किसी'क वींतती?

अरे। बीं सूनी रोही मे म्हारो वाप देखतो? रात रो अन्धारो अर *विरखा न्यारी वरस रैयी सगळा सैनाण अपणै आप ई मिटग्या।*

थे मन मे राजी भलाई हुवो ई मे था अकलमदी नीं करी। थारी दोस्ती माथै सगळै गावआळा नैं भरोसो है। ई खातर लोग थारै माथै अबार ताई शक नीं करयो अर ना पुलिसआळा थानैं दौरा करया। की म्हैं सगळै गावआळा रै दौरै सौरै बखत मे आडी आऊ। रात–विरात टैम–बेटैम कोई आ जावै तो वीनैं खाली नीं काढू, नीं तो आज सगळो गाव बैरी हुय जावतो। म्हारी समझ मे तो आ नीं रैयो है कै थे इत्ता बेगा मूळचन्द रो अेहसान किया भूलग्या? मूळचन्दजी जिस्या दोस्त पडया कठै है ससार मे?

अनूपो बोल्यो "तू अबै उपदेस तो दै मत? सूय जा म्हनैं दिनूगै बेगो उठणो है। *गैलसफी जै म्हारी जाग्या मूळचन्द म्हनैं दरडै मे धक्को दे* देवतो तो?

काई कैयो था? थोडा दूस'र बोल्या? मूळचन्द जी थानैं अठै दरडै मे धक्को देवण नें बुलाया हा? भूख मरता नैं थानैं छाती सू लगाया। आटै री चक्की लगा'र धन्धै माथै लगाया। परचून री दूकान थानैं सूप दी। घरियो बणा दियो थारी छोरी नैं चोखी जाग्या परणा दी काई माथै मागता हा मूळचन्द जी रै?

"तू तो बावळी है। समझे कोनी? आदमी जात रो कीं भरोसो नी करणो। वो पाडै दाई कद आख बदळ लेवै अर कद अधवैयी म धक्को दे

देवै?

केसर बोली आ बात तो थे लाख रिपिया री कैय दी। आदमी जात रो की भरोसो नीं करणो। पैला म्है भीं नी जाणती पण अबै जाणगी भौत कुत्ती कौम हुवै औ आदमी।

अनूपो उबासी लेवतो बोल्यो अबै नीं रैयो बास अर नी बाजै बासरी। रैयो सवाल मूळचन्द रै छोरै रो सो बीनै बडो हुया परणा'र अळगो करसा समझी? अनूपो बोलतो–बोलतो खर्राटा भरण लागग्यो। पण केसर री आख्या मे नीद कठै।

अनूपो रात रो मोडो सूतो ई खातर दिनूगै मोडै ता'ई गूदडा मे सूतो पडयो। अनूपै नींद मे किणी नैं बोलतो सुण'र पसवाडो फोरयो अर थोडी आख्या खोली अर सामनै पुलिस खडी देख'र फट उठ'र माचै माथै बैठो हुयग्यो अर अेक ई मिट मे सगळी कहाणी समझग्यो।

अनूपै आपरी घरआळी कानी जोयो। केसर मूळचन्द रै छोरै जसवन्त नैं गोदी मे लिया सामनै खडी ही।

अनूपो बोल्यो न चाल्यो। माचै सू उठ'र नीचो मूढो करया घर सू बारै निकळयो अर पुलिस री गाडी मे बैठग्यो।

OO

# पछतावो

जोगीदान आपरी छोरी सरिता नैं लाड सू सालू कै'र बुलावतो। इया तो जोगीदान रै तीन–तीन छोरा हुया पण जीयो अेक ई कोनी। ई खातर सालू रै जलमता'ई जोगीदान री घरआळी राधा सालू रो गळो जतर डोरा सू भरयोडो ई राखती। सागै ई सालू रै लीलाड माथै काळी टीकी लगावणी कदैई नीं भूलती।

साची बात है दूध सू बळयोडो छाछ नैं भी फूक मार'र पीवै। कदैई कोई सालू रै काळी टीकी लगावणी भूल जावतो तो सालू री दादी रोळा कर कर'र सगळै घर नैं माथै उठा लेवती। घर रो मिनख आवै या ओपरो दादी पैली आपरी पोती रै थुथकारो नखावती। जोगीदान आपरी मा नैं घणो ई समझावतो कै बा पोती रा इत्ता जतन नीं करया करै क्यू कै बडी हुया बीनैं सासरै जावणो है।

सासरै रो नाव सुणता ई जोगीदान री मा तडकती बोली "देखरै म्हैं म्हारी सालू नैं बींनैं परणासू जिको छोरो म्हारै अठै घरजवाई बण'र रै'सी। नीं तो म्हारी छोरी कुआरी भलैई बैठी रैवो।

थोडो मुळक'र जोगीदान कुचरणी करतो बोल्यो "क्यू? तू भूलगी मा। म्हारै सासरैआळा म्हनैं घरजवाई राखण खातर थारी अर बाबूसा री कित्ती गरज्या करी पण तू टस सू मस नी हुई? थारै तो अेक नीं पाच–पाच पूत हा जे अेक–आध घरजवाई रैय जावतो तो थारो किस्यो दूध सूखतो?

जोगीदान चुप नी रैयो बी सू पैली जोगीदान री मा घोरको करती बोली काईं कैयो दूस'र कैय तो"

"म्हैं कैऊ हू म्हैं फौज मे भरती हुवण थोडो ई जारैयो हो। थोडै ठडै दिमाग सू सोचणो हो तन्नै?

"सोच्योडो हो आपरी मा घरासी अर अठै घरजवाई बण'र रैसी। जोगीदान बोल्यो "चोखी दादागिरी है थारी।

"क्यू रै ई म काई री दादागिरी है? किस्यो मिनख मार दियो म्हे? सुण ले ध्यान सू, सालू खातर कोई सगपण आवै तो बीं सू पैला सगळी बाता खोल'र कर लियै। कोथळी म गुड भाग्यो तो तू थारी जाणे। सालू नीं परणीजसी तो म्हैं सोच लेसू सालू म्हारी पोती नीं पोतो है और नीं तो बुढापै मे म्हारी चाकरी तो करसी। सावरियै रो दीयोडो घणो ई है। सालू रा पोता–पोती खावै तो ई नी खूटै।

अरे मा। सालू नैं परणासी नी तो बींरै पोता–पोती कठै सू हुयसी?

"कळजीभिया थूक थारै मूढै सू। म्हारी छोरी कुआरी क्यू रैसी? सालू हाल तो आठ बरस री हुई है। अर अबार सू ई मागा माथै मागा आवण लागरैया है। आ बैठी। पूछ थारी घणियाणी नैं? क्यू री बोलै क्यूनी?

जोगीदान री घरआळी मुळक'र मूढो नीचो कर लियो। जोगीदान हाथ रै बाध्योडी घडी नैं देख'र उठतो बोल्यो "चोखो मा। तू थारै जचै ज्यू कर। बात्या ई बात्या में आज फेर म्हारै दफ्तर रै मोडो हुयग्यो।

"दफ्तर ई जावणो है। म्हैं मतलब री बात करू अर थारै दफ्तर रो मोडो हुवण लाग जावै। आजकाल तो इत्ता बेगा चपरासी बाबू ई दफतर नीं पूगै? तू तो इत्तो बडो अफसर है?

"तू ठीक कैवै मा। पण आजकाल यूनियन रो जमानो है। बाबू, चपरासी मोडा भलै ई आओ पण अफसरा नैं तो टैम सू ई दफ्तर पूगणो पडै।

"तो छोड बाळ इस्यी नौकरी? थारो बाबलियो घणो ई छोड'र गयो है।" जोगीदान मुळक'र बारै निकळग्यो। सालू खातर घरजवाई री बात करता जोगीदान मा री बात नैं तो मसखरी में टाळग्यो पण खुद विचारा मे खोयग्यो कै सालू रै सासरै जावताई सगळो घर सूनो।

जोगीदान रो काळजो हिलग्यो अर जीप ले'र पाछो घरै आयग्यो अर घर आगै भीड देख'र अेकर तो जोगीदान बुरी तरिया डरग्यो पण डाक्टर अग्रवाळ हिम्मत बधाई कै घबरावण री बात कोनी माजी नैं छोटो सो दिल रो दोरो पडयो है। म्हैं नींद री सूई लगा दी है ठीक हुयजासी पण माजी री उमर देखता आगै किणी बात रो सदमो नीं लागणो चाइजै।

जोगीदान मा रो माचो झाल'र ई बैठग्यो। नीद सू जागता ई जोगीदान री मा बोली "देख रै आज तो म्हैं बचगी पण जोगीदान बीच मे बोलग्यो "देख मा तन्नै कित्ती बार कैयो है कै तू ऊधी–सूधी बात्या करया मत कर। थारै की नी हुवै।

क्यू रै म्हैं दूध पीवती टीगरी हू। जिको तू म्हारै मरणै सू इत्तो डर रैयो है। अस्सी अर चार ले लिया। अबै मरसू नी तो काई अमर हुयसू। म्हैं तो खा–कमालियो। बस अेक बात री मन मे हे कै मरती–मरती सालू रो ब्यावडो देख लू। ई खातर कोई चोखो–सो टाबर देख अर छोरी रा हाथ पीळा करदै। नी तो मरगी तो म्हारी आत्मा भटकसी।

"देख मा। तू फेर कावळ बोलण लागगी। डाक्टर केयो है कै अबार थारै कीं नीं हुवै।

"बीमारी हुवै तो डाक्टर ठीक कर देवै बेटा। पण डाक्टर उमर थोडी घालै? ई खातर तू आ डाक्टरा रै चक्कर मे तो पड ना अर बेगो सी–क सालू खातर टाबर देख।

"तू भोळी हुई है मा? अबार सालू री उमर ई कित्ती'क हुई है। अर बाल ब्याव करणो कानूनी जुरम है। म्हैं सरकारी अफसर हू। अगर म्हैं ई नियम तोडसू तो दूजा लोग कद मानसी।

"देख। तू म्हनैं उपदेस तो दै ना। तन्नै कैयो जिको काम कर। आखातीज रो अणबूझो सावो है। छोरी नैं फेरा दे दै। नी तो पछतावो रै जासी।

जोगीदान आफत मे पडग्यो। अठीनै छोरी रो बचपन अर बठीनै मा री पाकी उमर। उफतोडो जोगीदान आपरै भाया सू बात करी। लोग कूड थोडी कैवै। भाई अर भाईपैआळा नैं तो खाड गळया ई खावण नैं मिलै। वै आपरी मा री बात नैं क्यू टाळता?

आखातीज नैं कित्ता'क दिन घटता। जोगीदान ब्याव री त्यारया मे लागग्यो अर ब्याव सू तीन दिन पैला ई पूरै गाव नैं नूवी बीनणी ज्यू सजा दियो।

छोरो जोगीदान री भोजाई रो सागी भतीजो। ई खातर कैवताई छोरैआळा जान ले'र पूगग्या। जोगीदान जान अर जान्या री चोखी खातर करी। जुआरी मे जान्या नैं अेक–अेक चादी री गिलास दे'र जान नैं सीख दिराई।

सीख री टैम छोटा–मोटा सगळा री आख्या में आसू। लुगाया कोयलडी गा'र हुवाड काढै तो गाव री छोरया परणोडया पण मुकलायो नीं हुया कुआरया सुबक–सुबक'र औई जतावै कै वडेरा बानैं इत्ती छोटी उमर मे क्यू परणायी?

लोग कैवै कै छोरो स्कूल जावतो रोवै अर छोरी सासरै। अबै छोटी

छोटी दूध पींवती टींगरया नैं परणासो तो यै रोसी नी तो काई करसी?

जान राजी खुसी पूठी रवाना हुयगी। इत्ते दिना रा थाकेलो अर तीन–तीन दिना रो औजको सगळा री आख्या फाटै ही काई नौकर अर काई चाकर जिकै नैं जठै जाग्या मिली बो बठै ई आडो हुयग्यो। तावडो माथै चढग्यो।

अेकाअेक गाव मे हाको फूटग्यो कै अेक ट्रकआळो मारुति रै भचीड मारग्यो। ड्राइवर अर जवाईराजा मौकै माथै ई मरग्या। सगळै गाव मे मातम छायग्यो। सालू रो मामो सालू नैं पाछी घरै ले आयो। सालू नैं देखताई सालू री दादी रा प्राण पखेरू उडग्या। लोग जवाईराजा नैं तो भूलग्या अर डोकरी रै आखरी बन्दोबस्त में लागग्या।

बखत री गाडी रै ब्रेक तो हुवै कोनी। ई खातर भाजतै टैम नैं कुण रोकै। दिन महीना मे अर महीना साला में बीतग्या। देखता ई देखता आठ री सालू अट्ठारा री हुयगी। सालू नैं देख–देख'र सगळा घरआळा माय रा माय घणा'ई पछतावो करै कै क्यू तो ई टींगरी नैं परणाता अर क्यू अै दिन देखणा पडता।

जोगीदान रात रा पसवाडा बदळतो आपरी घरआळी सू बोल्यो आपणै समाज रो अेक छोरो सै'र में वकालत करै। बिना सरत सालू सू ब्याव करणो चावै। जोगीदान रै मूढै सू इत्तो सुणताई राधा उठ'र बैठी हुवती बोली "कुण है बो सुमाणस? सावरियो बारी हजारी उमर करै अर बींनैं तरक्की देवै। म्हारी मानो तो कोई बामण नैं'ई ना पूछो। नीं तो आ पहाड–सी जिन्दगी छोरी सू किया कटसी?

घरआळी री राय सू जोगीदान री थोडी हिम्मत बधी अर अेक दिन बो आपरै सगळै भाया आगै सालू रै दूजै ब्याव री बात छेडी अर बात पूरी सुणी कोनी बी सू पैला'ई जोगीदान रो बडोडो भाई गरजतो बोल्यो थारै अेकलै री छोरी राड हुई है? फेर दूजो भाई बोलग्यो थारै घर मे रोटी खूटगी तो कुमाणस नैं जैर दे दै या कूवै मे धक्को दे दै। तीजो भाई जगै सू उठतो बोल्यो "तू समाज मे म्हा सगळा रो नाक कटावणो चावै है। पण कन्नै बैठयो जोगीदान रो भतीजो बिदकग्यो अर रोवतो चिखतो बोल्यो आदमी री अेक लुगाई मर जावै तो दूजी दूजी मर जावै तो तीजी तीजी मर जावै तो चौथी अर चौथी मर जावै तो सवा महीनै बाद पाचवी लावण नैं मूढो धो लेवै अर छोरी अेकर फेरा खाया पछै जीवै या मरै कूणै मे बैठी रैवो। क्यू? औ कठै रो न्याय है? आखिर इस्या नियम बणाया कुण

है? सगळा रै मना करता–करता था सालू नैं मरणा दी। काई देख्यो सालू सासरै जाय'र? रोवो हो थे नाक नैं अबैं आ अट्ठारै री सालू अस्सी री कद हुसी?

अबैं छोरै री ओपती बात रो जबाव तो कुण देवै? छोरै रै बाप छोरै रै दो काना मे दे'र कमरै सू बारै काढ दियो।

कई दिन आड घाल'र जोगीदान आपरै सासरै आळा सू सालू रै दूजै ब्याव खातर बात चलाई कै वै नौ–नौ हाथ जमीन सू ऊचा कूदण लागग्या कै इस्यो माडो काम म्हारी सात पीढया मे ना हुयो अर ना म्हैं अबै हुवण देवा।

बठीनै लारलै दस बरसा मे सालू रै सासरैआळा सालू री खैर खबर तक नीं ली पण सालू रै दूजै ब्याव री थोडी भणक पडता'ई बै सालू नैं लेवण नैं गाव पूगग्या। पण जोगीदान बीं दिन मरण मारण नैं त्यार हुयग्यो अर बानैं कचैडी रो रस्तो दिखा दियो।

सालू नैं आपरै ब्याव रो बेरो नीं हो जित्तै तो बा खूब खेली–कूदी पण जिया ई बीनैं बेरो पडयो कै बा कुआरी कोनी बाल–विधवा है तो बा घर सू काई आपरै कमरै सू ई बारै निकलणो बद कर दियो।

टैम बीततो गयो अर अेक दिन सुणण मे आई कै सालू गाव रै अेक छोरै रै सागै गाव सू भाजगी।

माथै पर हाथ दिया बैठा भाई अर भाईपैआळा रै बीच मे जा'र जोगीदान रो बो'ई भतीजो पैला तो जोर–जोर सू हस्यो अर फेर रोवतो सो बोल्यो क्यू सा? अबैं थारो नाक नीं कटयो? चिप्योडो रैग्यो?

छोरै रै सवाल रो जवाब न तो की रै कन्नै हो अर कुण किण मूढै सू जवाब देवतो।

सगळा घर अर समाजआळा नीचै मूढो करया जमीन कुचरण लागग्या।

OO

# किण नै दोस

दफ्तर मे न तो कोई अफसर टैम सू आवै अर न कोई चपरासी। बाबू लोगा रो तो कैवणो ई काई?

न तो कोई रो टैम सू बिल पास हुवै अर न कोई रा बिल जमा हुवै। पण महीनै आळै दिन तनखा मिलण में अेक मिट रो मोडो हुय जावै तो फेर देखो मजा? कर्मचारी रोळा कर–कर'र सगळै दफ्तर नैं माथै पर उठा लेवै।

इया घणा–सी'क कर्मचारी दफ्तर आवै रजिस्टर मे हाजरी लगावै अर थीं टैम ई दफ्तर सू पाछा भाग जावै। कोई–कोई जणा तो खाली तनखा आळै दिन ई दफ्तर पधारै। कोई भलो माणस अफसर रो पूछलै तो अेक ई रटयो–रटायो जबाव – सा'ब साईड माथै गयोडा है। तू राणी म्हैं राणी कुण भरै मटकै में पाणी।

घरधणी मरतोड हुवै ता बा घर दौरो ई बसै या इया कैयदा के गरीब री लुगाई सगळा री भोजाई। कैवण रो मतलब इत्तै बडै देस नैं चलावण खातर सरकार नैं कडाई सू ई काम लेवणो चाइजै। फूठरी बात आ कै जनता रा काम हुयसी तो जनता राजी हुयसी अर जनता राजी हुयसी तो जनता वोट देसी। नीं तो आ कर्मचारिया कन्नै किस्या वोट पडया है? अरे आरा खुदरा वोट ई कीरै कीं काम नीं आवै। क्यूकै चुनाव मे आरी इस्यी–इस्यी जाग्या डयूटी लाग जावै कै अै न अठीनै रा अर ना बठीनै रा रैवै।

आयै दिन अखबारा में सिकायता पढ पढ'र राज रा मुख्यमत्री ए डी एम रै पद माथै टी एस वरदाराजन नाव रै अेक मद्रासी बामण नैं तरक्की देर सैं'र भेज दियो। वरदाराजन रो नाव सुणता'ई सगळै कर्मचारया रा कानडा खडा हुयग्या। क्यूकै दफ्तर रो अेक बाबू जयपुर मे वरदाराजन कन्नै काम करयोडो हो अर बो वरदाराजन री रग–रग नैं जाणतो।

वरदाराजन सब सू पैली हाजरी लगा'र दफ्तर सू भाजण आळै कर्मचार्‌या री अेक लिस्ट बणाई अर अेक–अेक कर'र सगळा कर्मचारया

री जाग्या बदळी। फेर बै रईसजादा – जिका खाली तनखा लेवण नैं ई दफ्तर पधारता – बारी लिस्ट बणा'र राजधानी भेज दी अर चौथै दिन राजधानी सू बदळी रा हुकम आयग्या। बदली रा ओडर आवताई रईसजादा अठीनै–बठीनै भाजणा सरू हुया।

कोई राजनेता कन्नै भाजै कोई अभिनेता कन्नै पण वरदाराजन रो पक्को काम करेडो अर सगळा नैं टकै सो जवाब कै तबादला रा ओडर ऊपर सू आया है। इया वरदाराजन डीलडोल रो ई लूठो हो अबै बींरै सामी घोरको भी करणआळो दो बात सोच'र करै।

वरदाराजन जात रो मद्रासी पण हिन्दी उर्दू, मारवाडी पजाबी सगळी भाषावा बोलणी जाणै। ई खातर सगळा रईसजादा आपरा गूदड बाधर गाडया चढणो ई ठीक समझ्यो।

वरदाराजन हाजरी रो नूवो रजिस्टर बणायो अर ऊपर आपरो नाव लिख्यो फेर दूसरै अफसर अर बाबुआ रा अर नीचै ई नीचै चौकीदार रा नाव।

वरदाराजन रजिस्टर नैं आपरी टेबल माथै राख लियो अर खुद ठीक दस बज्या आपरी खुरसी माथै आ'र बैठ जावै। अबै किण री हिम्मत जिको कोई मोडो आवण री जुकाल करलै।

वरदाराजन री सूझ सू दफ्तर री गाडी तो पटडी माथै भाजण लागगी पण

वरदाराजन रै कन्नै घर री गाडी अर घर रो ई ड्राईवर। घर मे काम करणआळी नौकराणी री सरकार रै बराबर तनखा अर सरकार रै बराबर छुट्टिया। इत्तो सुख नीं हुवतो तो बापडी कमला रो काम माथै आवणो मुश्किल हुय जावतो क्यूकै कमला अधेड विधवा अर बीरा सासू–सुसरा बूढा अर मादा। कमला रा सासू–सुसरा कमला नैं दूजो ब्याव करण खातर मोकळी समझाई कै म्हारो बूढापो आज मरया काल दूजो दिन अर थारी पहाड–सी ऊमर किया कटसी? पण कमला हस'र कैंवती कै पैंतीस तो आयग्या अर पाच दस साल थारी सेवा चाकरी करसू जितै खुद बूढी हुय जा सू। म्हनैं ब्याव कर'र किस्यो गाव बसावणो है।

वरदाराजन री गाडी रो ड्राईवर रहीम बख्स जात रो मुसळमान पण ना मास मिट्टी खावै अर ना पान बीडी रो सोख। टैम सू आवणो अर टैम सू जावणो। रहीम बख्स दिनूगै वरदाराजन री छोरी नैं कॉलेज छोड'र आवै अर शाम नैं पाछी लावै। कदै–कदास मेमसाब नैं बजार ले जावै–लावै।

वरदाराजन दीखण मे नारेळ दाई ऊपर सू कडो पण माय सू काकडिये दाई कवळो। कमला नैं बैन दाई राखे अर रहमान बख्स नैं बेटै दाई। साची बात है भलो आदमी तो आई जाणै म्हैं भलो जग भलो।

कमला घर री नौकराणी हुवता ई वरदाराजन अर आपरी मेमसाब नैं कई दफा कैयो ओ कलजुग है सा'ब आज रै टैम दोस्त तो काई मा बाप रो भाई–भाई रो विसवास भी नीं करणै रो बखत है फेर मरद री जात?

वरदाराजन हस'र बोल्यो "म्हैं भी तो मरद हू कमला?

कमला गम्भीर हुवता बोली "इया पाचू आगळिया बराबर नी हुवै सा'ब। बिना थम्बै आकास खडयो है फेर ई टैम देखता किणी माथै घणो भरोसो नीं करणो। म्हैं ऊपर सू किसी अर म्हारै मन मे काई मैल है थे काई जाणो? आज रै टैम हाथ नैं हाथ खावै।

वरदाराजन फेर हस्यो काई बात है कमला? आज घर मे कीसू'ई लड'र आई है? "म्हैं घर मे कीसू लडू सा'ब। सासू–सुसरा बूढा माचै मे पडिया बखत काटै। म्हैं बणा'र देऊ जिस्यो खायलै अर खावै थोडो अर आसीसा देवै घणी। बारो म्हैं नीं करू तो बानैं पाणी ई कुण पावै। मोटयार तो अधभोई मे धोको देयग्या म्हैं दो घरा रा चौका बरतण कर'र म्हारो पेट भरू।

वरदाराजन कमला री बाता सुण'र थोडो गम्भीर हुवतो बोल्यो "काई बात है कमला? आज तू रूखी–सुखी बोलै? साची बोल काई दुखडो है?

"माफी चाऊ साव म्हैं छोटै मुह बडी बात करणी तो नीं चाऊ पण।

वरदाराजन बीच मे बोल पडयो "बोल–बोल कमला तू ई घर मे नौकराणी नीं है म्हारै कुटम री अेक मेम्बर दाई है। साची बता तू कैवणो काई चावै है?

"बुरो नीं मान्या सा'ब छोटी मिस सा'ब नैं कॉलेज थे छोड आया करो। रहमान बख्स रो छोटी मिस सा'ब नैं रोज–रोज रो कॉलेज लावणो लेजावणो म्हनैं चोखो नीं लागै।

वरदाराजन हसतो बोल्यो अरे बावळी। रहमान म्हारै बेटै सू बेसी है। बो दस बरसा रो हो जणै म्हारै कन्नै रैवण लागग्यो हो।

थारो कैवणो ठीक है सा'ब पण म्हारै राजस्थानी मे कहावत है कै कुत्तो अणसेन्धै नैं खावै अर आदमी सेन्धै नैं। वरदाराजन फेर हसतो बोल्यो अरे बावळी थारै आज हुयग्यो काई बा बता?

कमला वरदाराजन नैं रोटी जीमावती–जीमावती कन्नै ई बैठगी अर

बालण लागी "सा'ब सात साल पैला री बात है। सोलकी सा ब स्कूला रै दफ्तर मे अफसर हा। आप दाई सूधा अर सीधो सुभाव। अर आप रै दाई बारै भी अेक ई बेटी पूजा। पूजा दसवीं मे पढती अर घणी स्याणी।

रतनियो सा'ब रै दफ्तर मे चपरासी। दिनूगै पूजा नैं स्कूल छोड आवै अर सिझया नै साढे चार बज्या स्कूल सू पूजा नैं पाछी लावै अर घर मे साग सब्जी भी रतनियो ई लावै। आदत रो हसोड अर सीधो। रोज रो ओ ई काम बीरो। न दफ्तर जावणो अर न आवणो। बींरो दफ्तर सोलकी सा'ब रो घर।

बी दिन रतनियो पूजा नैं दिनूगै स्कूल ले'र गयो अर सिझ्या नैं पाछो ई नीं आयो। सिझ्या री साढे पाच बजगी। सोलकी सा'ब री घरआळी सोलकी सा'ब नैं फोन करयो।

सोलकी सा'ब दोड'र घरै पूग्या फेर अस्पताळ कानी भाज्या पण रतनियै अर पूजा रो की पतो नी चाल्यो। आखिर थाणै मे रपट दर्ज कराई। सगळै सैर मे सा ब री किच–किच हुयगी। कोई हमदर्दी जतावै तो कोई मैंणा देवै कै राज रै नौकरा सू घर मे काम करावै जिका मे आई हुवणी चाइजै।

पुलिसवाळा अेक–अेक होटल अेक–अेक सिनेमा घर गळीकूचो सगळा सम्भाळ लिया पण रतनियो काई ठा किस्ये बिल मे जा'र बडयो कीं पतो नीं चाल्यो।

नूवैं दिन नूवी बात सगळा रो'र वैठग्या। सोलकी सा'ब मूढो लटकाया पाछा दफ्तर जावण लागग्या। बारी घरआळी भी थोडी–थोडी जीमण लागी पण आख्या रा आसू कद सूखै। मर जावै तो आदमी तसल्ली कर'र ई बैठ जावै पण ई हालत मे आदमी नैं चैन कद आवै।

बीं दिन सोलकी सा'ब री घरआळी दूब मे बैठी तावडो सेक री ही कै राजस्थानी घाघरो–ओढणी ओढोडी अेक बीनणी बगलै मे बडी अर सोलकी सा'ब री घरआळी रै पगै लागी। सोलकी सा'ब री घरआळी छोरी नैं देखी तो ई आपरी बेटी नैं पिछाणी कोनी इतै मे रतनियो माय बड'र सासू रै पगै लाग्यो। सोलकी सा'ब री घरआळी जोर सू चिल्लाई "रतनिया पूजा कठै? रतनियो मुळक'र पूजा कानी इसारो करयो। पूजा नैं बा कपडा मे देख'र सोलकी सा'ब री घरआळी आप री छोरी नैं ठोकण लागी।

रतनियो बीच में पडतो बोल्यो "म्हे देशनोक करणी माता रै मिंदर मे

ब्याव कर लियो पूजा म्हारी लुगाई है। अबै ईनै ठोकण रो थानै कोई हक कोनी। सोलकी सा'ब री घरआळी दौड'र सा'ब नैं फोन करयो। दो ई मिट मे सोलकी सा'ब पुलिस नैं सागै ले'र घरै पूगग्या पण आपरी बेटी रै माथै मे सिन्दूर अर बै रगीला कपडा देख'र पृजा नैं देखता ई रैयग्या। काई बोलीज्यो तक कोनी। एस पी सा'ब रतनियै रै दो काना मे दे'र आपरी गाडी मे बैठा'र थाणै लेयग्या।

उणी दिन सोलकी सा'ब री छाती मे अेकाअेक दर्द हुयो अर डाक्टर रै आवण सू पैला ई बा दम तोड दियो। पूजा सरमा मरती ऊपरलै कमरै में गई अर पखै सू लटकगी। जोग री बात दूसरै दिन घर रै लारै सू घर मे चोर बडग्या अर घर मे कीं नीं छोडयो।

बीच मे ई वरदाराजन री लुगाई बोलगी कै सोलकी सा'ब री घरआळी .. ? कमला जोर-जोर सू रोवण ढूकगी अर रोवती-रोवती बोली "बा अभागण म्हैं ई हू मेमसा'ब। कमला रै मूढै आ बात सुणता वरदाराजन री लुगाई खुद रोवण लागगी अर कमला नैं आपरी छाती रै चेपली। वरदाराजन री आख्या ई भरीजगी अर थाळी आगै सिरकार आपरै दफ्तर चल्यो गयो।

वरदाराजन री लुगाई कमला नैं तसल्ली दिराई अर दौरी-सौरी रोटी जीमा'र घरै भेजी। सिझ्या उदास मूढो लिया वरदाराजन घरै पूग्यो तो पतो चाल्यो कै हालता ई माला आज कॉलेज सू पाछी नी आई।

वरदाराजन दौड'र माला री कॉलेज फोन करयो पतो चाल्यो कै माला आज कॉलेज पूगी ई कोनी। इत्तो सुणता ई वरदाराजन री घरआळी बेहोस हुय'र जमीन माथै पडगी। वरदाराजन पुलिस नैं फोन करयो पण दिनूगै रो भाजोडो आदमी सौरै सास पुलिस रै हाथ कद आवै? पुलिस आपरी कानी सू रहमान अर माला नैं सोधण मे कीं कमी नीं राखी पण काई पार नीं पडी।

वरदाराजन नैं अपने आप माथै घणो ई गुस्सो आयो पण चौखै-बुरै आदमी री खाल थोडी ई बासै। पाच महीना बाद पुलिस इन्दौर सू रहमान अर माला नैं पकड'र लाई अर दोना नैं अदालत मे पेस करया पण वरदाराजन साफ कै दियो कै माला पैदा होता'ई मरगी। म्हारो माला सू कीं लेण-देण कोनी। अदालत अेकतरफा कारवाई कर'र माला री सगळी जिम्मेदारी रहमान माथै राख'र बीनैं पाबद कर दियो।

रहमान कन्नै पाच टका हा जितै तो बो पुलिस रै हाथ नीं आयो पण

अबै वो खावै काई अर इस्यै दोगलै आदमी नैं अबै नौकरी माथै ई कुण राखै। भूखा मरतो रहमान अेक गावडी लायो अर वीरो दूध वेच'र दौरो सौरो आपरो पेट भरण लाग्यो। दो चार साला मे पाच पईसा बापरता'ई रहमान घर रै माय मुरगीखानो खोल लियो फेर अेक भाडै री जीप चलावण लागग्यो।

माला नैं मुमताज बणाया रहमान नैं अठारा बरस हुयग्या पण रहमान रै टाबर–टीगर कीं नीं हुया। रहमान जवानी मे ई बूढो दीखण लागग्यो पण टाबर–टूबर नीं हुया मुमताज थोडी जवान दीखती।

पाच दिना रो भाडो ले'र रहमान चडीगढ चल्यो गयो। छठै दिन पाछो आयो तो रहमान रै घरै ताळो। रहमान भींत कूद'र घर मे बडयो तो घर मे मरोडै जानवरा री वास आई।

पाडोस्या नैं पूछया बेरौ चाल्यो कै मुमताज डागर–डाक्टर अखतर हुसैन रै सागै निकाह पढ लियो।

घर मे गाया अर मुरगीखानो खोल्या पछै डागर–डाक्टर अखतर रहमान रै घर में घणा आवण–जावण लागग्यो अर मुमताज नैं धीरै–धीरै पूरी आपरै वस मे कर ली अर मौको लाधताई बो मुमताज सागे निकाह पढ लियो।

पाडोस्या रै कैवता'ई रहमान रै सगळी कहाणी समझ मे आयगी अर बो सीधो थाणै भाज्यो। थाणै मे सरदार भजन सिह रहमान नैं देखताई पिछाणग्यो अर सगळी कहाणी सुण'र रिपोर्ट तो लिखली पण घाव माथै लूण छिडक दियो कै खा साब आज सू अठारा बरस पैला थे भी तो अेक भलै माणस रो काळजो काढ'र भाज्या हा।

रहमान आपरो मूढो ले'र डाक्टर अखतर रै घरै पूगग्यो पण डाक्टर अखतर रै घर आगै बडो सारो ताळो लाग्योडो देख्यो।

डागर–डाक्टर अखतर रै दूजो निकाह करण सू बीरै घर मे ई महाभारत छिडग्यो अर अखतर री घरआळी रसीदा आपरै तीनू टाबरा नैं लेय'र आपरै पी'र सुजानगढ चली गई।

रसीदा रो बाप आ बात सुणता'ई आपै सू बारै हुयग्यो अर अेक करोडपति तैली रै साथै तीनू टाबरा रै सागै ई रसीदा री निकाह करादी अर तैली उण ई दिन रसीदा नैं ले'र कलकत्तै चलो गयो।

डाक्टर अखतर रसीदा रै निकाह रो सुण'र आपरै टाबरा नैं लेवण नैं सुजानगढ भाज्यो पण रसीदा रो बाप टाबर तो काई डाक्टर अखतर नैं

धक्का मार'र घर सू बारै काढ दियो। डाक्टर अखतर आपरो मूढो लटकाया पाछो सै'र आयग्यो अर कोर्ट मे जावण री सोच्यो अर सोचता–सोचता ई डाक्टर अखतर रै माथै री नाड फाटगी अर तीजै दिन ई बो चालतो रैयो।

मुमताज आफत मे पडगी पण अबै बा जावै कठै? फेर मूढो नीचो करया मुमताज पाछी रहमान रै अठै पूगी। पण बठै जाया बेरो चाल्यो कै रह्मान बीं दिन ही नींद री गोळया खा'र गहरी नींद सोयग्यो।

आज वरदाराजन रिटायर हुय'र आपरै घरै आ रैयो हो। कमला – वरदाराजन खातर फूल माळा लेवण नैं घर सू निकळी अर अेक गळी री मोड माथै अेक लुगाई नैं बेहोश पडी देखी अर मिनखपणै रै नातै 'कमल' बीनैं सम्भाळी अर कमला रै मूढै सू चीख निकळगी। आपरी मिस सा'ब नैं देख'र कमला माला नैं झट आपरी गोदी मे लेली अर टैक्सी कर'र माला नैं लेय'र वरदाराजन रै घरै पूगगी। कमला रै सागै अेक भिखारण नैं देख'र वरदाराजन उतावळो बोल्यो "कमला तू माला लेवण नैं गई ही आ सागै कीनैं ले'र आई है?

कमला गळगळी अर रोवती बोली "हा सा'ब म्हैं माळा लेवण नैं गई अर माला ले'र ई आई हू। अै आपा रा माला मिस सा'ब है।

कमला रै मूढै सू इत्तो सुणता'ई वरदाराजन री घरआळी आपरी बेटी नैं झट पिछाणगी अर झपटती–सी आपरी छाती रै चेप ली अर टाबर दाई जोर–जोर सू कूकण लागगी।

माला रो सगळो शरीर ताव सू बळर्‍यो हो। वरदाराजन री लुगाई रोवती बोली "खडा–खडा काई देखो हो? बेगासी'क किणी डाक्टर नैं फोन करो।" वरदाराजन दौड'र डाक्टर नैं फोन कर्‍यो अर माला नैं गोदी मे लेली। राजन री आख्या सू आसुवा री बाढ चालू हुयगी। वरदाराजन बेटी नैं सीनै सू लगावतो बोल्यो मोनू मोनू बेटा आख्या खोल - म्हैं थारो डैडी।

वरदाराजन री घरआळी माला नैं चचेडती बोली "मोनू बेटी आख्या खोल बेटी। कमला भी दो–तीन वार बोली माला मिस सा'ब। माला धीरै–धीरै आख्या खोली अर अठीनै–बठीनै देख्यो अर पाछी हमेशा खातर आख्या बद कर ली। वरदाराजन हिन्दू रीति–रिवाज सू आपरी बेटी रो दाह सस्कार कर'र सवा महीनै रै बाद कमला अर आपरी घरआळी नैं सागै ले'र मद्रास चल्यो गयो।

OO

# कुड़की

हजारीराम नौकरी सू रिटायर हुवताई पैला आपरी छोरी तुळछी रो ब्याव कर फारिग हुयग्यो। रिटायर हुवताई हजारीराम री लुगाई फेर हजारीराम रा कान खावण लागगी कै म्हैं बूढी सारी घर मे अेकली कद ताईं मरती रैसू? घर मे मोटयार जवान छोरो कुवारो बैठो है। बीनैं परणावणो कोनी कवारो राखणो है?

हजारीराम लुगाई रै रोळा करण सू डरतो पग मे पगरखी पाछी घाल ली अर ग्रहण मे डाकोत घूमै ज्यू पाछो छोरै रै खातर छोरी सारू भटकणो सरू कर दियो। पण सस्कार बिना सगपण कठै पडया है?

*थक-हार'र हजारीराम लुगाई नैं समझावतो बोल्यो कै इया टींगरा* दाई ऊतावळ मत कर। थोडो खटाव राख। इया लाळया टपक्या टाबर हाथ नी लागै। अणपढ अर ठोठ टींगर भी किस्या कवारा रैवै। थारो छोरो तो सोळै पास है अर रेल मे नौकर न्यारो। थोडो ढग रो टाबर निजर आवता ई म्हैं टाबर नैं रोक लेस्यू।

लुगाई नैं समझा'र हजारीराम अेकर तो नचींता हुय'र बैठग्यो। पण दूजै ई दिन अखबार मे सुमन नाव री छोरी रो बीअे मे पैलो नम्बर आवणै सू फोटू छप्यो हो। गाव रो अत्तो-पत्तो पूछ'र हजारीराम छोरी रै गाव पूगग्यो।

सुमन जात री बामणी अर वैद गोरीशकर री अेकली छोरी ही। गाव मे वैद गौरीशकर री चोखी साख ही। वैदजी सरपच रो चुनाव तो नीं लडया पण गाव मे चौधर वैदजी री चालती। माडी मोटी राड वैदजी गाव मे बैठ'र निपटा देवता अर बेमतलब किणी नैं ई कोर्ट-कचेडी नीं चढण देंवता।

गाव सैं'र सू नेडो नीं तो घणो अळघो ई नीं हो। पण थोडो आथूणो अर थोडो'क गेलो कच्चो हुया लोगा रो गाव मे आवणो-जावणो घणो नीं हो। गाव रा घणासीक लोग दिसावर रैंवता अर ब्याव-स्याव ई

गाव आवता–जावता पण आवता जणै गाव खातर की न की कर ई जावता। ई खातर छोटो गाव हुया पछै भी गाव मे खावण–पीवण लाईट–पाणी री कीं दिक्कत नीं ही।

पढण–लिखण रै मामलै मे ई गाव मे अेक ई मिनख लुगाई अणपढ नीं हो। ई खातर माडी–मोटी बात खातर गावआळा फट भेळा हुय'र सै'र पूग जावता।

थोडै दिना पैली सरकार कानी सू पाच साल सू छोटै टींगरा नैं पोलियै री खुराख पावण रो अभियाण सुरु हुयो पण अे गाव मे की भी टावर नै दवा पावण री जरूरत नीं पडी क्यूकै गाव मे नानै टावरा री गिणती भौत कम ही अर सगळो गाव परिवार कल्याण रै कार्यक्रम सू जुडयोडो हो। अणपढ होवै या फेर पढयोडो किणी भी घर मे दो तीन टावरा सू घणा टावर नीं हा।

अर टावरा री ऊमर देखता टेम–टेम सू किसी दवा कीनैं पावणी है वैदजी सगळी बाता रो वेरो राखता। इया स्वास्थ्य केन्द्र री रुखमणी वाई होशियार अर भली नर्स ही। रुखमणी बाई रो कैवणो कोई मिनख लुगाई नीं टाळतो क्यूकै रुखमणी वाई रै मोटियार री फौज मे मौत हुया पछै बा आपरो पीरो–सासरो गाव नैं ई बणाय लियो। ना कठैई आवणो अर ना कठैई जावणो।

अस्पताळ सू टेम मिल जावै तो स्कूल जाय'र टाबरा नैं पढावणो। ई खातर काई छोटा अर काई मोटा रुखमणी बाई नैं सगळा बाईसा कैय'र वतळावता।

वैदजी अर रुखमणी बाई री मेहनत रै ताण लारलै साल गाव नैं "आदर्श गाव" रो दरजो मिल्यो अर मुख्यमत्री खुद गाव पधारया।

स्कूल स्कूल मे पेड पौधा स्कूल रो खेल रो मैदान पचायत भवन अस्पताळ पटवार भवन धरमसाळा अर मिदर सब गावआळा रै चन्दै सू वणायोडा हा। गाव री आवादी सू घणा गाव मे पेड देख'र मुख्यमत्री जी नैं पूछणो ई पडयो कै सगळी जाग्या लोग लाईट–पाणी खातर रोळा करै पण थे इत्तो पैडा नैं पाणी कठै सू पावो हो?

वैदजी रै कैवणै सू गाव रा अेक मास्टरजी बोल्या कै म्हारै बडेरा रो औ नियम बणायोडो है कै चावै कोई गाव मे कच्चो झूपडो'ई मान्डो बीनै पाणी रो कुण्ड पैला वणावणो पडसी। ई रै अलावा म्हैं गावआळा पाणी री अेक छाट बेकार नीं जावण देवा। काम मे आयोडै पाणी नैं म्हे पोठा थापण

अर पौधा अर दरखता मे देवण रै काम मे ले लेवा।

मास्टर रै चुप रैवता ई मुख्यमंत्री जी खुद ताळी बजाई अर थोडा मुळक्या अर गाव री सडक नैं सै'र ताई पक्की करण अर आठवी ताई री स्कूल नैं दसवी ताई बधावण रो ऑर्डर देयग्या।

वीं दिन पछै वैदजी री पावली गाव में पाच आना मे चालण लागगी पण वैदजी गाव रै भलै रै अलावा कदैई कोई अैरो-गैरो काम नीं करयो।

गाव रै चौगान मे बैठा वैदजी गावआळा सू हथाई करण लाग रैया हा कै हजारीराम वैद गौरीशकर जी नैं ई बारै घर रो ठिकाणो पूछयो। गौरीशकरजी मुळकता उठता बोल्या "चालोसा म्हैं थानै वैदजी रो घर बताऊ। हजारीराम नैं आपरै घर री बाखळ मे बैठा'र बोल्या आप विराजो म्हैं वैदजी नैं बुलाऊ।

थोडी देर मे हजारीराम रै हाथ मे पाणी रो लोटो झलावता बोल्या "हुकम करो म्हारो ई नाव गौरीशकर है।

हजारीराम आपरो सगळो अतो-पतो बता'र आपरै छोरै खातर गौरीशकरजी री छोरी रो हाथ माग्यो।

गौरीशकरजी साफ बोल्या "देखो हजारीरामजी। म्हैं इण गाव मे वेदगिरी कर'र म्हारो पेट पाळू हू। सुमन बिना मा री म्हारी अेकली छोरी है। ई छोरी रै अलावा म्हारै कन्नै ना तो टको है अर ना पईसो। अर आजकाल लोग टाबर नीं देखै धन देखै अर बौ म्हारै कन्नै है कोनी।

हजारीराम दोनू हाथ जोडतो बोल्यो "इया है गौरीशकरजी म्हैं बा लालची मिनखा मायलो मिनख कोनी। म्हनैं खाली कु- कु कन्या ई चाइजै। म्हैं जान मे इक्कीस आदमी ले'र आवूलो। थे म्हानैं दाळ-रोटी जीमाय'र सीख दिरा दिज्यो। बी सू पैली थे अेक बार सै'र पधार'र म्हारै बारै मे पूछताछ कर म्हारो घर बार भी देख लो। जै थारो जी धापै तो

गौरीशकर बीच मे बोल पडयो "देखो हजारीरामजी आदमी री पैचाण तो दो बात सू हुय जावै अर कुचमादी नैं कूवै मे नाख दो बो बठै भी सचलो नी रैवै। ई खातर म्हनैं रिस्तो मन्जूर है। थारै जचै जणा जान ले'र पधार जाया। म्हैं हाजरी मे त्यार खडो लाध सू।

सुमन चाय ले'र आई हजारीराम रै पगा लागी। हजारीराम काई बात करै बी सू? पैला'ई सुमन सरमा'र माय भाजगी। क्यूकै गौरीशकर बारै आवता "सुमन नैं कैय'र आया कै हजारीरामजी आपरै छोरै खातर तन्नै देखण नैं आया है।

बख्त जावता काई टैम लागै। देवउठणी इग्यारस नै हजारीराम जान लै'र गाव पूगग्या। वादै रै मुताबिक जान मे बीन समेत इक्कीस आदमी अर मा'डी सगळो गाव। अबै खातरदारी मे काई री कमी आवणी ही?

वैदजी रै अेक ई छोरी वैदजी रै फेर किस्यो काम पडणो हो? ई खातर जान नैं बो जीमा'र औ जीमावै। जान नैं इग्यारवैं दिन सीख दी।

सै'र आया पछै कुटमआळा नूवीं बीदणी नैं देखै अर मोकळा थुथकारा नाखै कै भाईडा बहू काई लायो है सुरग सू परी लायो है पण सुमन री सासू नख चढावती बोली *चाटा काई परी नैं? आजकाल मजूर कारीगर* भी रगीन टी वी कूलर फ्रीज ले'र आवै। म्हारो छोरो सोले किलास पढयोडो अर रेल रो नौकर न्यारो। देवण नैं तो धूड उडगी। अेक सू अेक सगपण आया पण अै काई ठा कठै जाय'र ढूक्या है।

सुमन पैलै दिन ई आपरी सासू रै मूढै सू मैणा सुण'र सोच मे पडगी कै जै बाबूसा नैं ई बात री थोडी भणक ई पडगी तो बारो बुढापो बिगड जायसी।

हजारीराम रो छोरो धनियो दिनूगै घर सू निकळै अर रात रो मोडो दफ्तर सू आवै। अेक दिन सुमन थोडी हिम्मत कर'र खसम नैं दफ्तर सू बेगो आवण रो कैय दियो। धनियो गळै पडतो बोल्यो "बेगा आ जाया क्यू? दफ्तर नैडोई है? फेर इत्तो ई बेगो बुलावणो है तो बाप नैं कैयर स्कूटर दिरवादै।

बिनै छोटो–मोटो तिवार आवै तो सासू मोसा मारै कै भोळै बामण भेड खाई भळै खावै तो राम दुहाई।

आदमी कूट खायोडी तो मोडी बेगी भूल जावे पण रोज–रोज रा मैणा किण सू सुणीजै।

सुमन रै सासरै मे पग धरताई सासू छींकै मे टागडो घाल लियो। थाळी पुरस देवो अैंठी थाळ्या उठावो। खसम रा नखरा न्यारा कपडा रै इस्त्री करो खल्ला रै पालिस करो मोडी सोवो बेगी उठो।

सुमन री दसा देख'र हजारीराम भौत दुखी हुयग्यो। मन ई मन मे घणो ई घुटीजै पण बेटै अर लुगाई आगै जोर नी चालै।

जीया ई हजारीराम नैं बैरो पडयो कै सुमन दो जीया सू है झट गौरीशकर जी नैं कागद घाल दियो अर दूजै दिन ई गौरीशकर जी सै'र आय'र सुमन नैं जापै खातर गाव लेयग्या।

सुमन रै गाव जावता ई डाकियो अेक बिल्टी हजारीराम रै अटै देग्यो।

धनियो बिल्टी छुडा लायो। रगीन टीवी फ्रीज कूलर स्कूटर वासिग मशीन घर मे आवताई मा बेटो फूल्या नी समावै। धनियो अकड'र बोल्यो "क्यू मा? म्हैं कैयो नी सीधी आगळी घी नीं निकळै। हजारीराम री लुगाई बीच मे बोलगी क्यूजी अबै वैरे बाप कन्नै पईसा कठे सू आयग्या?

दस बीस दिन आडा घाल'र डाकियो अेक बिल्टी और देयग्यो अर सगळो घर फर्नीचर सू भरीजग्यो।

हजारीराम नैं घर मे बडतो देख'र धनियो हसतो बोल्यो "बाबूजी स्कूटर रो रग कित्तो बढिया है। हजारीराम आपरै कमरे मे बडतो बोल्यो "म्हारा सगळा रग देखोडा है बेटा थारा रग देखणा हा बै रग ई था देखा दिया। आजकाल स्कूटर रा ई तीस–तीस हजार लागण लागग्या। ई खातर रग तो चोखो होवणो ई है । हजारीराम रै चुप हुवताई हजारीराम री लुगाई बोलगी "तीस हजार लाग्या है तो बठै किस्यी भूख है? सुणी है बाप गाव मे अेकलो वैद है अर मलेरिया री रुत मे लाखू रिपिया कमावै।

स्कूटर फ्रीज कूलर पखा घर मे आया पछै मा–बेटै मे सागीडी नरमी बापरगी। अबै हजारीराम री लुगाई आया गया रै सामी बहू री बडाया करती नीं धापै।

तीसरै महीनैं गाव सू गोरीशकर जी रो कागद आयग्यो कै हजारीराम जी दादा बणग्या।

पोतै री खबर सुण'र हजारीराम री लुगाई आया गया अर कुटम आळा नैं गुड अर बधाया बाटी अर बजा–बजा'र तीन कासी री थाळया फोड नाखी।

सुमन रै घरै आवता ई सासू पोतै सू घणा लाड बहू रा करै।

बहू झाडू काढै तो सासू हाथ माय सू झाडू खोसती बोलै औ काई करो हो बहूराणी हाल तो छोरो सवा महीनै रो ई नीं हुयो। अबार सू काम मे लाग जासो तो बुढापै मे कमर अर हाडका दूखसी। कामकाज हुवता रैसी। थे तो थारी पढाई मे लागो। इमत्यान ऊपर आयग्या।

छोरो जलम्या पछै – सासू अर खसम मे इत्तो बदळाव देख'र सुमन री समझ मे कीं नीं आयो। काल ता'ई खाया नीं घापता अर अबै इत्ता–इत्ता लाड कोड। छोरो जण'र इस्यो काई धनकनामो कर दियो म्है?

धनियो सुमन नै मुळकतो पूछै "गाव मे बाबूसा और सगळा तगडा है? सुमन सोच्यो मा–बेटा कोई नाटक करै है या दोना मे भूत बडग्यो?

सुमन रै सासरै आया पछै डाकियो अेक दीवडी और देयग्यो। गा

बेटा छूछक रो सामान देख'र आगणे मे चौडा हुय'र बैठग्या। धनियै रै गळै मे भारी–भारी सोनै री साकळ। सासू रै ढेर सारा कपडा अर पगा मे भारी–भारी चादी री पायल अर हाथ मे सोनै री बीन्टी देख'र सुमन री सासू सुमन रै आगै अपणायत जतावती बोली थारे बाबूसा नें अबार रो अबार कागद लिखो कै इत्तो खरचो अबार करण री काई जरूत ही? थारे बाबूसा नैं साफ लिख दिया के दिया–लिया डूम राजी हुवै। इया सगो मारण नैं थोडो ई हुवै। म्हे भी बाल–बच्याआळा हा। म्हानैं भी भगवान नैं जी देवणो है।

इत्तो सारो छूछक आया पछै सुमन खुद सोच मे पडगी कै बाबूसा नैं इत्तो सगळो अडगो करणो ई हो तो म्हारे ब्याव माथै करता ताकि इत्ता दिन म्हारा हाडका तो नीं भागीजता। फेर सुमन सोच्यो बाबूसा इत्ता पईसा लाया कठै सू?

दूजै दिन डाकियो हजारीराम री लुगाई नै अेक कागद देग्यो अर ध ानियै रै दफ्तर सू आवता ई धनियै री मा धनियै नैं अेक खाकी लिफाफो झलावती बोली "देख बेटा सगोसा फेर काई भेज दियो?

धनियो कागद पढ'र मा माथै चिडतो बोल्यो थारो माथो? आ बिल्टी कोनी कोर्ट सू कुडकी आई है।

"कुडकी? आ अठै क्यू बळी है।

धनियो जोर सू बोल्यो "अगलै महीनै री पाच तारीख नैं आपा रै घर री बोली लागसी। औ घर बाबूसा रै केई रै अठै अडाणै राख्योडो है। पण थारै बाबूजी घर अडाणै क्यू राख्यो? आनै पईसो क्यू चाइज्यो हो?

स्कूटर रगीन टी.वी कुलर फ्रीज बो इत्ता सारा फर्नीचर अर गळै में सोनै री साकळा अै सोनै री बींटया अर चादी री पायला तू पै'री कठै सू है? धनियो बिगडतो बोल्यो औ सामान म्हारो सुसरै भेज्यो है या म्हारै बाप पूछ बाबूजी सू?

धनियै री मा आपरै खमस रै गळै पडती बोली थे बोलो कोनी? चुप क्यू हो? थे इत्तै पईसै रो करयो काई?

बीं टैम ई गौरीशकरजी घर मे बडता बोल्या ओ थाने म्हैं बताउ सगीसा क्यू हजारीराम जी म्हैं थानैं केयो हो नी कै आजकालै लोग टाबर नी देखै। पईसो देखे। धन देखै।

हजारीराम आपरा दोनू हाथ जोडतो बोल्यो "गोरीशकरजी म्हैं ना तो पईसो देख्यो अर ना टको। म्हैं तो सुमन बेटी नैं ई देखी।

म्हैं बीस साल साथै रैय'र म्हारी लुगाई अर म्हारै छोरै नैं नी पिछाण सक्यो। ई खातर म्हनैं म्हारो घर अडाणै राखणो पडग्यो। घर अडाणै राख'र आ लोभी लोगा रा मूढा वद नीं करतो तो अै सुमन बेटी नैं ताना मार मार'र कदेई रा मार नाखता या मोडी–वेगी सुमन खुद मर जावती।

गोरीशकर हजारीराम रै पगा मे पडतो बोल्यो धन्य हो थे। आपरी छोरी नैं तो सगळा मा–बाप धन दायजो देवै पण थे थाणी बहू नैं दायजो देय'र म्हारी छोरी रा प्राण बचाया है। म्हैं आपरो औ अहसान कदैई नीं भूलू।

गौरीशकर आपरी जेब सू अेक डायरी निकाळ'र हजारीराम नैं झलावता बोल्या "सुमन जलमी जणा म्हैं पच्चास हजार रिपिया सुमन रै ब्याव खातर जमा करवाया हा। शायद अबै तो आ रकम दस गुणी हुयगी हुयसी। ई रकम सू आपरै मकान री कुडकी होवण री नौबत नीं आवै अर अेक बात ओर हे था जिस्या मिनख समाज म हुवे तो दस री छोरया ना तो कदैई स्टोव फाटण सू मरै अर ना ई फासी खाय'र मरै।"

इत्तो सुणता'ई धनियै री मा सुमन नैं छाती रै लगा'र जोर सू कूकण लागगी अर धनियो ई गौरीशकर जी रै पगा मे पड'र रोवण ढूकग्यो कै बाबूसा म्हनैं माफ कर दो म्हैं दायजै रै लालच मे आय'र म्हारै देवता तुल्य बाबूजी री आत्मा दुखाई।

गोरीशकर आपरी आख्या पूछी अर धनियै रै माथे माथै हाथ फेर'र घर सू बारै निकळग्यो।

OO

# थे कांई करता?

डाक्टर जुगल आपरै कुटमआळा रै साथै वैठो रोटी जीमरैयो अर कन्नै वैठी जुगल री वैन भवरी बोली भैया जै म्हैं पीएमटी मे पास हुयगी तो थे म्हनैं काई ईनाम देसो?

"सरप्राईज! डाक्टर जुगल हसतो बोल्यो "म्हैं थारै खातर अेक भोत ई फूठरै छोरै री निगै करली है।

"म्हैं थासू कदैई वात नीं करू। भवरी मुळक'र जीमती–जीमती माय कानी भाजगी।

"छोरो कुण है बेटा? अर काई धन्धो करै? अरे मा भवरी हाल डाक्टरी पढसी अर पढाई पूरी करता–करता वा आपरो जीवनसाथी खुद ई सोध लेसी। बीच मे ई जुगल रो बाप बोल्यो "बात तो सोळै आना साची कैई बटा आजकाल रा टींगर आपरा रिस्ता खुद ई तै करण लागग्या।

जुगल री मा विदकती बोली "जे वा कोइ इस्यी–बिस्यी जात रो छोरो पसद कर लियो तो?

"तो काई हुयो आपा रो जुगल ई दूजी जात री छोरी ले'र आयो है। क्यू कोई खोट है बीनणी मे? बीनणी रो भाई सै'र म एसपी लागोडो है अर बीनणी एमए ताई भण्योडी है। नौकरी करती तो जुगल रै बरावर कमार लावती।

चाटा काई कमाई नैं? बीनणी जात री बामणी है तोई लोगा थोडा मैणा दिया? म्हैं किण–किण री जुबान बन्द करती?

अरे तू म्हनैं कदैई प्रधानमत्री बणन दै। लोगा री जुबान तो म्हैं बद कर सू। देस रो इस्यो कानून बणा सू कै भारत मे जलम्या पैला भारतवासी है ई खातर कोई भी आदमी आपरै नाव रे आगै लारै जात नी लगावैला"। जुगल रो वाप चुप रैंवता ई जुगल री मा झट बोली अेक छोटी सी मास्टरी सू हेडमास्टर ता वणा था काी अर प्रधानमत्री वणनैरा सुपना

देख रैया हो? बाई म्हारा बाबूसा भाग दौड नीं करता तो आ मास्टरी ई कठै ही?

अबै तू घणी लाड मे मत आ। अेक ऊंधै हाथ री लागगी तो कूकती भूडी लागसी।

मरग्या मारणआळा–हाथ लगा'र ठा करो। जुगल री मा जीमती–जीमती मूढो सुजा'र उठ'र आपरै कमरै मे बडगी अर लारै–लारै जुगल रो बाप ई उठग्यो।

डा जुगल री घरआळी जुगल रै गळै पडती बोली था आज मारुति काई लेली जाणै आभो मोल ले लियो।

जुगल बोल्यो "क्यू काई हुयग्यो? मारुति री तो कोई बात ई नीं चाली। मासा अर बाबूसा आज दस दिना सू तो राजी हुया अर आपस में बोलण लाग्या हा अर था बानै पाछा लडा दिया।

"म्हैं काई लडा दिया? मासा अर बाबूसा दिन मे दस बार लडै अर बीस बार राजी हुवै। बोलता–बोलता जुगल पेट झाल'र जोर सू पेट दुखण रो नाटक करण लागग्यो। कन्नै ई खडी जुगल री लुगाई अेकाअेक डरगी अर आपरी नणद नैं जोर सू हेलो मारयो। लिछमी रै हेलै रै साथै ई जुगल री बैन रै साथै–साथै जुगल रा मा–बाप ई भेळा हुयग्या।

जुगल री मा जुगल रै नेडी भिडती बोली "काई बात है बेटा? जुगल रो बाप ई दौड'र डाक्टर अमरनाथ नैं फोन करण लाग्यो।

इया सगळा नैं हाउ जू जू हुवता देख'र जुगल नीचो मूढो कर'र जोर सू हसण लागग्यो।

जुगल नैं इया हसतो देख'र जुगल री मा बिगडती बोली "बाळणजोगा तू इत्तो बडो टोगडो हुयग्यो अर बूढी मा सू मसखरी करै? अर थोडी ताळ मे सगळा रा सगळा पाछा हसण ढूकग्या अर उण बखत ई बारै री घन्टी बाजी।

डाक्टर जुगल री घरआळी बारणो खोल्यो अर बारणो खोलता'ई मूढै रै ढाटो बाध्योडो अेक आदमी घर मे घुसग्यो अर लिछमी नैं झाल'र जोर सू चीखतो बोल्यो "कोई आपरी जाग्या सू थोडो ई हिलग्यो तो म्हैं गोळी मार देस्यू। अर सगळा नैं अेक कमरै मे बद कर'र लिछमी नैं लेय'र घर सू बारै निकळग्यो।

जुगल री मा बेहोश हुय'र जमीन माथै पडगी अर घर मे रोवणा कूकणो मचग्यो।

डाक्टर जुगल दौड'र एस पी अशोक सिंगल नैं फोन करयो। सै'र रा एस पी डाक्टर रो सागी साळो हा। इतला मिलतां'ई पुलिस री पाच-सात गाडया जुगल रै घर रै आगै आ'र रुकगी।

जुगल रै मूढै सगळी बात सुणतां'ई अेकर तो एस पी री आख्या रै आडो अन्धारो छायग्यो फेर वायरलैस सू सगळै सै'र री नाकाबन्दी करवा दी अर देखता ई देखता पुलिस रा आदमी सै'र रो चप्पो-चप्पो छाण नाख्यो।

शिकारी कुता नैं ई च्यारू कानी दौडाया पण लिछमी रो कठै ई कोई सुराग हाथ नीं लाग्यो।

इत्तै बडै पुलिस अफसर री बैन नैं इया दिन धोळै उठा'र ले जावणो एस पी रै खातर मरणै सू बैसी हुयग्यो।

पुलिस रो पूरो महकमो परेशान होग्यो कै आखिर बदमास एस पी री बैन नैं ई क्यू उठाई जद के डाक्टर रो कैवणो है कै सै'र में बीरो कोई दुसमण कोनी।

नूवीं बात नौ दिन। अबै छोटा-मोटा अखबारआळा भी लिछमी रै बारै मे छापणो बन्द कर दियो। दिन महीना मे अर महीना बरसा मे बीतग्या।

अबै अशोक सिंगल भी चोखी तरै समझग्यो कै बींरी बैन री गुण्डा हित्या कर'र लाश नैं नदी-नाळै मे फैंक दी। नीं तो अबार ताई पुलिस रै नीं चावता ई लिछमी री लाश कठै'ई न कठै लाध जावती। सात साल री पूरी भागादौडी रै पछै न चावतो ई एस पी आपरी हार मान'र उदास हु'र बैठग्यो अर डाक्टर जुगल नैं दूजो ब्याव करण री सलाह दे दी।

लिछमी रै गुम हुया पछै सगळै घर रो कामकाज जुगल री बैन भवरी माथै आ पडयो अर भवरी दो बार पी एम टी म फल हुयगी।

जुगल री मा जुगल नैं साफ कैय दियो कै बो दूजो ब्याव करलै या आपरै टीगरा नैं ले'र दूजो मकान ले लेवै।

मेजर मानसिंग री बैन नीतासिंह डा जुगल नैं कुवारै थकाई भौत चावती पण जुगल रो ब्याव एस पी अशोक सिंगल री बैन सू हुया पछै नीतासिंह तै कर लियो कै बा जिन्दगी में दूजै कोई सू भी ब्याव नी करै अर अेक प्राइवेट कॉलेज मे लैक्चरार री नौकरी करली अर डा जुगल नैं हमेसा खातर भूलगी पण जुगल रै साथै अणहूणी घटना अर मेजर भाई रै बार-बार समझावण रै कारण नीतासिंह डा जुगल सू ब्याव करण नैं पाछी राजी हुयगी।

डाक्टर जुगल दूजै ब्याव री कोई नैं खबर नीं करी फेर ई ब्याव आळै दिन जुगल रो सगळो घर पावणा अर रिस्तेदारा सू भरीजग्यो।

घर रा सगळा जणा जान नैं रवाना करणे री त्यारी मे लाग रैया कै उण टैम ई दरवाजै री घण्टी बाजी।

जुगल री बैन भवरी दौड'र बारणो खोलण गई अर बारणो खोलताई भवरी रै मूढै सू अेक जोर री चीख निकळगी। भवरी री चीख सुण'र सगळा घरआळा बारै कानी भाज्या अर बारणै आगे डा जुगल री घरआळी लिछमी नैं खडी देख'र सगळा रा मूढा खुला रा खुला ई रैयग्या अर अेक बारगी तो घर मे पाछो मातम–सो छायग्यो।

खासी देर पछै भवरी हिम्मत कर'र बोली "माय आवो भोजाई सा बारै ई क्यू खडा रैग्या? भवरी रै चुप रैवता'ई जुगल री मा गरजती बोली काई करसी माय आय'र? इत्ता दिन कठै ही आ माय आवणआळी?

लिछमी आपरी सासू रै पगा मे झुकती बोली "ओ थे काई कैय रैया हो मा सा? म्हैं थारी बहू हू लिछमी।

"मरगी म्हारी लिछमी। खबरदार म्हारे घर मे पग मेल्यो। रस्तै मे नदी–नाळा घणा ई हा। डूब नी मरी तू? किस्यो मूढो ले'र आई है अठे? चाल निकळ बारै।

बी बखत ई बारै कानी सू घर मे बडतो एसपी अशोक सिगल बोल्यो औ थे काई कर रैया हो मा सा?

कान खोल'र सुण लै? म्हैं इण नैं म्हारै घर मे आज राखू, ना काल। अठै सू लेजा थारी बैन नैं।

एसपी गुर्रावतो बोल्यो क्यू? काई जुलम करयो है लिछमी?

अबै ई सू बेसी काई जुलम करणो बाकी रैयग्यो? सगळै समाज मे नाक कटवा दी म्हारी अर कठैई मूढो दिखावण लायक नीं छोडया म्हानैं। तू सै'र रो एसपी है तू ई पूछ थारी बैन नैं इत्ता साल कठै अर किणरै साथै ही?

एसपी बोल्यो थे फिजूल री राड बधा रैया हो मा सा। आ बात थारै मूढै चोखी नीं लागै। लिछमी ई घर री बहू है । एसपी डाक्टर जुगल नैं केयो "तू चुप क्यू खडयो है डाक्टर बोलै क्यू नी?

डाक्टर जुगल ई मूढो फेरतो बोल्यो म्हैं ई मे काई बोलू? मा ठीक ई कैवै है। जिकी औरत इत्ता बरस घर सू बारै गेर मरदा रै कन्नै रैय'र आई है कुण भलो आदमी बीनैं घर म राखसी ?

एस पी गरजतो बोल्यो "डाक्टर? आ ना भूल लिछमी अेक पुलिस अफसर री बैन है।

हा हा म्हैं चोखी तरै जाणू आ थारी बैन है अर थारै कारण ई गुण्डा ई।नैं उठा'र लयग्या क्यूके तू आय दिन गुण्डा बदमासा ने तग कर बान पकडै। बारै जूत मारै। बानैं सजा करावै। नीं तो म्हैं बा बदमासा रो काई बिगाडयो हो? म्है अेक डाक्टर हू। म्हैं गरीब मरीजा री सेवा करू। बानैं जीवनदान देऊ। म्हारो दुसमण कुण हो सकै।

इत्ते मे जुगल री मा फेर बीच मे बोलगी "हा–हा ठीक कैवै म्हारो बेटो। लेजा थारी बैन नैं। म्हैं म्हारै बेटै रो आज दूजो ब्याव कर रैयी हू। इण खौडीली खातर म्हैं औ रिश्तो ई तोड दू।

बिण बखत ई घर मे बडती मानसिग री बैन नीतासिह गरजती बोली किस्यो रिश्तो? क्यारो रिश्तो? म्हनैं औ रिश्तो ना तो पैला पसन्द हो अर ना ई आज।

जुगल री मा बोली औ तू काई कैवै बेटी? थारै हाथा मे मेहन्दी लागगी थोडी देर मे "

नींतासिह फेर दहाडती बोली कुण बेटी? किणरी बेटी? रिश्तो आदमिया सू हुवै डागरा सू कोनी हुवै।

था लोगा नैं थोडी–सी सरम कोनी? थारी आत्मा इत्ती मरगी? थारी आख्या रै सामी अेक गुण्डो थारी बहू नैं उठा'र लेग्यो। क्यू थे सगळा मरोडा हा? बो अेकलो गुण्डो किता'क नैं गोळी मारतो? अर मार भी देवतो तो इस्यै जीवणै सू तो बो मरणो चोखो हो थाणो?

"इत्तो सोचो जे बो गुण्डो थारी बहू री जाग्या थारी जवान बेटी नैं उठा'र ले जावतो तो थे बीनैं घर मे नी राखता? जवाब देवो? अबै जबान रै ताळा क्यू लागग्या थारै?

आदमीपणै रै नातै थानैं इत्ती दया नी आवै के अेक अबला अेकली इत्ता साल बा गुण्डा–बदमासा रै साथै किया रैयी हुसी? कीकर बे दिन काटया हुवैला – काई–काई जुलम सैया हुसी? अेक दुख्यारी नैं छाती रै लगावण री बजाय थे उण नैं दुतकार रैया हो? उण नैं जळी–कटी सुणा'र घर सू काढ रैया हो अर दूजो ब्याव करण री सोच रैया हो? लानत है थानैं।

बीच मे ई जुगल रो बाप नीतासिह रै माथे हाथ फेरतो बोल्यो "तू धन्य है बेटी। तू वास्तव मे अेक वीर सिपाही री बहादुर बैन है अर औरत

जात री साची हमदरद। फेर जुगल रो बाप लिछमी नैं छाती रै लगावतो बोल्या आ बेटी औ घर म्हारो है। तू म्हारै घर मे रैसी।

लिछमी रोवती बोली म्हें गगा मा री सोगध खा'र कैऊ बाबूसा म्हैं गगा मा रै दाई पवित्र हू अर जिको आदमी म्हनैं उठा'र ले'र गयो बो आदमी कोनी कोई देवता है – फरिस्तो है।

बीच मे ई एस पी दहाडतो बोल्यो आखिर कुण है बो बदमास?

"बो बदमास आदमी म्हैं हू एस पी सा'ब। बिण टैम ई करीम डाक्टर जुगल रै घर म बडता बोल्यो।

"ई जुलम री काई सजा हुवै म्हें चोखी तरै जाणू, फेर ई म्हें औ गन्दो काम क्यू करयो? म्हैं थानैं साची–साची बात बताऊ।

म्हैं घर मे बैठो रोटी जीम रैयो हो। म्हारी लुगाई नैं अेकाअेक उलटया हुवण लागी। म्हैं लुगाई नै ले'र डा जुगल सा'ब रै बगलै पूग्यो। डाक्टर सा'ब म्हारी लुगाई नैं देख'र सौ रिपिया फीस रा ले लिया अर म्हनैं अेक परची बणा'र बोल दियो कै ई नैं अस्पताळ ले जा'र भरती करवा दै। म्हैं जा'र देख ले सू। म्हैं म्हारी लुगाई नैं भरती करवा दी पण बठै बीनैं देखै कुण? म्हैं वार्ड मे बैठया दूजै डाक्टरा नैं कैयो पण बा साफ कैय दियो कै डाक्टर जुगल सा'ब रो कस है बै'ई आ'र देखसी।

म्हैं दौड'र डाक्टर जुगल सा'ब रै बगलै फोन करयो। डाक्टर सा'ब टी वी री आवाज धीमी करता बोल्या "हा–हा म्हैं पूग रैयो हू" अर फोन राख दियो।

बठीनै म्हारी लुगाई री हालत बिगडती गई। म्हैं दौड'र वार्ड रै कम्पोडर कन्नै गयो। पण बी म्हारै कन्नै सू गलूकोज चढावण रा सौ रिपिया माग्या।

बिण टैम म्हारै कन्नै जै'र खावण नैं पईसो नीं हो। बीनै लुगाई री तबीयत घणी बिगडती देख–र म्हैं बा डाक्टरा आगै फैर हाथाजोडी करी पण बा फेर मना कर दियो। म्हैं दौड'र डा जुगल सा'ब रै बगलै फोन करयो डाक्टर सा'ब बोल्या "हा–हा पूग रैयो हू" अर फोन राख दियो।

अठीनै–बठीनै भागतै नैं दो तीन घन्टा हुयग्या। इतै मे अेक मरीज म्हारै खन्नै आर कैयो ओ भाया बा लुगाई कुण है वा तो ...... म्हैं पोन राख'र मांचै कन्नै गयो जिठै म्हारी लुगाई .... दोनू आख्या फाटोडी म्हारै सामी देखरी ही। बी रै हाथ लगायो पण बा तो ठडी बरफ हुयगी अर म्हैं मांचो झाल्या खडा–खडो रोवतो रैयो।

थोडी देर मे बो गजलो कम्पोडर आयो अर म्हनैं अेक कागज रो परचो झला'र लाश सागै अस्पताळ रै लारलै बारणै सू बारै काढ दियो।

म्है म्हारी लुगाई री लाश ले'र अस्पताळ सू बारै निकळयो जणा म्हनैं डाक्टर जुगल सा'ब मारुति मे बैठया अस्पताळ मे बडता दीख्या।

बी बखत म्हनें रीस तो इत्ती आई कै म्है लाश नै बठैई पटक'र डाक्टर सा'ब रा टुकडा–टुकडा कर नाखू पण म्हैं खाली जहर रो घूट पी'र रैयग्यो।

बीं दिन पछै म्हनें अस्पताळ अर डाक्टर रै नाव सू ई घिरणा–सी हुयगी।

म्हारी लुगाई नैं मरया आठ दिन ई हुया कै म्हारै सात मईना रै छोरै नैं नमूनियो हुयग्यो। पण म्हैं बीनैं अस्पताळ ले'र नीं गयो अर बीं दिन ई म्हारो छोरो म्हारी आख्या रै सामीं तडफ–तडफ'र मरग्यो।

छोरै रै मरया पूरो महीनो नी हुयो कै म्हारी छोटोडी छोरी आगणै मे खेलती–खेलती पाणी री कुण्डी मे पडगी अर बीनैं बचावण रै चक्कर मे म्हारी बडोडी छोरी ई कुण्डी मे डूबगी। म्हैं दूध ले'र आयो तो म्हारी दोनू छोरया म्हनैं पाणी री कुण्डी मे तिरती लाधी।

करीम रोवतो–रोवतो बोल्यो एस पी सा'ब छोरो–छोरिया मरिया पछै म्हारी आख्या रा आसू सूखग्या अर म्हैं अेक जिन्दा लाश दाई बणग्यो। मैं सोच्यो म्हारी घरआळी नीं मरती तो म्हारो घर ईया कदैई नीं उजडतो। म्हारो माथो खराब हुयग्यो। आवेस मे आ'र म्हैं सीधो डाक्टर जुगल सा'ब रै बगलै पूगग्यो अर डाक्टर जुगल साब नैं मारण री कोसिस करी पण काई हाथ नीं आवण सू म्हें लिछमी बैन नैं उठा'र ले आयो। आ बतावण नैं कै लुगाई बिना आदमी री काई दुरदसा हुवे। म्हैं औ कदम उठायो। एस पी साहब म्हनै दुख ता खाली इत्ताइ हे कि म्हैं डाक्टर रो गुस्सो लिछमी बैन माथै उतारयो। लिछमी बीच मे ई रोवतीं–रोवती बोली "करीम भाई ठीक कैय रैया है अशोक भैया। ओ म्हारै साथै कदैई कोई बदफैली अर बदसलुकी नीं करी। म्हनैं बठै तकलीफ ही तो खाली तहखाने री तन्हाई।

करीम एस पी रै पगा मे पडतो बोल्यो एस पी सा'ब म्हैं लिछमी बैन नैं इत्ता साल काळै बुरकै में जरूर राखी पण राखी म्हारी हमसीरा बैन बणा'र म्हारो खुदा गवाह हे।

अगर म्हनैं ई बात री ठा नीं लागती कै डाक्टर जुगल सा'ब आज

दूजो ब्याव कर रैया है तो म्हैं आज भी लिछमी बैन नैं नीं छोडतो।

अबै आप म्हनैं जिकी थारै जी मे आवै सजा दे देवो। म्हैं भुगतण नैं त्यार हू पण म्हनैं ठा है या सजा इत्ती दौरी कोनी। जित्ती दौरी सजा म्हैं म्हारै टावरा रै बिना काट रैयो हू।

बीच मे डाक्टर जुगल गिडगिडावतो बोल्यो "एसपी सा'व औ आदमी साची कैय रैयो है। औ अेकलो सजा काट रैयो है अर म्हैं म्हारै सगळै परिवार रै सागै सजा भुगत रैयो हू। म्हनैं म्हारै पाप री सजा भगवान तो पछै देसी पण औ भाई पैला देदी।

म्हनैं ई आदमी सू कोई शिकायत कोनी।

डाक्टर जुगल री मा "लिछमी नैं आपरी छाती रै लगावती बोली म्हनैं माफ कर दै बेटी! म्हैं औरत हुय'र ई औरत जात रो दरद नीं समझ सकी।

लिछमी सासू रै पगा मे पडती बोली "नीं-नीं मा सा थारो ई मे काई कसूर म्हारै करमा मे ओ बिछेडो लिख्योडो हो।

बीच में ई डाक्टर जुगल री बैन भवरी जुगल रै छोरै नैं लिछमी नैं झलावती बोली भोजाई सा। सम्भाळो थारी अमानत। म्हनैं अबकी बार एमबीबीएस मे पास हुवणो है।

OO

# पीड़ रो अंत

दीपक सरकारी सफाखानै में थोडा दिन पैला ई अेक डाक्टर री जाग्या लाग्यो अर आपरे सीधै–सादे सुभाव रै कारण सै'र मे चोखै अर होशियार डाक्टरा मे गिणीजण लाग्ग्यो।

छोटे–सै सफाखानै में रोज रै मरीजा री भीड नैं देख'र लोग सफाखानै नैं सै'र री सगळा सू मोटी अस्पताळ केवण लाग्ग्या।

अर दूजा डाक्टर माय रा माय डाक्टर दीपक सू खार खावण लाग्ग्या। जद कै दीपक प्राईवेट प्रेक्टिस मे थोडो ई मोह नीं राखतो उलटो गरीब अर जरूरतमद मरीजा नैं जेब सू पईसा देय'र भी मदद कर देवतो। ई खातर गरीब लोग डाक्टर दीपक नैं भगवान रै दाई पूजण लाग्ग्या।

दीपक टेम सू पैली सफाखानै पूग जावतो पण सफाखानै सू पाछो घरै आवण रो बीरो कोई टेम नीं हो। क्यूकै बेगो घरै आय'र दीपक करै भी काई?

अेक तो दीपक हाल कुवारो दूजा मा–बाप छोटै थका ई अेक सडक दुर्घटना मे मरग्या। दीपक री दादी मघीबाई दीपक नैं पाळ–पोस'र बडो करयो अर डाक्टरी पढायो। दीपक रै डाक्टर वणता ई अेक दिन दीपक री दादी माचै माथै सूती ई रैयगी।

दादी रै मरया पछै दीपक अेकदम अेकलो रैयग्यो पण डाक्टर बणता ई दीपक रा कई रिस्तेदार जागग्या अर आये दिन दीपक खातर चाखा–चोखा सगपण आवणा सरू हुयग्या।

सगपण काई दीपक खातर बोली लागण लागगी। दीपक रै ब्याव मे कोई मारुति धामै तो कोई मारुति रै सागै सवा लाख रो टीको। कोई सौ बीघा जमीन रो लालच देवै और तो और देसनोकआळा दमजी तो ब्याव मे तीस लाख लगावण रो कैय दियो।

आ दशा देख'र दीपक नैं ब्याव रै नाव सू घिरणा–सी हुयगी। छोरो

जलमै तो थाळया बजावै बधाया बाटै अर छोरी हुवै तो कूडा फोडै। क्यू? छोरो काई जलमतो पोटळी सागै बाध'र लावे?

अगलै दिन जोधपुर सू जोरावर सिह जी दीपक कनै पूगग्या। आपरी पोती खातर दीपक नै खुद री अस्पताळ खोलावण रो वादो करयो।

दीपक हाथ जाडतो बोल्यो "देखो हुकम। बुरो ना मान्या। म्हैं आपरै पोतै समान हू। छोरी सासरै मे घणो दान–दायजो दिया–लिया सुखी नीं रैवै। छोरी रा भाग ई काम आवै। म्हारी सागी भाणजी करोडपतिया री बेटी अर करोडपतिया रै अठै परणाई पण आज बा छोरी पापड बटै अर आपरै टाबरा रो पेट पाळै। जवाई दारूडो निकळयो। कमावतो टको ई कोनी। अेक दिन नशै मे धुत कठै सू आवतो हो कै अेक ट्रक आळो भचीड मारग्यो। बेटै रै मरया बाप नैं लकवो मारग्यो अर धन अर धधै माथै छोटियो छोरो कुण्डळी मा'र बैठग्यो। अबै छोरी पापड नीं बटै तो खावै काई?

म्हारी मानो आप करोडपति आदमी हो समाज रो कोई गरीब पढयो–लिख्यो स्याणो टाबर देखो अर बाईसा रा हाथ पीळा कर दो। बीं सू दो फायदा हुयसी। अेक तो अेक गरीब परिवार आपरै बराबर खडयो हुय जासी अर दूजो बाईसा नैं बठै इज्जत मिलसी अर बाईसा सौरा भी रैयसी अर समाज मे आपरो नाव लोग आदर सू लेसी। अबै रैयो सवाल म्हारो थानैं अेक कहावत याद हुसी मनबायरा पावणा तन्नै घी घालू या तेल?

आप म्हारी बात समझग्या हुयसो म्हैं कुवारो रै'र जीवनभर मरीजा री सेवा करसू, फेर परमात्मा जिस्या नाच नचासी नाचणा ई पडसी।

जोरावर सिह डाक्टर दीपक री बात रो बुरो मानण री बजाय दीपक रै माथे माथै हाथ फेर'र घर सू बारै निकळग्या।

दीपक दिनूगै बेगो ई सफाखानै पूगग्यो जद कै आज छुट्टी रो दिन हो। सफाखानै मे सुनसान देख'र दीपक सोच मे पडग्यो कै आज बीमारा री भीड कठै गमगी? सावरियो करै इस्यो शुभ दिन रोजीनै खातर आ जावै। रोज सैकडू बीमार सफाखानै आवै अर डाक्टर बानै देख'र च्यार तरै री दवा लिख दै पण दवा तो बा गरीबा नैं बजार सू ई लावणी पडे। सफाखानै मे तो दवा रै नाव माथे पोलियो री खुराक या हिडकियै कुत्तै रा इन्जेक्शन लाध जावै तो सामलै रा भाग है।

बापडा गरीब दवाई लिखा'र ले तो जावै पण बा सू दवा बजार सू

लाईजै'कनीं आ तो वै गरीब ई जाणै। बजार मे दवाया कित्ती मैंगी है दवाई रै नाव माथे बजार मे लूट मच्योडी है। कीमता माथै किणी रो जो'र कोनी। लागत सू दस गुणो मुनाफो दूकानदार उठावै।

सोचता-सोचता कुरसी माथै ई बैठै डाक्टर दीपक री आख लागगी अर पाछी आख खुलता'ई दीपक देख्यो कै धोळी धोती मे लिपटयोडी जवान परी-सी छोरी सामी खडी है।

दीपक थोडो सरमायो अर छोरी रै हाथ माय सू सफाखानै री परची ले'र पूछयो "तबीयत किया है?

छोरी धोती रै पल्लै में मूढो घाल'र थोडी मुळकी अर फेर बोली "म्हारी तबीयत तो ठीक है डाक्टर सा'ब पण म्हनैं लागै आज थारै की गडबड है। ओ रुक्को म्हारो कोनी म्हारी सासू रो है। म्हारो नाव मथरा कोनी पूजा है।

दीपक रै मूढै सू अचाणचका निकळग्यो थे परणीज्योडा हो? पूजा नीचो मूढो करया ई बोली "परणीज्योडी ही पण अबै विधवा हू।

अै सबद सुण'र दीपक भौंचक्को रैयग्यो अर पाणी-पाणी हुयग्यो दीपक अणजाण्या बोल्यो "थे दूजौ ब्याव क्यू नीं कर लेवो?

पूजा नीचा मूढो करया ई बोली ई रूढीवादी समाज में दूजो ब्याव करणो सौरो काम है डाक्टर सा'ब? ई नरक सू म्हैं निकलणो चाऊ हू, पण मुगती पावणी हसी-मजाक कोनी। फेर इस्यो गैलो मिनख कुण है जिको अेक विधवा सू ब्याव करण नैं राजी हुयसी? दीपक री बोलती बद हुयगी अर रुक्कै मे तीन दिना री दवाई लिख'र रुक्को पूजा रै हाथ मे झला दियो।

पूजा तो सफाखानै सू बारै निकळगी पण दीपक पूजा रै बारै मे सोचतो रैयो। इया दीपक ब्याव करण रै बिल्कुल खिलाफ हो पण ई उमर मे पूजा नैं धाळै कपडा मे देख'र दीपक रै मन मे ब्याव करण री इच्छा जागगी।

पण ओ दीपक रो दुरभाग हो कै जिकी छोरी बीं नैं पराद आई बा वि ?वा निकळी।

बा बाता नैं महीना बीतग्या पण दीपक नैं पाछी पूजा निजर नीं आई।

अेक दिन दीपक सफाखानै रै बरामदै मे बैठ्यो पूजा रै बाबत ई सोच रैयो हो कै अेक अधेड-सो आदमी पूजा नैं सफाखानै रै बरामदै मे बैठा'र पाछो सफाखानै सू बारै निकळग्यो। पूजा उठती-बैठती आव'र दीपक

कन्नै पूगी। पूजा रो सगळो शरीर ताव सू सिक रैयो हो। पूजा नैं देख'र डाक्टर दीपक बोल्यो थानैं इत्ता दिना सू बुखार आ रैयो हो। डाक्टर नैं बुला'र दिखावणो चाईजतो।

पूजा धूजती बोली "म्हैं सासू आगै री विधवा बहू हू डाक्टर सा'ब। म्हारै खातर डाक्टर कुण बुलावतो? रात तबीयत घणी खराब हुयगी जणा अबार म्हारो जेठ म्हनैं सफाखानै छोडग्यो।

पूजा री दसा देख'र दीपक गळगळो–सो हुयग्यो अर पूजा रै बारै मे फेर सोचण लागग्यो।

पूजा ई अेकटक बीं देवपुरुष नैं मन–मन सू धन्यवाद दे रैयी ही।

पूजा री दसा देख'र दीपक बोल्यो थे बुरो नीं मानो तो अेक बात बोलू"?

पूजा धूजती–सी बोली डाक्टर रै कैयोडै रो कोई बुरो मानै है डाक्टर सा'ब? डाक्टर तो भगवान रो रूप हुवै।

पूजा रै मूढै सू भगवान रो सबद सुण'र दीपक अेकदम सूनो–सो हुयग्यो कै लोगबाग डाक्टर रै धन्धे नैं कित्तो महान समझै। फेर डाक्टर थोडै–सा पईसा रै लालच मे ई धन्धै नें क्यू बदनाम करै?

मरीज नैं देख'र च्यार दवाइया लिखण मे डाक्टर रो काई धरीजै?

बापडी सरकार करोडू रिपिया लगा'र जाग्या–जाग्या मेडिकल कॉलेज खोलै ताकि टाबर डाक्टरी पढ'र मिनख सेवा रो अवसर पावै पण डाक्टर बणता'ई बै सरकार री सगळी बाता भूल जावै अर गरीब बीमारा नैं रोसणा सरू कर देवै। भगवान जाणै इत्तो पईसो लेय'र बै काई करसी?

डाक्टर दीपक नैं इया खोयो अर चुप देख'र पूजा आपरो मून तोडती बोली डाक्टर सा'ब आप काई पूछणो चावता हा ?

दीपक पाछी हिम्मत जुटावतो बोल्यो "ई छोटी–सी उमर मे थारो ब्याव किया हुयग्यो?

दीपक रै इत्तो पूछता ई पूजा सुबक पडी अर आपरी आख्या पूछती बोली "डाक्टर सा'ब म्हैं च्यार बरसा री ही जणा म्हारा मा बाप तीरथ करण गया अर गगाजी मे बैयग्या। म्हारै मामै म्हनैं पाळ–पोसर बारै क्लास ताई पढाई। अेक दिन अचाणचका रोटी जीमता–जीमता म्हारै मामै री छाती मे दरद हुयो अर बै चालता रैया। मामै रै मरया पछै म्हारी मामी पईसा रै लालच मे अेक रईस रै बीमार बेटै सागै धींगाणै म्हारो ब्याव कर दियो। ब्याव रै डेढ महीनै पछै म्हैं राड हुय'र कुणै मे बैठगी। सवा महीनै

बाद ई म्हारी सासू, म्हनैं घर सू काढण नैं घणो ई गोधम करयो पण म्हारी मामी अडगी अर चुपचाप सै'र छोड'र आपरै पीरै जा'र बैठगी।

पूजा री कहाणी सुण'र डाक्टर दीपक बोल्यो जे थानैं म्हारै माथै थोडोई भरोसो है तो म्हैं थानैं म्हारी सहधरमी बणार म्हारै सागै राखणो चाऊ।

दीपक रै मूढै सू आ बात सुणताई पूजा अेकाअेक उठती बोली "जे ई बात री थोडी भणक ई पडगी तो म्हारै सासरैआळा म्हारै सागै थानैं भी जींवता नैं बाळ देसी।

दीपक धीरज बधावतो बोल्यो म्हैं अेक जिम्मेदार सरकारी अफसर हू। म्हारै पद री काई गरिमा है म्हैं चोखी तरै जाणू। जै कोई नागाई माथै उतर जासी तो कानून फेर क्या खातर है?

पूजा हाथ जोडती बोली "डाक्टर सा'ब म्हारा इस्या भाग हुवता तो म्हैं ई उमर मे विधवा ई क्यू होवती? म्हनैं आप जिस्यो देवपुरुष मिल जावै तो म्हैं सात जलम ई साथ नीं छोडू पण म्हारी पूजा बोलती बोलती अेकाअेक उठती बोली "म्हारै आज भौत मोडो हुयग्यो। घरै जावताई म्हारी सासू म्हारी चामडी उधेड नाखसी।

पूजा नैं इया डरती अर धूजती देख'र दीपक सफाखानै री चपरासण रामप्यारी नैं पूजा नैं घरै छोडण रो कैयो अर अेक बीस रो नोट रामप्यारी रै हाथ मे झलाय दियो।

रामप्यारी अेक टैक्सी मे बैठा'र पूजा नैं पूजा रै घरै छोड आई अर सेठ चम्पालाल री हवेली रो ठिकाणो डाक्टर दीपक नैं बता दियो।

दीपक अेकर तो सेठ चम्पालाल रो नाव सुण'र थोडो चमक्यो पण दूजै ई पल न्यायमूर्ति देवनप्रकाश शर्मा री अदालत मे पूगग्यो अर आपरो पूरो परिचय दे'र न्यायमूर्ति नैं पूजा री सगळी कहाणी सुणा दी अर पूजा सू ब्याव करण री अरजी कोर्ट मे लगा दी।

इस्यै शुभ काम खातर न्यायमूर्ति लारै क्यू रैंवता? बा बी ई टैम पुलिस अधीक्षक खन्ना नैं फोन कर दियो। जिया ई पूजा आपरै घर मे घुसी बीं री सासू झीटा झाल'र बरकती बोली "डाकण जलमताई मा–बाप नैं खायगी अर परणीजता ई म्हारै बेटै नै डसगी नागण अबै तू किण नैं खासी?

बीच मे पूजा रो जेठ लाता–थापा मारतो बोल्यो दिनूगै गयी ही अबै कठे सू काळो मूढो करा'र आई है छिनाळ?

छोटो देवर गरजतो बोल्यो इण रडार रो अठै सू काळो मूढो कर'र काढ दो वावूसा नी तो आ आपणो काळो मूढो करा'र छोडसी।

आखिर पूजा आपरै सिर माथै सू ओढणी फेकती बोली "म्हैं छिनाळ हू, गालजादी हू, पण थे कित्ता इज्जतआळा हो – आज बताऊ थानै?

जेठजी म्हारै साथै काळो मूढो करण खातर थे जेठाणी जी नैं वेमतलव मारा–कूटी कर'र पी'रै काढ दिया पण म्हैं थारी दाळ गळण नीं दी।

सासरै मे सासू मा सू वेसी हुवै पण थानै बहू नीं बीमार बेटै रो नरग धोवण नैं मेहतराणी चईजती।

देवर रै भुजाई मा सू बढ'र हुवै पण तू थारी मा रै साथे बीच मे ई पूजा रो देवर पूजा नैं मारण नैं उचक'र उठयो कै म्हैं इण राड रो माथो बाढ देसू पण उणी टैम ई पुलिस इस्पैक्टर आपरै आदमिया साथै सेठ चम्पालाल री हवेली मे बडतो बोल्यो खबरदार! जे कोई आपरी जाग्या सू हिलणै री कोसिस करी तो म्हैं गोळी चला देसू। पछै जाग्या सू कुण हिलतो? पुलिस इस्पैक्टर सगळा नैं लेजा'र न्यायमूर्ति देवन शर्मा री अदालत मे खडा कर दिया।

न्यायमूर्ति रै कन्नै डाक्टर दीपक नैं बैठो देख'र पूजा रो मुरझायो चेहरो पाछो खिलग्यो।

न्यायमूर्ति पूजा नैं खाली अेक सवाल पूछयो अर अेक रजिस्टर मे दसखत करा'र डाक्टर दीपक री अरजी मन्जूर करली अर न्यायमूर्ति शर्मा पूजा अर डाक्टर दीपक नैं ब्याव री बधाई दी।

जिया ई डाक्टर दीपक अर पूजा अेक–दूजै रो हाथ झाल'र कचैडी सू बारै निकळया तो ब्याव री भणक पा'र लोग भेळा हुयग्या अर डाक्टर दीपक जिन्दाबाद'रा नारा लगा'र बा रो अभिनन्दन करयो।

डाक्टर दीपक पूजा नैं मारुति मे बैठा'र देखता ई देखता सगळा री आख्या सू ओझल हुयग्यो।

OO

# भंवरकी

मालीराम आप रै टैम रो चोखो चित्रकार अर सै'र माय उणरो चोखो नाम हो पण शराब री लत मे पड'र उण आपरै सगळै घर रो घरकूलियो कर नाख्यो।

मालीराम पीवणो सुरू करतो अर काई ठा कद दिन ऊग जावतो। कणाई जच जावती तो दस दिना'ई दारू रै हाथ नी लगावतो अर दो च्यार तस्वीरा बणा'र घर रो खरचो काढ लेवतो।

मालीराम री घरआळी मधिया घणी स्याणी–सुधी पण सूधै मिनख री कुण सुणै अर कुण बीसू डरै?

मधिया मालीराम नैं दारू पीवण सू घणो'ई मना करती पण इसी गन्दी लत लागौडी आदमी सू सौरे सास किया छूटै? मालीराम नैं ज्यू मना करै ज्यू बो घणो पीवै अर ई दुख सू ई मालीराम रो अेक छोरो आपरी लुगाई नैं ले'र आपरै सासरै जा वस्यो।

मालीराम रो छोटकियो छोरो बिरजू आपरै बाप रै देखा–देखी तैरा बरसा री उमर मे ई दारू पीवण लागग्यो।

मालीराम री घरआळी खसम रा घमीडा तो सैन कर लिया पण खुद रै जायोडै नैं बीं उमर मे पीवता किया देखीजै। आखिर कायस करता–करता मालीराम री मधिया अेक दिन आपरो रस्तो लियो।

मधिया रै मरता ई मालीराम रो छोरो मालीराम रो ई बाप निकळ्यो क्यूकै मालीराम रात नैं पीवतो पण बिरजियो दिनूगैं ई दारू पीवणो सुरू कर देवतो।

मालीराम में हमैं इत्तो दम कोनी कै बा बिरजियै नैं दारू पीवण सू मना कर सकै। अेकर थाडी हिम्मत करी अर बिरजू घर छोडग्यो अर आज ताई पाछो नीं आयो काई ठा मरग्यो कै जीवै। बीनै मालीराम री छोरी भवरकी परनावण सारू दीखण लागगी पण जिकै घर म खावण रा ई

सारा घडै की मशीन आज रै [illegible] मे अठो किया काढै। मालीराम कन्नै न
तो [illegible] अर [illegible] चोर [illegible] मे [illegible]।

दुजी मालीराम अेक गरीब घरिया देरा'र भवरकी रा हाथ पीळा कर दिया पण करमा री मत जवाई अेक नम्बर रो पीयक्कड निकळयो कमावै धेलो ई कोनी अर रोज पीवण नै चाइजै। अवै दोरा ई किण नै दे क्यूके चोर री मा घडै मे मूढो घाल'र रोवै।

धीरै भूखा मरता मालीराम शरीर वणावण नै बैठै पण पेट रो दरद आजो आ जावै। मालीराम जीवण सू धापग्यो पण मरणो आदमी रै हाथ मे कोनी।

भादवै रो महीनो। अमावस री काळी–पीळी रात। आखो आभो बादळा सू भरयोडो। बिजळी चमकै अर बादळ बररै। घर मे अेकलो पडयो मालीराम कापै अर डरतै रा दात बाजै। बतळावण ई करै तो किणसू करै।

अेकाअेक पुलिस री गाडया री सीटया बाजी। मालीराम डरतो गोडा छाती मे घाल्या भेळो–भळो हुवै। अेकाअेक घर रै लारली पासी मालीराम नै धमीड सुणीज्यो। मालीराम डरतो खेसलै सू मूढो ढक लियो।

क्यूकै पुलिसआळा सू डरतो अेक चोर मालीराम रै घर मे कूदग्यो। मालीराम सोच्यो हाका करया तो चोर बीरो घाटो मोस नाखसी। हालाकि मालीराम कई दिना सू ऊपर हाथ करया भगवान सू मौत माग रैयो हो अर आज चला'र मौत घर मे आई तो मालीराम मरण सू डरण लागग्यो।

डरतो मालीराम थोडी हिम्मत कर'र बोल्यो कुण बिरजू बेटा? आजा आजा इत्तो मोडो कठै सू आयो है? थोडो मेह–पाणी रो तो ख्याल राख्या कर। इत्ती जो'र री बिरखा मे सगळो भीजग्यो हुयसी? पैला पूर बदळ नीं तो अबार छीकया खावणी सुरू कर देसी अर रसोई मे कीं खावण नैं पडयो हुयसी खायलै अर अठै बिरडै मे आ'र सोयजा कमरै मे तो पडयो तपसी। लाईट तो इया ई निहाल नीं करै फेरू आज तो बिरखा रो बहाणो न्यारो।

तन्नै कित्तो समझायो कै तू अै गन्दी आदता छोड दै पण तू *कदैई सोचू, कै ई मे थारो कीं कसूर कोनी। सगळो कसूर म्हारो ई है।* म्हैं दारू नी पीवतो तो थारै मे आ लत क्यू पडती?

म्हैं कैंवतो जा भुजिया ला पापड ला सिगरेट ला दारू ला तन्नै काई ठा कै म्हारो बाप म्हारै कन्नै सू जैर मगा'र पीवै अर औ जै'र अेक दिन म्हनैं ई खराब करसी।

म्हैं दारू मे धुत कदैई–कदैई तन्नै ई गुटको दे देवतो अर तू

भुजिया–पापड रै कोड सू गुटको ले लेवतो अर ई दारू ई दारू रै दुख सू थारी मावडी अधवैयी मे म्हारो सागो छोडगी। नी तो बींरी अबार मरणै री उमर थोडी ही। म्हनैं चौखी तर्‌या याद है। म्हनैं तिरेपन आया है अर थारी मा म्हारै सू पूरी सात साल छोटी ही अर बींरै मरया ई म्हैं रो रो'र आख्या सू आन्धो हुयग्यो ।

चोर खडयो–खडयो मालीराम री सगळी बात्या सुणै पण सामैं आवण री हिम्मत नीं करै।

मालीराम फेरू बोल्यो "किन्नै गयो बिरजू बेटा सुणै कोनी? ई आन्ध‍ै बाप सू हाल नाराज है? देख मटकी कनलै आळै मे मेणबती अर तुळया री पेटी पडी हुयसी जगाय लै। अबैं लाईट नैं तो पडया उडीकता रैवो।

मालीराम री बात्या सुण'र चोर नैं औ तो पूरो भरोसो हुयग्यो कै बूढो साची आन्धो है।

चोर आपरा गीला कपडा खोल'र तणी माथै टागोडी लुगी लपेट ली अर धीरै–धीरै कमरै सू बारै निकळयो अर भाग सू लाईट आयगी। अेकर तो चोर डरयो पण बूढै री नाक बाजती सुण'र रसोई मे बडग्यो अर हाथ लाग्यो जिको खा'र पाछो कमरै मे बड'र माचै माथै आडो हुयग्यो।

मालीराम जाण बूझ'र आख्या मींच्या पडयो–पडयो सोचै पण नीद दोना नैं नीं आवै।

चोर सोचै अबैं आधी रात रो कठै जासू, आधी रात रो ई काई? दिन मे ई कठै जासू? सै'र मे पुलिस रो जबरदस्त पैरो। जै पकडीजग्यो तो सगळी भागदौड बेकार। दोना रै सोचता–सोचता दिन ऊगग्यो।

मालीराम चोर नैं हेला मारतो बोल्यो "बिरजू बेटा उठजा नऊ बजण आई है। आज गळी मे तो कादो कीचड है बारै जा'र दूध ले आ अर चाय बणा लै । मालीराम माचै सू उठयो अर जाणकर बाल्टी सू ठोकर खा'र जमी माथै पडग्यो। चोर दौड'र मालीराम नैं उठावतो बोल्यो "लागी तो कोनी बाबूजी? नी–नीं बेटा जमीनडी माथै पैला हाथ टिकग्या नी तो अबार मूढो फूट जावतो।

मालीराम दस रिपिया झलावतो बोल्यो किन्नै है बेटा ले दूध लिया।

चोर अेकर तो घर सू बारै निकळतो डरयो फेरू हिम्मत कर बारै निकळग्यो।

चोर रै बारै निकळता ई मालीराम बेगो–सो उठयो अर जल्दी–जल्दी

कमरै री तलासी ली अर कुणै मे पडयै ढोल मे रिपिया सू भर्योडो थैलो देख'र बुरी तरै डरग्यो अर बीनै धूजणी–री छूटगी अर दौड'र पाछो माचै माथे आडो हुयग्यो अर सोचण लागग्यो कै चोर नैं दूढती–दूढती पुलिस अठै पूगगी तो म्हारो काई हुसी? इत्तै मे चोर कीं खावण–पीवण रो समान ले'र आयग्यो अर दोनू जणा खा–पीर पाछा माचै माथै आडा हुयग्या। कई दिना ताई दोनू जणा उठै खावै अर पाछा सोय जावै।

अेक दिन चोर बोल्यो "बाबूजी थानैं आख्या सू दीखै कोनी रोटी बीजो मालीराम बीच मे बोलग्यो काई बताऊ बेटा थारी मावडी रै मरया पछै सगळै घर रो काम भवरकी माथै आ पडयो पण भाग सू अेक लुगाई लारळै कमरै मे भाडै आ'र रैगी। आटो बीजो दिया बा दो टुकडा बणाय देवती पण काल बा'ई घरियो खाली करगी सावरियै चोखी करी कै तू आयग्यो नीं तो बूढै अर अणसारै री काई दुरदसा हुवै कुण को जाणैनी।

थारली बैन भवरकी नैं अेक गरीब घर में परणाई। छोरो हाथ रो चोखो कारीगर पण दारू री लत मे पडग्यो कमावै धेलो कोनी अर रोज दारू पीवै अर रोज भवरकी नैं मारकूट'र घर सू काड देवै। म्हैं भवरकी नैं समझा–बुझार पाछी सासरै पूगा दू – म्हैं सोचू बठै मार ई खावै रोटी भूखी तो नीं रैवै।

दारू तो म्हैं ई घणो'ई पीयो बेटा पण थारी मा रै हाथ कदैई नी लगायो।

मालीराम री बात्या सुण'र चोर आपरै अतीत मे खोयग्यो कै म्हैं म्हारी घरआळी नैं बिना कसूर घणी ई मारी अर अेक दिन ईसी मारी कै बापडी ससार ई छोडगी।

सोचता–सोचता चोर री आख्या भरीजगी। चोर सोचण लाग्यो के सारै रोग री जड आ दारू है। ई जै'र माथै सरकार नैं कडाई सू रोक लगा देवणी चाइजै।

आज म्हैं ई घर मे नीं कूदतो तो भगवान जाणै कित्ता दिना री जेळ हुवती अर रोज जूत पडता जिका पाखती मे।

दोनू जणा पडया–पडया अेक ई बात सोचै न तो चोर घर छोड'र जावै अर न मालीराम बींनैं घर सू जावण रो कैवै।

मालीराम चोर नैं अेक तस्वीर देंवतो बोल्यो बिरजू बेटा आ तस्वीर वेच आ कई दिन तो घर रो खरचो चालसी। अबैं थारै कन्नै कोई खजानो

थोडो ई पडयो है?

चोर बोल्यो "नी–नीं बाबूजी आ थारै हाथ री आखरी निसाणी हे। ईनैं रैवण दो इया महीनै खण रा पईसा म्हारै कन्नै है। जित्तै कोई कामडो जोय लेसू।

मालीराम चोर रै दिल मे अपणायत री भावना देख'र गदगद हुयग्यो। बीनै धीरै–धीरै चोर रै दिल माय सू पुलिस रो डर ई जावतो रैयो। चोर मालीराम नैं आन्धो समझ'र आप रो नाको काढै पण मालीराम डरतो मौत विगाडै। इया दानू जणा सोरा सुखी। मालीराम नैं पडयै नैं राट मिल जावे पण कदैई–कदैई मालीराम सोच मे पड जावै कै इया कित्ता दिन आन्धो बण्यो रैसू।

अेक दिन मालीराम जीमतो–जीमतो बोल्यो बिरजू अेक काम कर। ई कमरे रै बारै कानी बारणो काढलै अर चाय–पाणी री दूकान खोल लै क्यूकै कई दिना सू म्हैं देखरयो हू कै तू चाय भोत चोखी बणावै अर ई धन्धै मे घणो अडगो कोनी। दस–बीस कप तस्तरी लिया अर स्टोव घर मे पडयो है।

मालीराम री राय चोर रै माथे मे सागोपाग जचगी अर बो घर मे चाय री दूकान खोल'र बैठग्यो अर करमा सू चाय री दूकान चाल खडी हुई। कद दिन उगै अर कद सिझ्या पड जावै कीं ठा नीं लागै अर देखता–देखता दस–बीस किलो दूध रोज निकळण लागग्या। दिन भर री कमाई चोर मालीराम रै हाथ मे झला देवै अर मालीराम पईसा बिना गिणिया सन्दूक मे राख देवै।

चोर नैं आपरी मेहनत री कमाई मे अेक अलग ई आणद आवण लागग्यो। ज्यू मेहनत करै ज्यू कमाई बधती गई।

चोर रात रा दूकान बद कर'र दिन भर री कमाई मालीराम रै हाथ मे झला दी। अर भूल सू मालीराम रै मूढै सू निकळग्यो बिरजू बेटा! पाच सौ रो नोट?

मालीराम रै मूढै सू इत्तो सुणता'ई चोर रो मूढो फाटोडो ई रैग्यो अर चोर बोल्यो "बाबूजी थे आज ताईं जाणबूझ'र आन्धा बणियोडा हा?

मालीराम डरतो बोल्या "म्हनैं माफ कर दै बेटा अगर म्हैं आन्धो बणण रो ढोग नी करतो तो तू पुलिसआळा रै डर सू बी दिन ई म्हारो घाटो मोस नाखतो।

मालीराम नैं गिडगिडावतो देख'र चोर मालीराम रै पगा म पडतो

बोल्यो नीं–नीं बाबूजी था थारो मूढो बद राख'र म्हारी जान बचा दी। नी तो पुलिसआळा म्हनैं वीं टैम ई पकड लेवता अर चोरी रै जुर्म मे म्हनैं जेळ हुवती अर जेळ सू छुटया पछै फेरू ई म्हैं चोरिया ई करतो। थे म्हारो जमारो सुधार दियो बाबूजी। म्हैं थारो ओ अहसान कदैई नीं भूलू।

इत्तै मे मालीराम री बेटी भवरकी रोवती–रोवती घर में बडी अर मालीराम रै पगा मे पडती बोली "बाबूसा अबै म्हनै वीं कसाई कन्नैं कदैई ना भेज्या। म्हैं अठै भूख काड लेसू पण म्हारै सू रोज–रोज म्हारा हाडका नीं भगाईजै।

भवरकी आपरो डील उगाड'र मालीराम नैं दिखायो।

भवरकी री आ दसा देख'र चोर री आख्या ई भरीजगी।

मालीराम सुबकतो–सुबकतो भवरकी नैं उठा'र आपरी छाती रै लगावतो बोल्यो "म्हनैं माफ कर दै बेटी अबैं म्हैं तन्नै बी कस कन्नैं कदैई नीं भेजू अर भवरकी रो हाथ चोर रै हाथ मे झला दियो अर चोर अर भवरकी मालीराम रो इसारो समझ'र दोनू मालीराम रै पगा मे झुकग्या।

OO

# बदलो

लोकारो कैवणो है सावरियो जि
नै दैवै छप्पड फाड'र दैवै।

आईज बात। डालकी कनै पईसो तो नीं हो पण सावरियै पईसे री
जागया डालकी नै रग–रुप अनाप सनाप दे दियो।

अबै सावरियै री मरजी देखो डालकी समेत डालकी रै छऊ–छऊ
बैना अर छउ री छउ अेक अेक सू बढ'र फूठरया अर फूठर्या ई ईस्या
जाणै बे माता फुरसत सू घड'र कैई चित्रकार सू छऊआ बैना नै ई परखाई
हुवै।

डालकी छऊ बैना में सगळा सू उमर मे बडी अ खातर पैला बा'ई
परणीजी अर डालकी रै फुठरापे री सोभा सुण'र डालकी री सगळी बैना
नै बडा–बडा ठिकाणा मिलग्या अर डालकी रो बाप अेकदम फारिग हुय'र
बैठग्यो।

ईया वे दिना सोरे सास छोरया मिलण्या ब्होत ई दौरया ही।
देखी–सुणी जिका कैवै आदमी रै पगा रा खला फाट जावता पण सौरे
सास टावर हाथ नी आवतो। कैई–कैई जणा तो छोरे रै बाप कनै सू आपरे
खेता मे दो दो साल काम करवाता अर पछै बैने आपरी छोरी देवता अर
कैई कैई मा–बाप छोरी री रीत लेवता अर कैवे कैई अणभागी कुवारा ई
मर जावता। जणै छोरया सासरे मे सोरया भी रैवत्या।

ओ दैज–दाईजो तो हमे सरु हुयो है। अबै तो ओ हाल है कै दाईजो
थोड़ो कम हुया लौकड़ा छोरया नै जान सू मारण लागग्या। नीं तो आ
छोडा–मेली पैला कठै ही। छोरया सासरे मे राज करत्या आ भूख तो
लोका मे हमे वापरी है। अबै तो आदमी सोरो–सुखी बो'ई कैवाईजै जिकैरी
छोरी सासरे मे सोरी हुवै या बेरो जवाई वैरै कये मे हुवै।

रामलील

आपरी छोरया नै परणाया पछै डालकी रो बाप सोरो सुखी पण आदमी रा घण कणै कोजा आ जावे कैनै कद बेरो लागै।

डालकी रै ब्याव रै आठ मईना बाद ई डालकी रौ बाप चालतो रैयो अर बाप नै मरया नै हाल पूरो मईनो ई नीं हुयो कै डालकी विधवा हुर'र कुणे मे बैठगी।

डालकी रो सुसरो भीयाराम सैर रो मानोडो वेद अर से'र मे चौखी साख चोखो पईसो। बै ठकराई मे बो डालकी रो दूजौ ब्याव कद मान्डे जदकि उण दिना मे दूजौ ब्याव करण री समाज मे कोई मनाई नीं ही। वै दिना क्यू? आज ई सगळी जात्या मे नाता हुवै। खाली दो च्यार जात आला न्यातो नीं करण मे आपरी बडाई समझे पछै तो मोडो बेगो चावै बारौ नाक ई कटो।

डालकी रै सुसरे कनै दासिये नाम रो अेक जवान सो छोरो वेदगिरी सीखतो। दासियो नैडो आगो डालकी रै रिस्ते मे ई कई लागतो अ खातर दासिये रो डालकी रै घर मे चोखो आवणो–जावणो हो अर डालकी रै वैवा हुया पछे दासियो–डालकी कनै घणो आवण–जावण लागग्यो।

लोका रो साची कैवोडो है बडी आख फूटण नै ई हुवै। डालकी रो वो रग बो रुप अर बा उमर अबै सावरियो जिकै री राखे बेरी रैवे।

अे दुख अर डर सू डालकी रै सुसरे दासिये रो घर मे आवणो–जावणो बन्द कर दिया अर अेक दिन नौकरी सू ई काढ दियो पण डालकी–दासिये रो पूरो साथ दियो अबै दासियो आपरी हार कद माने? घणा दिन हुया दासियो लुगाया रा कपडा पैर'र डालकी रै घर माय बड जावतो।

ईण बात नै लैर'र डालकी रो सुसरो ब्होत दुखी हुयग्यो अर आपरो चोखो भलो घरियो बेच'र सै'र सू दूर सिटी कोटआळी रै लारे दूजौ घर ले लियो।

ज्यू भेलो हुयोडो पाणी आपरे वैवण रो रास्तो खुद निकाल लेवै वींया ई अेक कवि कयो है –

कमोदनी जल हरि बसे चदा बसे आकाश
जो जाकी भावता वो उसी के पास।

नुओ घरियो लिया पछै डालकी री गाडी ओर चीले उतरगी अर सगळो सै'र डालकी नै जाणन लागग्यो।

आपरी इज्जत नै लेर'र डालकी रो सुसरो ब्होत दुखी हुयग्यो माय रा माय घुटीजै पछतावो करे कै चौखा रेवतो अे चुडैल रो कोई दूजौ

ठिकाणो कर देवतो पण बा'ई बात ओसर चुकी डूमणी गावै आल पताल अर अे दुख ई दुख मे डालकी रै सुसरे अेकदिन आपरो रस्तो लियो।

सुसरो मरया पछै अबै डालकी कैसू डरे? दासियै रै ई अबै मौज हाथ लागगी पण रोज रोज मास खावण आला नै मास दाल सू ई माडो लागण लाग जावै। वीया भी दासिये री निजर डालकी सू घणी डालकी रै पईसे माथै ही – अर धन रै भूखे दासिये डालकी री मुलाकात रणजीतसिग सू करा दी। बे दिना मे रणजीतसिग आपरे बाप रै पईसे नै दौनू हाथा सू उडावण मे लागरयो हो।

डालकी रणजीत सिग नै सूते अर दासियो डालकी नै। थोडा दिना में डालकी अर रणजीत सिग घणा नैडा हुयग्या पण आ बात दासिये नै कद सुवावै दासियो डालकी रै सुसरे कनै काम करतो करतो आधो वेद तो वणग्यो हो।

अेकदिन दासिये आपरी मौजूदगी मे रणजीत सिग नै डालकी रै अठै बुलायो अर डट'र दारु पायो धाप'र जीमायो अर पान मे पारो घाल'र डालकी रै हाथ सू रणजीतसिग नै खणा दियो। पान खावता'ई रणजीत सिग रै सगळे सरीर मे बलत लागगी हाय बलू, ओ ई बलू।

कू–ठोड खाई अर सुसरो वेद – सरमा मरतो रणजीत सिग आपरो मूढो बद राख्यो अर अेक दिन ओय हाय ओय हाय करतो आपरो रस्तो लियो।

अे हरकत रै बाद डालकी दासिये सू घिरणा करण लागगी अर दासिये रै चगुल सू निकलण री सोच ई सोच मे मादी पडगी।

डालकी रै मान्दी पडता ई दासिये मौके रो फायदो उठा'र आपरे बेटे री बहू तींजा नै सगळी बात चौखी तरया समझा'र डालकी रै अठै नौकराणी राख दी क्यू कै तींजा पूरी तरया आपरे सुसरे रै कया मे ही क्यू कै तीजा रै धणी कानी तो सरु सूई बारै बजयोडी ही।

सुसरे रै कया तीजा डालकी रै पेट मे बडगी अर डालकी रो घणो ई गू–मूत धोयो अर माय रो माय डालकी रो माल सूतण मे लागगी पण अे बात रो डालकी नै वेगो ई बेरो चालग्यो के आ धोली गिलारी म्हारी नौकराणी कोयनी दासिये री बेटे री बहू है। तींजा नाक नक्से सू तो घणी फूठरी नीं ही पण रग मे धोलीधप। अ खातर डालकी–तीजा नै धोली गिलारी कैर'र बुलावती।

तींजा रो भेद खुलता'ई डालकी री भौया चढगी अर दासिये री

सगळी चाल समझगी अर दासिये सू बदलो लेवण री पक्की ठाण ली।

डालकी चाल खेली अर दासिय री बटे री बहू नै आपरी धरम री बेटी बणायली अर खूब लाड लडाया अर पूरी तरया आपरे बस मे कर'र आप आळे धन्धे मे घाल दी।

दासिये नै ओ बात रो बेरो चालता'ई ब्होत दौरो हुयो अर आपरे बेटे री बहू नै बुरी तरया मारी फैरू डालकी रा हाडका भी भाग्या।

डालकी हसती बोली आज तू म्हने मारी है। काले ठीक हुयजासी पण म्हे तनै इस्यी मार मारी है के तू जीये जीते वे पीड नै नी भूल सके।

डालकी रो कैवणो सोले आना ठीक भी निकल्यो। दासियो सै'र में सगळा री निजरा मे गिरग्यो समाज मे बदनाम हुयग्यो। बेटे–बहू सू बिगडगी अर मन ई मन घुटीज तो घुटीजतो अेकदिन माचो कपड लियो अर पूरो नुऊ बरसा ता'ई पडिया–पडियो भुगत्यो।

खोटा तो डालकी ई घणा'ई करया पण जालिम मरी ब्होत सोरी निरजला ग्यारस रै दिन रात नै माचै माथै सूती रैयगी।

पण वा धोली गिलारी हाल जीवै आख्या सू दीखे कोइनी सास फूले गोडा दुखे तो'ई रोज दिनूग बगी उठे डील माथे दो लोटा पाणी ढोले भजन गावती तालया बजावै -- बदरी–बदरी काया सुधरी करतीं रैवै पण ओ खोटो पईसो कई ठा कुकर निकलसी अर आ काया कद सुधरसी बा तो अबै सावरियो ई जाणै।

OO